Mob. : 07408452828 • 09336112507

गायन

प्रथम वर्ष

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों की। शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

क्रियात्मक

1. स्वर-ज्ञान :- 7 शुद्ध और 5 विकृत-स्वरों को गाने और पहिचानने का ज्ञान, अधिकतर दो-दो स्वरों के सरल समूहों को गाने और पहिचानने का अभ्यास शुद्ध स्वरों का विशेष ज्ञान।
2. लय-ज्ञान :- प्रत्येक मात्रा पर ताली देकर लय की स्थिरता की जाँच। बिलम्बित, मध्य और द्रुत-लयों का साधारण परिचय। विभिन्न सरल मात्रा विभागों की शिक्षा जैसे एक मात्रा में आधी-आधी मात्रा के दो अंक (एक, दो) या दो स्वर (सा,रे) बोलते हुए तानी देना। एक मात्रा में चौथाई-चौथाई मात्रा के चार अंक (एक, दो, तीन, चार) या चार स्वर (सा, रे ग, म) बोलना।
3. दस सरल अलंकारों का समुचित अभ्यास सरगम और आकार दोनों में एवं विलंबित तथा मध्य-लयों में।
4. अल्हैया-बिलावल, यमन, खमाज, काफी, बिहाग, भैरव और भूपाली रागों में एक-एक छोटा-ख्याल कुछ सरल तानों सहित।
5. इन रागों में साधारण आलाप करने की क्षमता। गीत गाते समय हाथ से ताल देने का अभ्यास तथा तबले के साथ गाने का अभ्यास।
6. तीन-ताल, चार-ताल, दादर, और कहरवा तालों के ठेकों को ताली देते हुए ठाह तथा दुगुन लयों में बोलना।
7. मुख्य राग-दर्शक आलापों द्वारा राग पहिचान।

शास्त्र

1. **निम्नलिखित सरल विषयों तथा पारिभाषिक शब्दों का साधारण प्रारम्भिक ज्ञान-**

   संगीत भारत की दो मुख्य संगीत-पद्धतियाँ, ध्वनि, ध्वनि की उत्पत्ति, नाद, नाद-स्थान, श्रुति, स्वर, प्राकृत-स्वर, अचल और चल स्वर, शुद्ध और विकृत-स्वर (कोमल व तीव्र), सप्तक (मन्द्र, मध्य, तार), थाट, राग, वर्ण (स्थाई, आरोही-अवरोही, संचारी), अलंकार (पल्टा), राग जाति (ओडव, षाडव, सम्पूर्ण) वादी, सम्वादी, अनुवादी वर्जित-स्वर, पकड़ आलाप, तान, ख्याल, सरगम, स्थाई, अन्तरा, लय (विलम्बित, मध्य, द्रुत), मात्रा, ताल विभाग, सम ताली, खाली ठेका, आवर्तन, ठाह तथा दुगुन।
2. इस वर्ष के रागों का परिचय उसके थाट, स्वर, आरोह, अवरोह, जाति, पकड़ वादी, सम्वादी, वर्ज्य-स्वर, समय तथा कुछ सरल-आलापो सहित लिखना।
3. इस वर्ष के तालों के ठेके (बोल) उनकी मात्रा, विभाग, सम, ताली, खाली सहित ताल लिपि में लिखना उनका दुगुना लिखने का भी अभ्यास।
4. विष्णु-दिसम्बर अथवा भारत-खण्डे स्वर-लिपि में से किसी एक पद्धति का प्रारम्भिक ज्ञान।
5. लिखित सरल स्वर-समूहों द्वारा राग पहिचान।
6. विष्णु दिसम्बर तथा भातखण्डे की संक्षिप्त जीवनियाँ तथा उनके संगीत कार्यों का संक्षिप्त परिचय।

द्वितीय वर्ष

जूनियर-डिप्लोमा

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों की तथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

द्वितीय वर्ष के परीक्षा में प्रथम वर्ष का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. स्वर-ज्ञान-शुद्ध, कोमल तथा तीव्र-स्वरों का गाने तथा पहिचानने का विशेष ज्ञान। प्रथम-वर्ष की अपेक्षा कठिन स्वर-समूहों का गाने और पहिचानने का अभ्यास।
2. लय-ज्ञान :- ठाह दुगुन और चौगुन लायों को ताली देकर अंकों अथवा स्वरों की सहायता से दिखाना।
3. प्रथम-वर्ष की अपेक्षा कुछ कठिन अन्य अलंकारों को विलम्बित, मध्य और द्रुत-लयों में सरगम और आकार में गाने का विशेष अभ्यास।
4. बागेश्री, दुर्गा, आसावरी, भैरवी, वृन्दावनी-सारंग, भीम-पलासी और देश रागों में मध्यलय के छोटे-ख्याल साधारण तालों सहित गाने का अभ्यास।
5. पाठ्यक्रम के किसी दो रागों में दो ध्रुपद। प्रत्येक ध्रुपद की स्थाई और अन्तरे को दुगुन और चौगुन लयों में गाने का अभ्यास।
6. यमन, बिहाग और अल्हैया-बिलावल में एक-एक विलंबित-ख्याल स्वर-विस्तार तथा तालों सहित गाने का अभ्यास।
7. छोटे-ख्यालों में अपने मन से आलाप और सरल-तान लेकर तबले से मिलाना।
8. एकताल, रुपक, तीवरा, झपताल और सूल तालों को ठाह, दुगुन और चौगुन लयों में ताली देकर बोलना।
9. राग पहिचान।

शास्त्र

1. **निम्नलिखित सरल विषयों तथा पारिभाषिक शब्दों का साधारण ज्ञान-**

ध्वनि, धवनि की उत्पत्ति, कम्पन, आन्दोलन (नियमित-अनियमित, स्थिर-अस्थिर आन्दोलन), आन्दोलन-संख्या, नाद की तीन विशेषतायें, नाद को उच्च-नीचता का आन्दोलन-संख्या से संबंध, नाद और श्रुति, गीत के प्रकार-बड़ा-ख्याल, छोटा-ख्याल, ध्रुपद तथा लक्षण-गीत के अवयव (स्थाई, अन्तरा, संचारी आभोग), जनकथाट, जन्यराग, आश्रयराग, ग्रह, अंश, न्यास, वक्र-स्वर, समय और सप्तक का पूर्वांग-उत्तरांग, वादी-स्वर का राग के समय से संबन्ध, पूर्व-उत्तर राग, तिगुन, चौगुन, मीड, कण, स्पर्श-स्वर तथा वक्र-स्वर।

2. प्रथम और द्वितीय वर्ष के रागों का पूर्ण-परिचय एवं उनको थाट, स्वर, आरोह-अवरोह, जाति, पकड़, समय, वर्ज्य-स्वर और आलाप तान सहित स्वर-लिपि में लिखने का अभ्यास।
3. दोनों वर्ष के तालों के ठेकों की मात्रा, ताली, खाली, सम, विभाग आदि दिखाते हुये दुगुन तथा चौगुन लयों की ताल-लिपि में लिखना।
4. गीतों को विष्णु दिगम्बर अथवा भातखण्डे स्वर-लिपि में लिखने का ज्ञान।
5. लिखित स्वर-समूह द्वारा राग पहिचानना।
6. मिलते-जुलते रागों में समता-विभिन्नता बताना।
7. तानसेन तथा अमीर खुसरों की संक्षिप्त जीवनी और उनके संगीत कार्यों का परिचय।

तृतीय वर्ष

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों की तथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

पिछले वर्षों के संपूर्ण पाठ्यक्रम भी इसमें सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. स्वर-ज्ञान में विशेष उन्नति, तीनों सप्तकों (स्थानों) के शुद्ध और विकृत-स्वरों का समुचित अभ्यास, कठिन स्वर-समूहों को गाना और पहिचानना।
2. अलंकारों को ठाह, दुगुन तथा चौगुन लयों में गाने का विशेष अभ्यास।
3. तानपूरा मिलाने का ढंग जानना।
4. लय-ज्ञान में विशेष उन्नति, दुगुन, तिगुन और चौगुन लयों का अधिक स्पष्ट और पक्का ज्ञान, आड़लय का केवल प्रारम्भिक परिचय।
5. गले से कण-स्वरों के प्रयोग का अभ्यास, कुछ विशेष आलंकारिक स्वर-समूहों अथवा खटकों का अभ्यास।
6. तिलक-कामोद, हमीर, केदार, तिलंग, कालिंगड़ा, पटदीप जौनपुरी, मालकौश और पीलू में एक-एक छोटा-ख्याल आलाप, तान तथा बोल-तान सहित।
7. बागेश्री, आसावरी, वृन्दावनी, सारंग, भीमपलासी, देश जौनपुरी, हमरी, केदारा, पटदीप तथा मालकैश-इन 10 रागों में से किन्ही 6 रागो में बड़ा-ख्याल-आलाप, तान बोल-तान इत्यादि सहित।
8. उक्त रागों में से किन्हीं दो रागों मे एक-एक ध्रुपद तथा किसी एक राग में एक धमार-दुगुन, तिगुन और चौगुन सहित।
9. दीपचन्दी, झुमरा, धमार और तिलवाड़ा-तालों के ठेकों को ठाह, दुगुन, तिगुन और चौगुन लयों में बोलना।
10. राग पहिचान में निपुणता।

शास्त्र

1. तानपुरे और तबले का पूर्ण विवरण और उनको मिलाने का पूर्ण ज्ञान। आन्दोलन की चौड़ाई और उसका नाद के छोटे-बड़ेपन से संबन्ध, 22 श्रुतियों का सात शुद्ध-स्वरों में विभाजन (आधुनिक मत), प्रथम और द्वितीय-वर्ष के कुल पारिभाषिक शब्दों का अधिक पूर्ण और स्पष्ट परिभाषा, थाट और राग के विशेष नियम, श्रुति और नाद में सूक्ष्म भेद, ब्यंकटमुखी के 72 थाटों की गणितानुसार रचना और एक थाट से 484 रागों की उत्पत्ति, स्वर और समय के अनुसार रीागों के तीन वर्ग (रे-ध कोमल वाले राग, रे-ध शुद्ध वाले राग और ग-नी कोमल वाले राग), सन्धि-प्रकाश राग, गायकों के गुण और अवगुण, तानों के प्रकार (शुद्ध या सरल, कूट, मिश्र, बोल-तान), गमक, आड़, स्थाई। गीत के प्रकार-बड़ा-ख्याल, धमार, (होरी), (टप्पा) का विस्तृत वर्णन
2. पाठ्यक्रम के रागों का पूर्ण-परिचय, स्वर-विस्तार तथा तान सहित।
3. इस वर्ष तथा पिछले वर्ष के सभी तालों का पूर्ण-परिचय। उनके ठेकों को दुगुन, तिगुन और चौगुन लयों में ताल-लिपि में लिखना किसी ताल या गीत की दुगुन आदि आरम्भ करने के स्थान को गणित द्वारा निकालने की रीति।
4. गीतों की स्वर-लिपि लिखना। धमार तथा ध्रुपद को दुगन, तिगुन और चौगुन में लिखना।
5. कठिन स्वर-समूहों द्वारा राग पहिचान।
6. पाठ्यक्रम के समप्रकृति रागों की तुलना
7. भातखण्डे तथा विष्णुदिगम्बर स्वर-लिपि पद्धतियों का पूर्ण ज्ञान।
8. शारंगदेव तथा स्वामी हरिदास की संक्षिप्त जीवनियाँ तथा उनके संगीत कार्यों का परिचय।

चतुर्थ वर्ष

सीनियर-डिप्लोमा

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों की और शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

पिछले वर्षों का संपूर्ण पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. स्वर-ज्ञान का विशेष अभ्यास। कठिन स्वर-समूहों की पहिचान।
2. तानपूरा और तबला मिलने की विशेष क्षमता।
3. अंको तथा स्वरों के सहारे ताल देकर निम्नलिखित लयों का प्रदर्शन।

दुगुन (1) मात्रा में दो मात्रा बोलना, तिगुन (1 में 3), चौगुन (1 में 4), आड़ (2 में 3), आड़ का उल्टा (3 में 2), पौनगुन (4 में 3) तथा सवागुन (4 में 5) मात्राओं का प्रदर्शन।

4. कठिन और सुन्दर आलाप और तानों का अभ्यास।
5. देशकार, शकरा, जयजयवन्ती, कामोद, मारवा, मुलतानी, सोहनी बहार तथा पूर्वी रागों में एक-एक विलम्बित और द्रुत-ख्याल-सुन्दर तथा कठिन आलाप, तान तथा बोल-तान सहित।
6. उपरोक्त रागों में से किसी दो में एक-एक ध्रुपद तथा अन्य किन्हीं दो में एक-एक धमार-ठाह, दुगुन, तिगुन और चौगुन सहित। किसी एक राग में एक तराना।
7. ख्याल-गायकी में विशेष प्रवीणता।
8. ठुमरी और टप्पा ठेकों का साधारण ज्ञान। आड़ा-चारताल तथा जत ताल को पूर्ण रूप से बोलने का अभ्यास।
9. स्वर-समूहों द्वारा राग पहिचानना।
10. गाकर रागों में समता-विभिन्नता दिखाना।

शास्त्र

1. गीत के प्रकार :- टप्पा, ठुमरी, तराना, तिरवट, चतुरंग, भजन, गीत तथा गजल का विस्तृत वर्णन। राग-रागिनी पद्धति, आधुनिक आलाप-गायन को विधि, तान के विविध प्रकारों का वर्णन, विवादी-स्वर का प्रयोग, निबद्ध-गान के प्राचीन प्रकार (प्रबन्ध, वस्तु आदि), धातु, अनिबद्ध-गान, अध्व-दर्शक स्वर।
2. 22 श्रुतियों का स्वरों में विभाजन (आधुनिक और प्राचीन मतों का तुलनात्मक अध्ययन), लिखे हुए तार की लम्बाई का नाद के ऊँचे-नीचेपन से सम्बन्ध।
3. छायालय और संकीर्ण-राग, परमेल प्रवेशक राग, रागों का समय-चक्र, राग का समय निश्चित करने में अध्वदर्शक-स्वर, वादी-सम्वादी और पूर्वांग-उत्तरांग का महत्व, दक्षिण और उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत-पद्धतियों के स्वरों की तुलना।
4. उत्तर भारतीय सप्तक के स्वरों से 32 थाटों की रचना, आधुनिक-थाटों के प्राचीन नाम, तिरोभाव, आविर्भाव और अल्पत्व-बहुत्व।
5. रागों का सूक्ष्म तुलनात्मक अध्ययन तथा राग पहिचान।
6. विष्णुदिगम्बर तथा भातखण्डे दोनों स्वर-लिपियों का तुलनात्मक अध्ययन। गीतों को दोनों स्वर-लिपियों में लिखने का अभ्यास। धमार और ध्रुपद की दुगुन, तिगुन और चौगुन स्वर-लिपि में लिखने का पूर्ण अभ्यास।
7. भरत, अहोबल, ब्यंकटमखी तथा मानसिंह तोमर का जीवन-चरित्र तथा इनके संगीत कार्यों का विवरण।
8. पाठ्यक्रम के सभी तालों की दुगुन, तिगुन, चौगुन प्रारम्भ करने का स्थान गणित द्वारा निकालने की विधि। दुगुन, तिगुन तथा चौगुन के अतिरिक्त अन्य विभिन्न लयकारियों को ताल-लिपि में लिखने का अभ्यास।

पंचम वर्ष

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों की और शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

पिछले वर्षों का पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. कुछ कठिन लयकारियों को ताली देकर दिखाना-जैसे 2 मात्रा में 3 मात्रा बोलना और 3 मात्रा में 4 मात्रा बोलना इत्यादि।
2. नोम-तोम के आलाप का विशेष अभ्यास।
3. पूरिया, गौड़-मल्हार, छायानट, श्री, हिंडोल, गौडसारंग, विभास, दरबारी-कान्हड़ा, तोड़ी, अड़ाना इन रागों में एक-एक विलम्बित तथा द्रुत-ख्याल पूर्णतया सुन्दर गायकी के साथ। किसी दो रागों में एक-एक धमार और किसी दो में एक-एक ध्रुपद जिसमें दून, तिगुन, चौगुन और आड़ करना आवश्यक है।
4. रागों का सूक्ष्म अध्ययन। रागों में आर्विभाव-तिरोभाव का क्रियात्मक प्रयोग।
5. सवारी (पंचम), गजझंपा, आद्धा, मत्त, पंजाबी तालों का पूर्ण-ज्ञान और इन्हें ठाह, दुगुन, तिगुन, तथा चौगुन लयकारियों में ताली देकर बोलना।
6. तीनताल, झपताल, चारताल, एकताल, कहरवा तथा दादरा तालों को तबले पर बजाने का साधारण अभ्यास।

शास्त्र

1. पिछले चतुर्थ-वर्ष तक के पाठ्यक्रम का पूर्ण तथा विस्तृत अध्ययन।
2. अनिबद्ध-गान के प्राचीन प्रकार-रागलाप, रुपकालाप, अलप्तिगान, स्वस्थान-नियम, बिदारी, राग-लक्षण, जाति-गायन और उसकी विशेषताएँ, सन्यास, विन्यास, गायकी, नायकी, गांधर्व, गीत (देशी, मार्गी)। पाठ्यक्रम के रागों में तिरोभाव-आर्विभाव और अल्पत्व-बहुत्व दिखाना।
3. श्रुति-स्वर विभाजन के सम्बन्ध में सम्पूर्ण इतिहास का तीन मुख्य कालों में विभाजन (प्राचीन, मध्य और आधुनिक), इन तीन कालों के ग्रन्थाकारों के ग्रान्थ और उनमें वर्णित मतों में साम्य और भेद। षड़ज-पंचम भाव और आन्दोलन संख्या तथा तार की लम्बाई का सम्बन्ध, किसी स्वर की आन्दोलन-संख्या दी हुई हो तो तार लम्बाई निकालना (जब कि षड़ज की दोनों वस्तुएँ दी हुई हो इसी प्रकार तार की लम्बाई दी हुई हो तो आन्दोलन-संख्या निकालना, मध्य-कालीन पण्डितों आर आधुनिक-पण्डितों के शुद्ध और विकृत-स्वरों के स्थानों की तुलना उनके तार की लम्बाइयों की सहायता से करना।

4. विभिन्न रागों में सरल-तालों के सरगम मन से बनाना।

5. इस वर्ष के रागों का विस्तृत अध्ययन तथा उनसे मिलते-जुलते रागों का मिलान, रागों में अलपत्व- बहुत्व, तिरोभाव-आर्विभाव दिखाना।

6. इस वर्ष के तालों का पूर्ण-परिचय तथा उनके ठेकों को विभिन्न लयकारियों में ताल-लिपि में दिखाना। गणित द्वारा किसी गीत या ताल की दून, तिगुन, चौगुन, आड़ आदि प्रारम्भ करने का स्थान निश्चित करना।

7. गीत और उनकी दुगुन, तिगुन और चौगुन लयकारियों का स्वर-लिपि में लिखना।

8. निबन्ध के विषय जैसे :- राग और रस, संगीत और अन्य ललित-कलाएँ, संगीत और कल्पना, यवन संस्कृत का हिन्दुस्तानी-संगीत पर प्रभाव, संगीत और उसका भविष्य, संगीत में वाद्यों का स्थान, लोक संगीत इत्यादि

9. गीतों और तालों को किसी भी स्वर-लिपि में लिखने का अभ्यास।

10. श्रीनिवास, रामामात्य, हृदयनारायण देव, मोहम्मद-रजा, अदारंग का जीवन-परिचय तथा संगीत-कार्य।

छठा वर्ष

क्रियात्मक-परीक्षा 200 अंकों कीतथा शास्त्र के 2 प्रश्न-पत्र 50-50 अंकों के
पिछले सभी वर्षों का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. राग पहिचान में निपुणता। अल्पत्व-बहुत्व, आर्विभाव-तिरोभाव और समता-विभिन्नता दिखाने के लिए पूर्व वर्षों के सभी रागों का पयोग हो सकता है। इसीलिए सभी का विशेष विस्तृत अध्ययन होना आवश्यक हे।

2. गायन की तैयारी, आलाप, तानों में सफाई, महफिल गाने की निपुणता।

3. टप्पा, ठुमरी, तिरकट और चतुरंग गीतों का परिचय, इनमें से किन्हीं दो गीतों को जानना आवश्यक है।

4. रामकली, मियाँ-मल्हार, परज, वसनत रागेश्री, पूरियावनश्री, ललित, शुद्ध-कल्याण, देशी और मालगुंजी रागों में एक-एक बड़ा ख्याल और एक-छोटा ख्याल पूर्ण तैयारी के साथ। किन्हीं दो रागों में एक-एक धमार, एक-एक ध्रुपद और एक-एक तराना जानना आवश्यक है। प्रथम वर्ष से षष्ठ-वर्ष तक के रागों मं से किसी एक में चतुरंग।

5. काफी, पीलू, पहाड़ी, झिंझोटी, भैरवी, तिलंग तथा खमाज-इनमें से किन्हीं दो रागों में एक-एक ठुमरी तथा किसी एक राग में टप्पा।

6. लक्ष्मी-ताल, ब्रह्म-ताल तथा रुद्र-ताल-इन तीनों तालों का पूर्ण-परिचय तथा इनकों पिछले वर्ष की उल्लिखित सभी लयकारियों में हाथ से ताली देकर दिखाने का अभ्यास।

शास्त्र

प्रथम प्रश्न-पत्र

1. प्रथम से षष्ठ-वर्ष तक के सभी रागों का विस्तृत तुलनात्मक और सूक्ष्म परिचय। उनमें आलाप, तान आदि स्वर-लिपि में लिखने का पूर्ण अभ्यास। संप्रकृति रागों में समता विभिन्नता दिखाना।

2. विभिन्न रागों में अलपत्व-बहुत्व, अन्य रागों की छाया आदि दिखाते हुए आलाप, तान स्वर-लिपि में लिखना।

3. कठिन लिखित स्वर-समूहों द्वारा राग पहिचानना।

4. दिये हुए रागों में सरगम बनाना। दी हुई कविता को राग में ताल-बद्ध करने का ज्ञान।

5. गीतों को स्वर-लिपि में लिखना। धमार और ध्रुपद को दुगुन, तिगुन, चौगुन आड़ आदि लयकारियों में लिखना।

6. तालों के ठेकों को विभिन्न लयकारियों में लिखना।

7. कुछ लेख जैसे :- जीवन में संगीत की आवश्यकता, आलाप-विधि, महफिल की गायकी, शास्त्रीय-संगीत का जनता पर प्रभाव, रेडियो और सिनेमा-संगीत, पृष्ट-संगीत (Background Music), हिन्दुस्तानी-संगीत और वृन्दावन, हिन्दुस्तानी संगीत की विशेषतायें स्वर का लगाव, संगीत स्वर लिपि इत्यादि।

8. हस्सू-हद्दू खाँ, फय्याज़ खाँ, अब्दुल करीम खाँ, बड़े गुलाम अली खाँ, ठाकुर ओंकार नाथ का जीवन-परिचय तथा कार्य।

द्वितीय प्रश्न-पत्र

(केवल शास्त्री-सम्बन्धी)

1. पिछले सभी वर्षों के शास्त्र-सम्बन्धित विषयों का सूक्ष्म तथा विस्तृत अध्ययन।

2. मध्यकालीन तथा आधुनिक-संगीतज्ञों के स्वर-स्थानों की आन्दोलन-संख्याओं की सहायता से तथा तार की लम्बाई की सहायता से तुलना, पाश्चात्य स्वर-सप्तक की रचना, सरल-गणान्तर और शुभ स्वर-संवाद के नियम, पाश्चात्य-स्वरों की आन्दोलन-संख्याएँ। हिन्दुस्तानी स्वरों में स्वर-संवाद, कर्नाटकी ताल-पद्धति और हिन्दुस्तानी ताल-पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन, संगीत का संक्षिप्त क्रमिक इतिहास, ग्राम, मूर्छना (अर्थ में क्रमिक परिवर्तन), मुर्छना और आधुनिक-थाट, कलावन्त, पन्डित, नायक, गायक, वाग्गेयकार, बानी (खन्डार, डागुर, नौहार, गौवरहार) गीति, गति के प्रकार इत्यादि, गमक के विविध प्रकार, हिन्दुस्तानी-वाद्यों के विविध प्रकार (तत्, वितत्, अवनद्ध, घन और सुषिर)।

3. निम्नलिखित विषयों का ज्ञान :- तानपूरे में उत्पन्न होने वाले सहायक-नाद पश्चात्य सच्चा स्वर-सप्तक (Diatonic Scale)का समान स्वरांतर-सप्तक (Equally Tempered Scale) में परिवर्तित होने के कारण और विवरण, मेजर, माइनर और सेमीटोन, पाश्चात्य आधुनिक-स्वरों के गुण-दोष, हारमोनियम पर एक आलोचनात्मक दृष्टि,

तानपूरे से निकलने वाले स्वरों के साथ हमारे आधुनिक स्वर-स्थानों का मिलान। प्राचीन, मध्यकालीन, तथा आधुनिक राग-वर्गीकरण, उनका महत्व और उनके विभिनन प्रकारों की पारस्परिक तुलना। संगीत-कला और शास्त्र का पारस्परिक-सम्बन्ध। भरत की श्रुतियाँ समान थीं अथवा असमान-इस पर विभिन्न विद्वानों के विचार और तर्क। सारणा-चतुष्टई का अध्ययन, उत्तर भारतीय-संगीत को संगीत-पारिजात की देन, हिन्दुस्तानी और कर्नाटक संगीत-पद्धतियों की तुलना-उनके स्वर, ताल और रागों का मिलान करते हुये। पाश्चात्य स्वर-लिपि पद्धति का साधारण ज्ञान, संगीत के घरानों का संक्षिप्त ज्ञान, रत्नाकार के दस विधि राग-वर्गीकरण, भाषा-विभाषा इत्यादि।

4. भातखण्डे और विष्णु-दिगम्बर स्वर-लिपियों का तुलनात्मक अध्ययन, उनमें त्रुटियाँ और उन्नति के सुझाव।

5. लेख जैसे :- भावी-संगीत के समुचित निर्माण के लिये सुझाव, हिन्दुस्तानी संगीत-पद्धति के मुख्य सिद्धान्त। प्राचीन और आधुनिक प्रसिद्ध संगीतज्ञों का परिचय तथा उनकी शैली। संगीत का मानव जीवन पर पभाव। चित (Mind) और संगीत (Music) स्कूलों द्वारा संगीत-शिक्षा की त्रुटियाँ और उन्नति के सुझाव। संगीत और स्वर-साधन।

भाव-संगीत

यह केवल चार वर्षों का पाठ्यक्रम है, दो वर्ष बाद जूनियर-डिप्लोमा तथा चार वर्ष बाद सीनियर-डिप्लोमा की मुख्य परीक्षायें होंगी। भाव-संगीत की चतुर्थ-वर्ष की परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाने पर विद्यार्थी को शास्त्रीय-संगीत के पंचम-वर्ष की परीक्षा में बैठने की अनुमति दे दी जायेगी।

प्रथम वर्ष

क्रियात्मक परीक्षा 100 अंकों की और शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

1. स्वर-ज्ञान :- 7 शुद्ध और 5 विकृत-स्वरों को गाने और पहिचानने का अभ्यास, स्वर उच्चारण पर विशेष ध्यान।

2. लय-ज्ञान :- (अ) विलम्बित, मध्य, द्रुत और ठाह, दून और चौगुन लयों का साधारण ज्ञान। इन तीनों लयों मे प्रत्येक मात्रा पर ताली देकर 7 स्वरों को गाने का अभ्यास।

(ब) विभिन्न सरल-मात्रा विभागों का ज्ञान-जैसे-एक मात्रा में आधी-आधी मात्रा के दो अंक (एक, दो) या दो स्वर (स, रे) बोलते हुये ताली देना, एक मात्रा में चौथाई-चाथाई मात्रा के चार अंक (1-2-3-4) या चार (स, रे, ग, म) ताली देते हुये बोलना।

3. दस सरल अलंकारों का अभ्यास।

4. बिलावल, कल्याण, काफी, खमाज, भूपाली, भैरव और भैरवी में द्रुत-ख्याल के साथ-साथ एक भाव-संगीत की चीज गाने का अभ्यास।

5. अल्हैया-बिलावल, कल्याण, भूपाली, काफी, खमाज, भैरव और भैरवी रागों का साधारण स्वर-विस्तार और इनमें एक-एक गीत या भजन (राग प्रधानता पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है)। साधारण आलाप लेकर तबले के साथ मिलने का प्रारम्भिक अभ्यास।

6. कम से कम 5 भाव प्रदर्शक गीत या भजन गाने का पूर्ण अभ्यास। राग प्रधानता की विशेष आवश्यकता नहीं है। कविता के भाव के अनुसार गीत या भजन की स्वर-रचना होनी चाहिये। दो प्रकार के लोक-संगीत के गाने का अभ्यास।

7. कहरवा, दादरा, तीनताल और झपताल तालों के ठेकों को ताल देकर ठाह, दून लयों में बोलने का अभ्यास।

8. सरल आलापों द्वारा राग-पहिचान।

शास्त्र

1. शास्त्र-प्रथम वर्ष गायन-पाठ्यक्रम के अनुसार।

2. भजन और गीत की परिभाषायें और भेद, गीतों के प्रकार और उनकी व्याख्या जैसे ग्राम-गीत (लोक-गीत, आधुनिक-गीत : राष्ट्रीय-गीत इत्यादि)। कण, खटका, मुर्की और मींड की परिभाषायें।

3. विष्णु-दिगम्बर अथवा भातखण्डे स्वर-लिपि का ज्ञान।

द्वितीय वर्ष

(जूनियर-डिप्लोमा)

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों की तथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

प्रथम वर्ष का पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. स्वर-ज्ञान :- शुद्ध तथा विकृत (कोमल या तीव्र) स्वरों को गाने और पहिचानने का विशेष ज्ञान। कुछ सरल स्वर-समूहों को पहिचानने का अभ्यास।

2. लय-ज्ञान :- पिछले वर्ष में दिय गये सभी लय सम्बन्धी विषयों का विशेष अभ्यास। कुछ कठिन मात्रा विभागों सहित स्वरों को ताली देकर गाने का अभ्यास जैसे 2 में 3 और 3 मात्रा में 2 मात्रा बोलना।

3. पिछले वर्ष के थाटों में अलंकारों को गाने का विशेष अभ्यास। इस वर्ष कुछ नये और कठिन अलंकार होने चाहिये।

4. भीमपलासी, बागश्री, सारंग, देश आसवरी, बिहाग और दुर्गा रागों का ज्ञान, साधारण स्वर-विस्तार और हर एक में छोटा-ख्याल। किन्हीं चार ख्यालों में साधारण आलाप और सरल तानें लेकर तबले का साथ मिलने का अभ्यास होना चाहिये।

5. सूरदास, मीराबाई, तुलसीदास और कबीर के एक-एक भजन और कुछ आधुनिक कवियों के कम से कम 5 गीतों का पूर्ण अभ्यास। भजन और गीत के भाव के अनुसार उनकी स्वर-रचना की सुन्दरता पर विशेष ध्यायन। रागों की शुद्धता की विशेष आवश्यकता नहीं है।

6. इस वर्ष के किसी भी एक राग में एक ध्रु पद को ठाह, दून और चौगुन सहित गाने का अभ्यास।
7. एक होली, एक कजली तथा 2 लोकगीत गाने का अभ्यास।
8. चारताल, एकताल, रूपक और तेवरा तालों का ज्ञान और उनकी ठाह, दून और चौगुन ताली देकर बोलना।
9. राग पहिचान का पूर्ण-ज्ञान।
10. स्वर-उच्चारण की शुद्धता आवश्यक है।

शास्त्र

1. द्वितीय-वर्ष गायन (शास्त्रीय) पाठ्यक्रम के अनुसार।
2. गमक, गिटकिरी, विश्रान्ति, छुट तथा पुकार की परिभाषाएँ।
3. आधुनिक-संगीत, भाव-संगीत, फिल्मी-संगीत, गीत, भजन, हल्के गाने। (लाइट-म्यूजिक), जन-संगीत और लोक-संगीत का परस्पर भेद।
4. विष्णुदिगम्बर तथा भातखण्डे स्वर-लिपि पद्धति में गीत को लिखने का अभ्यास।

तृतीय वर्ष

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों की और शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

इसमें पिछले वर्षों का पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. स्वर-ज्ञान में विशेष उन्नति। तीनों सप्तकों के शुद्ध और विकृत-स्वरों का समुचित अभ्यास। कठिन स्वर-समूहों को गाना और उन्हें पहिचानना।
2. तानपुरा मिलाना सीखना प्रारम्भ।
3. लय-ज्ञान में विशेष उन्नति, दुगुन, तिगुन और चौगुन लयों का अधिक स्पष्ट और पूर्ण-ज्ञान।
4. तोड़ी, मारवा और पिछले वर्षों के सभी थाटों में कुछ कठिन अलंकारों का पूर्ण अभ्यास। इस वर्ष गले की तैयारी और सफाई पर विशेष ध्यान होना चाहिये।
5. पूर्वलगन-कण, अनुलगन-कण, खटका, निश्चित मीड़, अनिश्चित-मीड़, कण-युक्त मीड़ तथा विशिष्ट-मोड़ के अन्य प्रकारों को निकालने का विशेष अभ्यास। कम्पन, मुर्की, दाना, दानेदार टुकड़े, गिटकिरी और गमक निकालने का अभ्यास।
6. जौनपुरी, पीलू, तिलक-कामोद, कालिँगड़ा, सोहनी, मालकौस, पूर्वी, तिलंग और हमीर रागों का स्वरूप-ज्ञान, इनका स्वर-विस्तार और एक-एक छोटा-ख्याल। इसमें से किन्हीं चार रागों में छोटा ख्याल, आलाप, तान व सरल बोल-तानों के साथ तैयार होना चाहिये और किसी एक राग में बड़ा-ख्याल आलाप, तान आदि सहित होना चाहिये।
7. जौनपुरी, दुर्गा, पीलू, हमीर, में एक-एक सुन्दर भजन या गीत। भजन या गीतों के भाव और रागों की शुद्धता के अनुसार स्वर-रचना होनी चाहिये।
8. इस वर्ष के किसी एक राग के एक ध्रुपद को ठाह, दून, तिगुन और चौगुन लयों में गाने का अभ्यास तथा एक तराना।
9. प्रथम तथा द्वितीय-वर्ष के रागों में दिये हुए भजन या गीतों को स्वयं-रचना करके गाने का प्रारम्भिक अभ्यास।
10. भैरवी, काफी, खमाज देश और तिलंग में से किसी एक में ठुमरी-अंग से सरल-बोल बनाकर गाने का अभ्यास।
11. लोक-गीत के प्रकारों को कुशलतापूर्वक गाने का अभ्यास।
12. भक्त कवियों-सूर, मीरा, तुलसी, कबीर, नानक, ब्रह्मानन्द, जुगल-प्रिया तथा अन्य भक्त कवियों के भजन और आधुनिक कवियों के गीत। भाव-प्रदर्शन की दृष्टि से गायन-शैली स्तर अच्छा होना चाहिये।
13. दीप चन्दी, धमार, जत और अद्धा तालों का ज्ञान और इनकी ठाह, दून और चौगुन ताल देकर बोलना।
14. तीनताल, दादरा और कहरवा तालों के ठेकों को तबले पर बजाने का अभ्यास।
15. कठिन स्वर-समूहों द्वारा राग पहिचान।

शास्त्र

1. तृतीय-वर्ष गायन (शास्त्रीय) पाठ्यक्रम के अनुसार।
2. शास्त्रीय-संगीत, भाव-संगीत और सरल-संगीत आदि और संगीत के प्रयोगात्मक रूप में भेद।
3. गीत आदि को स्वर-ताल-बद्ध करने के नियम और सिद्धान्त।
4. दीपचंदी, धमार, अद्धा और जत तालों का पूर्ण परिचय।

चतुर्थ वर्ष

(सीनियर-डिप्लोमा)

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों का तथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

पिछले सभी वर्षों का पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. पिछले सभी वर्षों के पाठ्यक्रम का पूर्ण अध्ययन। गले की तैयारी और सफाई पर विशेष ध्यान।
2. स्वर-ज्ञान में विशेष उन्नति। कठिन स्वर-समूहों की पहिचान। स्वर-लिपि में लिखे गीत को गाने और सरल-गीत को सुनकर-स्वर-लिपि करने का अभ्यास।
3. शुद्ध रूप से तानपुरा मिलाने का विशेष अभ्यास।
4. अंकों या स्वरों के सहारे ताली देकर विभिन्न लयकारियों को दिखाना जैसे दुगुन (1 मात्रा में 2 मात्रा), तिगुन (1 में 3), चौगुन (1 में 4), आड़ (2 में 3), और आड़ का उल्टा (3 में 2)।
5. कठिन और अधिक सुन्दर आलाप और तानों को गले से निकालना। मीड़, कण, खटका, मुर्की, गिटकिरी, गमक और अन्य सूक्ष्म हरकतें आदि को गले से निकालने का पूर्ण अभ्यास।
6. बहार, पटदीप, तोड़ी जैजैवन्ती, कामोद, दरबारी-कान्हड़ा, अड़ाना, मुलतानी, मारवा, कालिंगड़ा, केदार और गौड़-सारंग रागों का स्वरूप ज्ञान, स्वर-विस्तार तथा प्रत्येक में एक-एक छोट ख्याल। इनमें से किन्हीं चार में मन से आलाप, तान, बोख-तान लेकर गाने की तैयारी और किन्हीं दो में एक-एक बड़ा ख्याल। इस वर्ष खयाल गायकी में विशेष तैयारी, मुखड़ा और बोल-तानों में विशेष सुन्दरता और तबियतदारी होना चाहिये।
7. इस वर्ष के किन्हीं भी दो रागों में एक-एक धमार तथा एक-एक ध्रुपद तथा किसी एक राग में एक तराना होना चाहिये।
8. देश, पीलू, तिलंग, खमाज और भैरवी में से किन्हीं दो रागों में सुन्दर ठुमरी गाने का अभ्यास।
9. लोक गीत, गजल, होली आदि कुशलता-पूर्वक गाने का अभ्यास।
10. पिछले वर्षों के अतिरिक्त अन्य पाँच भजन और पाँच आधुनिक गीतों को भाव-युक्त व उच्च-स्तर की शैली में गाने की तैयारी।
11. दिये हुये गीत और भजनों को सुन्दर रूप से उनके भाव के अनुसार स्वयं स्वर-रचना करके गाने का अभ्यास।
12. किसी भी गीत या भजन की संगत करने वाले अन्य वाद्यों या वृन्दवादन (Orchestra) के लिये सुन्दर छूट और तान-ठुकड़ो की रचना करने का ज्ञान।
13. झूमरा, आड़ा-चारताल, सूल और तिलवाड़ा तालों के ठेकों का ज्ञान और उनकों ताली देकर केवल ठाह, दून, तिगुन और चौगुन लयों में बोलने का अभ्यास। एकताल, चारताल, झपताल, दीपचन्दी आदि तालों के ठेकों को तबले पर बजाने का अभ्यास।
14. छोटे और कठिन टुकड़ो द्वारा राग पहिचान।
15. गाकर समप्रकृतिक रागों में समता और विभिन्नता दिखाना।
16. दिये गये गेय-काव्य अथवा गीत को उचित स्वर और ताल-बद्ध करने का अभ्यास।

शास्त्र

1. चतुर्थ वर्ष शास्त्रीय-संगीत (गायन) पाठ्यक्रम के अनुसार।
2. गीत आदि को स्वर तथा ताल-बद्ध करने की विधि और दिये हुये गीतों को स्वर-बद्ध करके लिखने का अभ्यास।
3. आकाशवाणी और फिल्मी-संगीत का आलोचनात्मक-अध्ययन और उनमें सुधार के सुझाव।
4. निबन्ध जैसे :- शास्त्रीय और भाव-संगीत, लोक-संगीत, शास्त्रीय-संगीत का फिल्मी-संगीत पर प्रभाव, राग और रस, भाव प्रदर्शन में विविध वाद्यों का सहयोग, पृष्ट संगीत आदि।

वाद्य संगीत

(तन्त्र, वाद्य, धन-वाद्य एवं सुषिर-वाद्य)

परीक्षार्थी निम्नलिखित वाद्यों में से ही परीक्षा हेतु कोई भी वाद्य चयन कर सकता है।

वीणा, विचित्र, वीणा, सितार, सरोद, सारंगी, इसराज (दिलरुबा), बेला, गिटार, संतूर, शहनाई, बांसुरी, क्लैरियोनेट, जलतरंग, नलतरंग।

प्रथम वर्ष

क्रियात्मक परीक्षा 100 अंकों की तथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

क्रियात्मक

1. वाद्य की बैठक तथा अंगुलियों और हाथों के ठीक प्रयोग का ज्ञान।
2. 10 सरल अलंकारों को ठाह और दून-लयों में बजाने का समुचित अभ्यास।
3. कुछ सरल बोल जैसे दा दिर दारा, दा दिर दिर दिर, दार दार दा, दिर दा दिर दारा, दा दिर दा दिर, दा द्राड दा इत्यादि बजाने का अभ्यास।
4. **लय ज्ञान :-** प्रत्येक मात्रा पर ताली देकर लय की स्थिरता की जाँच विलम्बित, मध्य और द्रुत-लयों का साधारण ज्ञान। विभिन्न अलंकारों को इन तीन लयों में बजाने का प्रारम्भिक अभ्यास। विभिन्न सरल मात्रा, विभागों का ज्ञान जैसे-एक मात्रा में आधी-आधी मात्रा के दो अंक (एक, दो) ताल देकर बोलना या दो स्वर वाद्य पर बजाना एक मात्रा में चौथाई-चौथाई मात्रा के चार अंक बोलना या चार स्वर बजाना।
5. यमन, भूपाली, काफी भैरव, भैरवी, खमाज और अल्हैया बिलावल रागों का स्वरूप ज्ञान तथा उनमें एक-एक मध्य-लय की रजाखानी गत कुछ सरल आलंकारि तानों और तोड़ो सहित। वितत (गज द्वारा बजाये जाने वाले) वाद्यों पर ख्याल अंग बजाने वाले विद्यार्थियों के लिये इन रागों में एक-एक मध्यलय का छोटा-ख्याल कुछ सरल आलंकारिक तानों सहित। इन रागों का केवल साधारण स्वर-विस्तार मींड, सूत रहित।

6. तीनताल, चारताल, दादरा और कहरवा तालों के ठेको को ताली देते हुए ठाह दुगुन लयों में बोलना।

7. मुख्य राग दर्शक आलापों द्वारा राग पहिचान।

शास्त्र

1. निम्नलिखित विषयों तथा पारिभाषिक शब्दों का साधारण ज्ञान :- संगीत, भारत की दो मुख्य संगीत-पद्धतियाँ, ध्वनि, ध्वनि के प्रकार, नाद, नाद-स्थान (मन्द्र, मध्य, तार) श्रुति, स्वर, प्राकृत-स्वर, चल और अचल-स्वर, शुद्ध तथा विकृत-स्वर (कोमल और तीव्र), सप्तक (मन्द्र, मध्य, तार), थाट, राग वर्ण (स्थाई, आरोही अवरोही, और संचारी), आरोह, अवरोह, अलंकार (पल्टा) राग-जाति (ओडव, षाडव और सम्पूर्ण वादी, सम्वादी, अनुवादी और विवादी, वर्ज्य-स्वर पकड़, आलाप, तान, गत स्थाई, अन्तरा, तोड़ा बोल, बोल के प्रकार, आकर्ष-प्रहार (सुलट तथा अपकर्ष प्रहार (उल्टा), लय-विलंबित, मध्य द्रुत), मात्रा, ताल, विभाग सम, ताली खाली, ठेका, आवर्तन, ठाह तथा दूना।

2. इस वर्ष के रागों का परिचय उनके थाट, स्वर, वर्ज्य-स्वर, आरोह-अवरोह, जाति, वादी, सम्वादी, पकड़, समय तथा कुछ सरल आलपों सहित लिखना।

3. वाद्य के मुख्य अंगों के नामों का ज्ञान जैसे सितार, इसराज में डांड़ तुम्बा, पोष, अटक या अड़ी, तार गहन, खूंटी, सुन्दरी या परदा कील, सात तारां के नाम, गुलू या कमर, तबली, कण्ठा, पत्ती, धुड़च, घोड़ी, जवारी, मनका, लंगोट, ताँत या रोदा, मिजराव, तरबें बेलें में, खुटियाँ, तार धुड़च, टंग (Tongue)टेलपीस(Tail-Piece),गज राजन, स्क्रू, चिनरेस्ट (Chin-rest),साउन्ड पोस्ट (Sound-Post), ऐडजस्टर (Adjuster)आदि।

4. इस वर्ष के तालों के ठेकों को उनकी मात्रा, विभाग, सम, ताली, खाली सहित ठाह तथा दून में ताल-लिपि में लिखने का अभ्यास।

5. विष्णुदिगम्बर अथवा भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति का प्रारम्भिक ज्ञान।

6. लिखित सरल स्वर-समूहों द्वारा राग पहिचान।

7. विष्णुदिगम्बर तथा भातखण्डे की संक्षिप्त जीवनियाँ तथा उनके संगीत-कार्यों का संक्षिप्त परिचय।

द्वितीय वर्ष

(जूनियर-डिप्लोमा)

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों की तथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

इसमें प्रथम वर्ष का पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. अन्य कुछ कठिन अलंकारों तथा बोलों को ठाह, दून और चौगुन लयों में बजाने का अभ्यास।

2. सुने हुये स्वरों को वाद्य पर बजाना और पहिचानने का अभ्यास।

3. लय-ज्ञान ठाह, दून तथा चौगुन लयों को अंकों द्वारा ताली देकर और स्वरों द्वारा वाद्य पर बजाकर दिखाना।

4. भीमपलासी, हमरी वृन्दावनी सारंग, देश जौनपुरी, बिहाग, आसावरी, बागेश्री और मालकंश रागों में एक-एक मध्यलय की गत (रजाखानी) कुछ अच्छे तान-तोड़ों सहित और साधारण स्वर-विस्तार मीड़, सूत रहित। गज-वाद्य पर ख्याल-अंग बजाने वालों के लिये इन रागों में केवल एक-एक छोटा-ख्याल कुछ अच्छे आलाप और तानों के साथ।

5. यमन, बिहाग और भीमपलासी रागों में एक-एक विलंबितगत (मसीतखानी) या बड़ा-ख्याल (ख्यालअंग बजाने वालों के लिये) कुछ अच्छे दून और चौगुन लयों की तानों सहित।

6. साधारण झाला बजाने का अभ्यास। किन्हीं तीन रागों की गतों में झाला बजाना अनिवार्य है।

7. सरल स्वर-समूहों द्वारा राग-पहिचान।

8. एक-ताल, रूपक, तीवरा, झपताल और सूल-तालों के ठेकों को ताल देकर ठाह और दून लयों में बोलना।

शास्त्र

1. निम्नलिखित विषयों तथा पारिभाषिक शब्दों का साधारण ज्ञान :-ध्वनि की उत्पत्ति, कम्पन, आन्दोलन (नियमित, अनियमित अथवा स्थिर, अस्थिर आन्दोलन), आन्दोलन-संख्या, नाद की तीन विशेषतायें छोटा-बड़ापन (Magnitude or Intensity) ऊँचा-नीचापन (Pitch), जाति अथवा गुण (Quality or Timbre)नाद की उच्च-नीचता का आन्दोलन-संख्या से सम्बन्ध, नाद तथा श्रुति, जनक-थाट, जन्य-राग, आश्रय-राग, ग्रह, अंश, न्यास, वक्र-स्वर समय और सप्तक का पूर्वांग और उत्तरांग, पूर्व-राग तथा उत्तर-राग, वादी-स्वर का राग के समय से सम्बन्ध, लय के प्रकार: दुगुन, तिगुन चौगुन।

2. चल और अचल-थाट, गतों के प्रकार (रजाखानी और मसीतखानी) और उनका परस्पर एक दूसरे से अन्तर, वाद्य के विभिन्न तारों के मिलाने की रीति, बजाते समय वाद्य लेकर बैठने के विभिन्न तरीके, बाज, झाला, मीड, सूत, जमजमा, कण या स्पर्श स्वर।

3. प्रथम और द्वितीय वर्ष के रागों का पूर्ण परिचय उनको थाट, स्वर, वर्ज्य-स्वर, आरोह-अवरोह, जाति, पकड़, समय और सरल-आलाप, तान सहित लिखने का अभ्यास।

4. अपने वाद्य का संक्षिप्त इतिहास।

5. गत, तान, तोड़ा और झाला आदि को विष्णु दिगम्बर अथवा भातखण्डे स्वरलिपि में लिखने का ज्ञान।

6. दोनों वर्षों के तालों के ठेकों को मात्र, ताली-खाली, सम, विभाग आदि दिखाते हुए ठाह तथा दुगुन लोय में ताल-लिपि में लिखना।

7. सरल स्वर-समूह द्वारा राग पहिचानना।

8. मिलत-जुलते रागों में समता-विभिन्नता बताना।

9. तानसेन तथा अमीर खुसरों की संक्षिप्त जीवनी और उनके कार्यों का अध्ययन।

तृतीय वर्ष

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों की तथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

पिछले वर्षों का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. प्रथम और द्वितीय वर्षों के पाठ्यक्रम की विशेष जानकारी और तैयारी।

2. सवर-ज्ञान में विशेष उन्नति।

3. अन्य कठिन अलंकारों और तानों का विभिन्न लयकारियों ठाह, (दून, तिगुन और चौगुन) में विभिन्न बोलों में और तीनों सप्तकों में पूर्ण अभ्यास। आड़-लय का केवल प्रारम्भिक ज्ञान।

4. वाद्य मिलाने का प्रारम्भिक अभ्यास।

5. मींड़, सूत, घसीट, जमजमा, खटका, मुर्की, स्पर्श-स्वर आदि निकालने का प्रारम्भिक अभ्यास। प्रथम और द्वितीय वर्ष के रागों के स्वर-विस्तार में इन सब चीजों का साधारण प्रयोग।

6. बागेश्री, मालकंस, जौनपुरी तथा पूर्वी रागों का साधारण आलाप, जोड़ और एक-एक विलंबित गत (मसीतखानी) अथवा बड़ा-ख्याल (ख्याल-अंग बजाने वालों के लिए) दून और चौगुन लयों में सुन्दर तान, तोड़ों सहित। हाथ की सफाई और तैयारी पर विशेष ध्यान रखना चाहिए।

7. पूर्वी तोड़ी, मुलतानी, दुर्गा, कालिंगड़ा, तिलंग पीलू, तिलक-कामोद और सोहनी रागों का पूर्व-ज्ञान, स्वर-विस्तार (साधारण मींड़-सूत द्वारा) और प्रत्येक में एक-एक रजाखानी-गत अथवा छोटा-ख्याल सुन्दर तान, तोड़ों और झाला सहित।

8. दीपचन्दी, धमार, झूमरा, तथा तिलवाडा तालों के ठेंकों को ठाह, दुगुन, तिगुन और चौगुन लयों में बोलना।

9. राग पहिचान में निपुणता।

शास्त्र

1. प्रथम और द्वितीय वर्ष के कुल पारिभाषिक शब्दों का विस्तृतज्ञान। 22 श्रुतियों का सात शुद्ध स्वरों में विभाजन (आधुनिक-मत) आन्दोलन की चौड़ाई और उसका नाद के छोटे बड़ेपन से सम्बन्ध, थाट और राग के विशेष नियम। श्रुति और नाद में सूक्ष्म भेद। व्यंकटमखी के 72 मेलों की मणितानुसार रचना और एक थाट से 484 रागों की उत्पत्ति। स्वर और समय के अनुसार रागों के तीन वर्ग (रे-ध कोमल वाले राग, और ग-नी कोमल वाले राग), सन्धि प्रकाश राग, तानों के प्रकार।

2. वाद्य सम्बन्धी पारिभाषिक शब्दों एवं विषयों का पूर्ण ज्ञान : तरब, जोड़, आलाप, अनुलोम तथा बिलोम मीड़, गमक, सूत, घसीट, मुर्की, गिटकिरी, खटका, छूट, तन्त्र, तन्त्रकारों के गुण दोष, कस्बी या अताई।

3. रागों का पूर्ण परिचय एवं तुलनात्मक अध्ययन स्वर विस्तार।

4. आलाप, गत, तान, तोड़ा, झाला आदि को स्वरलिपि में लिखने का पूर्ण अभ्यास।

5. इस वर्ष तथा पिछले वर्षों के तालों का पर्ण ज्ञान। उनके ठेकों को दुगुन, तिगुन और चौगुन लयों में ताल लिपि में लिखना। किसी ताल अथवा गत या गीत की दुगुन आदि आरम्भ करने के स्थान को भिन्न-भिन्न स्थानों द्वारा निकालने की रीति।

6. कठिन स्वर-समूहों द्वारा राग पहिचान।

7. भातखण्डे तथा विष्णुदिगम्बर स्वर-लिपि पद्धतियों का पूर्ण-ज्ञान।

8. शारंगदेव तथा स्वामी हरिदास की संक्षिप्त जीवनियाँ तथा उनके संगीत कार्यों का परिचय।

चतुर्थ वर्ष

(सीनियर-डिप्लोमा)

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों की तथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

पिछले वर्षों का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. पिछले कुल वर्षों के पाठ्यक्रमों का विशेष अभ्यास। स्वर-ज्ञान, लय-ज्ञान और राग-ज्ञान में निपुणता।

2. वाद्य मिलाने का पूर्ण अभ्यास।

3. अंकों या स्वरों के सहारे तालो देकर विभिन्न लयों का प्रदर्शन जैसे : दुगुन (1 मात्रा में 2 मात्रा बोलना) तिगुन (1 में 3), चौगुन (1 में 4), आड़ (2 में 3), आड़ का उलटा (3 में 2), पौनगुन (4 में 3) सवागुन (4 में 5)।

4. गिटकिरी, मुर्की, खटका, कण, कृन्तन, जमजमा, लागडाट, घसीट आदि बजाने का अभ्यास। कुछ कठिन मीण्ड जैसे जमजमा की मीड, मुर्की की मीड गिटकरी की मीड, सूत की मीड़ आदि निकालना।

5. सुन्दर आलाप, जोड़ और झाले का विशेष अभ्यास।

6. केदार, पटदीप, जैजयवन्ती, पूरिया, मारवा, कामोद, दरबारी-कान्हड़ा, अड़ाना तथा देशकार रागों का पूर्ण-ज्ञान और प्रत्येक में एक-एक रजाखानी-गत या छोटा-ख्याल सुन्दर आलाप, कठिन तान, तोड़ों और झाला सहित।

7. केदार, तोड़ी मुलतानी, पूरिया और दरबारी-कान्हड़ा रागों का पूर्ण आलाप जोड़ तथा एक-एक मसीतखानी गत या बड़ा-ख्याल कठिन और सुन्दर तान-तोड़ों सहित।

8. टप्पा और ठुमरी के ठेकों का साधारण ज्ञान। जत और आड़ा-चारताल का पूर्ण ज्ञान और इनको विभिन्न लयों में ताल देकर बोलना।

9. बजाकर रागों में समता-विभिन्नता दिखाना।

10. छोटे-छोटे स्वर समूहों द्वारा राग पहिचान।

शास्त्र

1. राग-रागिनी पद्धति, तान के विभिन्न प्रकारों का विस्तृत वर्णन, विवादी-स्वर का प्रयोग, निबद्ध-गान के प्राचीन प्रकार (प्रबन्ध-वस्तु आदि) धातु, अनिबद्ध-गान, अधवदर्शक-स्वर।

2. 22 श्रुतियों का स्वरों में विभाजन (आधुनिक और प्राचीन-मतों का तुलनात्मक अध्ययन), खिंचे हुये तार की लम्बाई का नाद के ऊँचे-नीचेपन से सम्बन्ध।

3. छायालग और संकीर्ण-राग, परमेल-प्रवेशक राग, राग का समयचक्र, कर्नाटकी और हिन्दुस्तानी संगीत-पद्धतियों के स्वरों की तुलना। राग का समय निश्चित करने में वादी-संवादी, पूर्वांग-उत्तरांग और अध्वदर्शक स्वर का महत्व।

4. उत्तर भारतीय सप्तक से 32 थाटों की रचना। आधुनिक घाटों के प्राचीन नाम, अलपत्व, बहुत्व, तिरोभाव तथा आविर्भाव।

5. रागों का तुलनात्मक अध्ययन लिखने तथा राग पहिचान में निपुणता।

6. विभिन्न तालों को दुगुन, तिगुन तथा चौगुन प्रारम्भ करने का स्थान गणित द्वारा निकालने की विधि। विभिन्न लयकारियों को तालिपि में लिखने का अभ्यास जैसे-दुगुन (1 मात्रा में 2 मात्रा), तिगुन (1 में 3), चौगुन (1 में 4), आड़ (2 में 3), आड़ का उलट्य (3 में 2), पौनगुन (4 में 3) तथा सवागुन (4 में 5)।

7. विष्णु-दिगम्बर और भातखण्डे दोनों स्वरलिपियों का तुलनात्मक अध्ययन। दोनों स्वरलिपियों में आलाप, गत, तान, तौड़ा, झाला लिखने का अभ्यास।

8. विभिन्न भारतीय वाद्यों (तत्, वितत्, घन और सुषिर) का विस्तृत वर्णन और उसका इतिहास। वाद्यों को बजाने की विभिन्न बैठक तथा उसके गुण और दोष। वाद्य मिलाने के विभिन्न प्रकार। मसीतखानी और रजाखानी गत बजाने के नियम। विभिन्न तन्त्र वाद्यों (सितार, सरोद, इसराज, बेला, सारंगी, वीणा) की विशेषताएँ।

9. निम्नलिखित शब्दों की परिभाषाएँ-लाग-डाट, पुकार, लड़गुथाव, छूट तार-परन, क्रन्तन।

10. भरत, अहोबल, ब्यंकटमखी तथा मानसिंह तोमर का जीवन परिचय तथा संगीत कार्य।

पंचम वर्ष

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों कीतथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

पिछले सभी वर्षों का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. स्वर तथा लय ज्ञान में निपुणता। गत को सुनकर स्वरलिपि में लिखना और स्वरलिपि में लिखे हुए गत को बजाना।

2. देश काफी और खमाज रागों को सुन्दरता-पूर्वक ठुमरी-अंग से बजाने का अभ्यास।

3. शंकरा, श्री, गौड़सारंग, गौड़मल्हार, छायानट, हिंडोल, बहार, रागेश्री और विभास रागों का पूर्ण-ज्ञान, स्वर-विस्तार और उनमें एक-एक रजाखानी गत या छोटा-ख्याल सुन्दर और कठिन तान, तोड़े और झाला आदि सहित।

4. श्री, गौड़-सारंग, बहार, छायानट और रागेश्री रागों का पूर्ण आलाप और जोड़ तथा एक-एक मसीतखानी गत या बड़ा-ख्याल सुन्दर तान तोड़ों सहित।

5. तीनताल के अतिरिक्त निम्नलिखित किन्हीं भी दो तालों में प्रथम, द्वितीय और तृतीय वर्ष के रागों में से किन्हीं भी दो रागों की विलम्बित या द्रुत गतें बजाने का पूर्ण अभ्यास। :-

झपताल, सूल, तेवरा, रूपक, एकताल, चारताल, झूमरा, आड़ा-चारताल और धमार।

6. गतों की बन्दिश बनाने और बजाने का अभ्यास।

7. तानपूरा और तबला मिलाने का अभ्यास।

8. कुछ कठिन लयकारियों को ताली देकर दिखाना जैसे-3 मात्रा में, 4 मात्रा में, 4 मात्रा में 3 मात्रा, 5 मात्रा में 4 मात्रा और 4 में 5 मात्रा।

9. वाद्य पर पिछले और इस वर्ष के सभी रागों को बजाकर समता और विभिन्नता दिखाने का अभ्यास। रागों में अल्पत्व-बहुत्व, आविर्भाव-तिरोभाव आदि भी दिखाना।

10. पंचम-सवारी, गज-झम्पा, अद्धा, पंजाबी तथा मत तालों का पूर्ण ज्ञान और उनको ताल देकर ठह, दुगुन, तिगुन तथा चौगुन लयकारियों में बोलना। तीनताल, चारताल, एक झपताल, दादरा, कहरवा तालों को तबले पर बजाने का साधारण अभ्यास।

शास्त्र

1. पिछले चतुर्थ वर्ष तक के पाठ्यक्रम का पूर्ण तथा विस्तृत अध्ययन।

2. अनिवद्दगान के प्राचीन प्रकार (रागालाप, रूपकालाप, अलप्तिगान, स्वस्थान नियम) विवादी, राग-लक्षण, जीति-गायन और उनकी विशेषतायें, सन्यास, विन्यास, गायकी, नायकी, गंधर्व, गीत-(देशी, मार्गी)। पाठ्यक्रम के रागों में तिरोभाव-आविर्भाव तथा अल्पत्व-बहुत्व दिखाना।

3. श्रुति-स्वर-विभाजन के सम्बन्ध में सम्पूर्ण इतिहास का तीन मुख्यकालों में विभाजन (प्राचीन, मध्य, आधुनिक), इन तीन कालों के ग्रन्थकारों के ग्रन्थ और उनमें वर्णित मतों में साम्य और भेद, षड़जपंचमभाव और आन्दोलन-संख्या तथा तार की लम्बाई निकालना जबकि षड़ज की दोनों वस्तुएँ दी हुई हों, इसी प्रकार तार की लम्बाई

दी हुई हो तो आन्दोलन-संख्या निकालना, मध्य-कालीन पंडितों और आधुनिक पंडितों के शुद्ध और विकृत-स्वरों के स्थानों की तुलना उनके तार की लम्बाई के सहायता से करना।

4. अन्य गतें, तोड़े और झाली को विष्णु-दिगम्बर और भातखण्डे स्वरलिपियों में लिखने का अधिक अभ्यास।

5. इस वर्ष के रागों का विस्तृत अध्ययन। उनसे मिलते-जुलते रागों में समता तथा विभिन्नता दिखाना। रागों में अल्पत्व-बहुत्व, तिरोभाव-आविर्भाव दिखाना।

6. इस वर्ष के तालों का पूर्ण परिचय तथा उनके ठेकों को विभिन्न लयकारियों में ताल-लिपि में लिखना। गणित द्वारा किसी गत अथवा ताल की दुगुन, तिगुन, चौगुन, आड़ आदि प्रारम्भ करने का स्थान निश्चित करना।

7. वाद्यों का विस्तृत इतिहास।

8. आधुनिक भारतीय-वाद्यों में त्रुटियाँ और उन्नति के सुझाव।

9. आलाप गत, तान, तोड़ा तथा झाला आदि को किसी भी स्वलिपि में लिखने का अभ्यास।

10. निबन्ध के विषय जैसे-राग और रस, लोक-संगीत, संगीत और ललित कलाएँ, संगीत और कल्पना, यवन-संस्कृति का हिन्दुस्तानी-पर प्रभाव, आधुनिक शास्त्रीय-संगीत और उसका भविष्य, संगीत में वाद्यों का स्थान और अभ्यास करने को विधि आदि, तन्त्र-वादन में लयकारी का महत्व।

11. श्रीनिवास रामामात्य, हृदयनारायण देव, मोहम्मद रक्षा, सदारंग, अदारंग का जीवन-परिचय तथा संगीत कार्य।

छठा वर्ष

संगीत प्रभाकर

क्रियात्मक-परीक्षा 200 अंकों कीतथा शास्त्र के दो प्रश्न-पत्र 50-50 अंकों के।

पिछले सभी वर्षों का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. पिछले सभी वर्षों के पाठ्यक्रमों का विशेष विस्तृत अध्ययन होना आवश्यक है।

2. बजाने में विशेष तैयारी। आलाप, जोड़, गत, तान, तोड़ा, झाला आदि बजाने में विशेष सफाई और सुन्दरता। महफिल में बजाने की निपुणता।

3. राग पहिचान में निपुणता।

4. बजा कर रागों में अल्पत्व-बहुत्व तिरोभाव-आविर्भाव तथा समता-विभिन्नता दिखाने का पूर्ण ज्ञान। इसके लिए पिछले वर्षों के रागों का भी अध्ययन आवश्यक है।

5. वाद्यों के मिलाने में निपुणता।

6. संगत करने योग्य वाद्यों पर संगत करने का अभ्यास (बेला, इसराज सारंगी आदि के लिए)।

7. भैरवी, पीलू और तिलंग रागों में सुन्दर ठुमरी-अंग का काम।

8. मियाँमल्हार, रामकली, बसन्त, परज, ललित, पूरिया-धनाश्री, शुद्ध-कल्याण, देशी, मालगुंजी और सिन्दूरा रागों का पूर्ण ज्ञान, इनका आलाप और हर एक में एक-एक रजाखानी गत या छोटा ख्याल (ख्यालअंग बजाने वालों के लिए) पूर्ण-तैयारी के साथ।

9. मियाँमलहार, ललित पूरिया-धनाश्री, शुद्ध-कल्याण, देसी और मालगुंजी रागों का पूर्ण आलाप, जोड़ और एक-एक मसीतखानी-गत या बड़ा-ख्याल सुन्दर तथा विभिन्न लयकारियों के तान-तोड़ा सहित।

10. निम्नलिखित किसी भी दो तालों में चतुर्थ, पंचम और छठे वर्ष के रागों में से किसी दो रागों में विलम्बित या द्रुत गतें बजाने का पूर्ण अभ्यास।

11. तेवरा, रूपक, झपतताल, सूलताल, एकताल, चारताल, झूमरा, आडा-चारताल और धमार।

12. लक्षमी, ब्रह्म तथा रूद्र - इन तीन तालों का पूर्ण ज्ञान तथा इनको ठाह, दुगुन, तिगुन, चौगुन आदि लयकारियों में हाथ से ताली-देकर बोलने का अभ्यास।

शास्त्र

प्रथम प्रश्न पत्र

1. पिछले सभी वर्षों में दिये हुए वाद्य सम्बन्धी विषय और पारिभाषिक शब्दों का पूर्ण तथा विस्तृत अध्ययन।

2. प्रथम से षष्ठ वर्ष तक के सभी रागों का विस्तृत, तुलनात्मक और सूक्ष्म परिचय और उनमें आलाप, तान, झाला आदि स्वरलिपि में लिखने का पूर्ण अभ्यास। समप्रकृति-रागों में समता-विभिन्नता दिखाना।

3. विभिन्न रागों में अल्पत्व, बहुत्व आविर्भाव और तिरोभव आदि दिखाते हुये आलाप, तान और झाला आदि स्वरलिपि में लिखना।

4. कठिन लिखित स्वर-समूहों द्वारा राग पहिचानना।

5. दिये हुए रागों तथा तालों में नये सरगम तथा गतें आदि बाँधना।

6. गतों को स्वर-लिपि में लिखने का पूर्ण अभ्यास।

7. वाद्यों की साधारण मरम्मत करने का ज्ञान।

8. विदेशी वाद्यों का साधारण परिचय।

9. वृन्दावन के लिये दिये हुए रागों और तलों में या अपनी पसन्द के अनुसार सरगम ट्यून (Tune) आदि बाँधना और स्वरलिपि द्वारा लिखना।

10. वाद्यों पर आलाप-जोड़ बजाने का विस्तृत वणन।

11. महफिल (जलसों में) वाद्य बजाने का नियम और उनका विस्तृत वर्णन।

12. अपने वाद्य के विभिन्न घरानों और उसके इतिहास का विस्तृत अध्ययन।

13. अन्य लेख जैसे :- रेडियो और सिनेमा-संगीत, पृष्ठ-संगीत (Back- Ground Music) हिन्दुस्तानी संगीत और वृन्दावन, भारतीय वाद्यों में त्रुटियों और उन्नति के सुझाव, संगीत समारोह (Music Conference) में सुने हुए गुणियों के बाज पर अपने विचार आदि प्रकट करना।

14. पाठ्यक्रम के तालों, ठेकों को विभिन्न लयकारियों का ताल लिपि में लिखना। मणित द्वारा किसी ताल की दून आदि प्रारम्भ करने का स्थान निश्चित करना कठिन तालों को छोड़कर)।

15. वर्तमान काल के प्रसिद्ध तंत्रकारों की जीवनियाँ तथा उनकी वादन-शैलियों का अध्ययन।

द्वितीय प्रश्न पत्र

केवल शास्त्र सम्बन्धी

1. पिछले सभी वर्षों के शास्त्र सम्बन्धी विषयों का सूक्ष्म तथा विस्तृत अध्ययन।

2. मध्यकालीन तथा आधुनिक संगीतज्ञों के स्वर स्थानों की आन्दोलन संख्याओं की सहायता से तथा तार की लम्बाई की सहायता से तुलना, पाश्चात्य स्वर सप्तक की रचना, सरलन गुणान्तर और शुभ स्वर संवाद के नियम, पाश्चात्य स्वरों की आन्दोलन संख्याएँ, हिन्दुस्तानी स्वर में स्वर संवाद, कर्नाटिकी ताल पद्धति और हिन्दुस्तानी तान पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन, संगीत का संक्षिप्त क्रमिक इतिहास, ग्राम, मूर्छना (अर्थ में क्रमिक परिवर्तन) मूर्छना और आधुनिक थाट, कलावन्त, पण्डित, नायक, गायक, वाग्गेयकार, वानी, (खण्डार, डागर आदि), गीति, गीति के प्रकार (वेसरा आदि) गमक के विविध प्रकार, हिन्दुस्तानी वाद्यों के विविध प्रकार (तत् वितत्, अवनद्ध, वन और सुषिर)।

3. निम्नलिखित विषयों का ज्ञान :-

तानपूरे में उत्पन्न होने वाले सहायक नाद, पाश्चात्य सच्चा स्वर सप्तक (Diatonic Scale) का समान स्वरांतर सप्तक (Equally Tempered Scale) में परिवर्तित होने का कारण और विवरण, मेजर, माइनर और सेमीटोन, पाश्चात्य, आधुनिक स्वरों के गुण और दोष, हारमोनियम पर एक आलोचनात्मक दृष्टि, तानपुरे से निकलने वाले स्वरों के साथ हमारे आधुनिक स्वर स्थानों का मिलान, प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक राग वर्गीकरण, उनका महत्व और उनके विभिन्न प्रकारों की पारस्परिक तुलना, संगीत कला और शास्त्र का पारस्परिक सम्बन्ध; भारत की श्रुतियाँ समान थी अथवा असमान इस पर विभिन्न विद्वानों के विचार और तर्क : सारणा चतुष्टयी का अध्ययन;उत्तर भारतीय संगीत को संगीत पारिजात की देन ; हिन्दुस्तानी और कर्नाटक संगीत पद्धतियों की तुलना उनके स्वर ताल और रागों का मिलान करते हुए, पाश्चात्य स्वरलिपि पद्धति का साधारण ज्ञान रागवर्गीकरण भाषा विभाषा इत्यादि।

4. भातखण्डे और विष्णु दिगम्बर स्वर लिपियों का तुलनात्मक अध्ययन, उनमें त्रुटियाँ और उन्नति के सुझाव।

5. अन्य लेख जैसे-भावी-संगीत के समुचित निर्माण के लिए सुझाव। हिन्दुस्तानी-संगीत पद्धति के मुख्य सिद्धान्त। शास्त्रीय-संगीत का जनता पर प्रभाव। हिन्दुस्तानी-संगीत की विशेषतायें। संगीत का मानव जीवन पर प्रभाव। संगीत और चित (Music and Mind) स्कूलों द्वारा संगीत-शिक्षा की त्रुटियाँ और उन्नति के सुझाव। संगीत और स्व:- साधन।

तबला तथा मृदंग (पखावज)

प्रथम वर्ष

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों कीतथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

क्रियात्मक

1. लय-ज्ञान :- प्रत्येक मात्रा पर ताली देते हुए अंकों को बोल कर लय की स्थिरता दिखाना। विलम्बित, मध्य, द्रुत-लय, दुगुन, चौगुन और विभिन्न सरल मात्रा विभागों को ताली देकर दिखाने का अभ्यास।

2. (अ) तबले के विद्यार्थियों के लिये तीनताल, झपताल, एकताल, चारताल और दादरा तालों के ठेकों की ताली देकर ठाह तथा दून में बोलना और उन्हें तबले पर बजाना।

(ब) मृदंग (पखावज) के विद्यार्थियों के लिये चारताल (चौताल, सूलताल (सूलफाक-ताल) तथा तेवरा-ताल के ठेकों को मृदंग पर बजाना तथा उन्हें ताली देकर ठाह तथा दून में बोलना।

3. (अ) तबले के विद्यार्थियों के लिये तीनताल में चार सरल कायदे चार-चार पलटों सहित, ठेके की किस्में, 2 मोहरे, 2 तिहाइयाँ और 2 सरल टुकड़े। झपताल, एकताल और चारताल में दो-दो छोटे टुकड़े। दादरा के ठेके की कुछ किस्में।

(ब) मृदंग (पखावज) के विद्यार्थियों के लिये चारताल, सूलताल तथा तेवराताल में चार-चार सरल और छोटी परने तथा तीनों ताल में 2-2 सरल तिहाइयाँ बजाने का ज्ञान।

शास्त्र

1. तबला अथवा मृदंग (पखावज) के बणों का ज्ञान।

2. उपरोक्त तबला और मृदंग (पखावज) के पाठ्यक्रम में दिये गये तालों और ठेकों का पूर्ण परिचय तथा उन्हें ठाह और दून में मात्रा, विभाग, सम, ताली, ताली-खाली आदि दिखाकर भातखण्डे या विष्णु-दिगम्बर तालिपि पद्धति में लिखना। टुकड़े, परनें तथा मोहरों आदि को भी तालिपित में लिखना।

3. निम्नलिखित शब्दों की परिभाषाएँ और उनका ज्ञान: - ताल, मात्रा, लय (विलम्बित, मध्य तथा द्रुत) विभाग, सम, ताली (भरी) खाली (फाँक), आवर्तन, ठाह, दून, चौगुन, ठेका, बोल, कायदा, पलटा, तिहाई, मोहरा, मुखड़ा, किस्में टुकड़ा।

4. तबला अथवा मृदंग के अंगों का ज्ञान तथा उनका वर्णन।
5. तबला अथवा मृदंग की उत्पत्ति का साधारण-ज्ञान।
6. भातखण्डे अथवा विष्णु-दिगम्बर ताललिपि पद्धति का साधारण ज्ञान।

द्वितीय वर्ष

(जूनियर डिप्लोमा)

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों कीतथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का
पिछले वर्षों का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. लय ज्ञान :- ठाह, दून और चौगुन लयों को हाथ पर ताली देते हुए अंकों और ठेकों द्वारा दिखाना तथा तबला अथवा पखावज पर बजाकर दिखाना।
2. (अ) तबले के विद्यार्थियों के लिए :- तीनताल में अन्य 4 कठिन कायदे चार-चार पलटों सहित, 2 सरल रेले, ठेके की किस्में, 2 सुन्दर मुखड़े, 2 उठान, 2 मोहरे, 2 तिहाइयाँ, 2 कठिन टुकड़े और 2 सरल परनें। झपताल, एकताल और चारताल में कुछ ठेके की किस्में, 2 मुखड़े, 1 उठान, 2 मोहरे, 2 तोहे, 2 सुन्दर टुकड़े। एकताल व झपताल में 2 कायदे दो-दो पलटों सहित। दादरे की अन्य किस्में।

   (ब) मृदंग (पखावज) के विद्यार्थियों के लिए :- चारताल, सूततात तथा तेवरा तालों में दो-दो बड़ी परनें, दो-दो छोटी परनें एक-एक लपेट तथा इन तालों में दो विभिन्न प्रकार की तिहाइयाँ बजाने का अभ्यास।
3. (अ) तबले के विद्यार्थियों के लिए :- रूपक, सूलताल तीवरा, दीपचन्दी, कहरवा और तिलवाड़ा तालों के ठेकों को ताली देकर दून और चौगुन लयों में बोलना और तबले पर बजाना। कहरवा के अतिरिक्त इन सभी तालों में 2 मुखड़े, 2 मोहरे, 2 तीहे और दो सरल टुकड़े। कहरवा के ठेके की कुछ किस्में।

   (ब) मृदंग (पखावज) के विद्यार्थियों के लिए :-झपताल और घमार तालों के ठेकों को हाथ से ताली देकर ठाह, दून तथा चौगुन लयों में बोलना तथा पखावज पर बजाना। इन तालों में दो-दो छोटी परनें एक-एक लपेट तथा दो-दो तिहाइयाँ बजाने का अभ्यास।

शास्त्र

1. प्रथम और द्वितीय वर्ष की तालों को ठाह, दून तथा चौगुन आड़ लयों में तथा उनके टुकड़ों को ताललिपि में लिखना।
2. परिभाषा एवं व्याख्या :- ध्वनि, ध्वनि के प्रकार, ध्वनि की उत्पत्ति, कम्पन, आन्दोलन, नाद, रेला, परनें, उठान, संगत, स्वतंत्र-वादन (सोला)।
3. विष्णु-दिगम्बर तथा भातखण्डे ताललिपि पद्धतियों का साधारण ज्ञान।
4. किसी वर्तमान काल के प्रसिद्ध तबला या मृदंग वादक की जीवनी।
5. संगीत में तबला अथवा मृदंग (पखावज) का महत्व।

तृतीय वर्ष

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों कीतथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।
पिछले वर्षों का पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. लय ज्ञान विशेष :- दून, तिगुन, चौगुन और आड़लयों की ताली देते हुए अंक बोल कर दिखाना।
2. तबला अथवा मृदंग मिलाने का ज्ञान। गीतों के साथ संगत करने का प्रारम्भिक अभ्यास।
3. ताललिपि में लिखे बोलों और टुकड़ों आदि को देखकर बोलना और बजाना।
4. हाथ की सफाई और तैयारी पर विशेष ध्यान। तीनताल में अन्य सुन्दर मुखड़े, मोहरे, तीहे, कायदे-पलटे, रेले, टुकड़े, परनें, ठेके की किस्में और सरल गतें। झपताल, एकताल और चारताल में भी नये सुन्दर मुखड़े, मोहरे, तीहे, ठेके की किस्में कायदे-पलटे (चारताल के अतिरिक्त), 2-2 रेले और 2-2 बड़ी परनें। दादरा और कहरवा की कुछ अच्छी किस्में और 2-2 तीहे। सूलताल और तीवरा में अन्य सुन्दर 2-2 मुखड़े, 2-2 मोहरे, 2-2 तीहे, 2-2 टुकड़े और 2-2 परनें।
5. नयेताल :- आड़ा-चारताल, धमार, धुमाली, झूमरा, जत तालों को ठाह, दून और चौगुन में ताली देकर बोलना तथा ठाह लय में सुन्दरता-पूर्वक तबले अथवा मृदंग पर साफ-साफ बजाना। पिछले वर्षों की तालों को ठाह, दुगुन तथा चौगुन लयों में ताली देकर बोलना। आड़ा-चौताल, घुमाली, झुमरा तथा जत में 2-2 कायदे, 2-2 टुकड़े, 1-1 परन, 2-2 तिहाई तबला पर बजाने का अभ्यास। धमार, तीवरा और सूल तालों में साथ संगत, 2-2 तिहाइयाँ, 2-2 परनें तथा लपेट, पखावज (मृदंग) पर बजाने का अभ्यास।

शास्त्र

1. सभी तालों के ठेकों को ठाह, दुगुन, तिगुन तथा चौगुन लयकारियों को ताल-लिपि में लिखना और उनके परन, टुकड़ों आदि को भी ताललिपि में लिखने का ज्ञान।
2. परिभाषाएँ और विषय :- संगीत, गत, आड़, बाट, मृदंग (पखावज) के अंगों का ज्ञान (आटे का उद्देश्य), तबले और मृदंग (पखावज) को तुलना, उनका विस्तृत इतिहास तथा उनको मिलाने की विधि। तबले के विभिन्न बाज। जातियों का अध्ययन तथा तिस्त्र, चतस्त्र, मिश्र, खण्ड तथा संकीर्ण जातियों की परिभाषाएँ। श्रुति, स्वर, स्वर के प्रकार (चल, अचल, शुद्ध विकृत), सप्तक, सप्तक- प्रकार (मन्द्र, मध्य, तार) आरोह तथा अवरोह।

3. मृदंग (पखावज) के विद्यार्थियों को तबले के अंगों तथा वणों का ज्ञान और तबले के विद्यार्थियों को मृदंग (पखावज) के अंगों तथा वणों का ज्ञान।

4. तबला एवं मृदंग (पखावज) वादकों के शास्त्रों में वर्णित गुण व दोष का अध्ययन।

5. संगीत से सम्बन्धित विषयों पर निबन्ध जैसे :- मानव जीवन में संगीत। संगीत में तबला अथवा पखावज (मृदंग) का स्थान। संगीत सीखने स लाभ। भारतीय-संगीत में ताल-वाद्यों का स्थान। अबद्ध वाद्यों में तबला अथवा मृदंग (पखावज) का स्थान आदि।

6. अहमदजान थिरकवा तथा कन्ठे महाराज का संक्षिप्त जीवन परिचय।

चतुर्थ वर्ष

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों कीतथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

पिछले सभी वर्षों का पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. लय ज्ञान :- ताली द्वारा विभिन्न लय दिखाना जैसे- 1 मात्रा में 2 मात्रा, 2 में 1, 1 में 3, 1 में 4, 2 में 6 (आड़ा) 3 में 2, 3 में 4, 4 में 3 (पौनगुन), कुछ अन्य कठिन मात्रा विभागों का अभ्यास जैसे आड़ (डेढ़ गुना, कुआड़ (सवागुन) तथा बिआन (पौने दो गुन)।

2. ताल-लिपि देखकर बोल, टुकड़े, परन आदि तबले अथवा मृदंग (पखावज) पर निकालना।

3. तबला अथवा मृदंग (पखावज) मिलाने और गीतों, गतों तथा लहरे के साथ सरल तालों में संगत करने का अभ्यास।

4. पिछले तालों में विशेष सफाई और तैयारी तथा कुछ आगे का काम, उदाहरणार्थ- तीनताल, झपताल, एकताल और चारतालों में कुछ सुन्दर किस्में, मुखड़े, उठान, तीहे, मोहरे, कायदे-पलटे, रेले, टुकड़े, परनें और गतें तथा कुछ विभिन्न मात्राओं की तिहाइयाँ और चक्करदार टुकड़े। तीन ताल, झपताल और एकताल से पेशकारे का काम। चारताल में कुछ स्वतन्त्र रेल और बड़ी परनें। दादरा तथा कहरवा में लग्गियाँ लड़ियाँ और ताबेयतदारी। सूल और तीवड़ा में कुछ अच्छे मुखड़े और टुकड़े। रूपक धमार और आड़ा-चारताल में कुछ किस्में, मोहरे, तीहे और 2 मुखरे। नृत्य के बालों का ज्ञान।

5. नए ताल :- पंचम सवारी (15 मात्रा), टप्पा, अद्धा, पंजाबी, गज-झंपा, मत्त-ताल के ठेकों को केवल ठाह में बजाने का और ताली सहित बोलने का अभ्यास।

6. तबले के विद्यार्थियों की तीनताल, झपताल, एकताल, आड़ा-चारताल तथा रूपक में स्वतन्त्र वादन (सोलो) का अभ्यास तथा मृदंग (पखावज के विद्यार्थियों को चारताल, सूलताल, तेवरा तथा धमार के स्वतन्त्र वादन का विशेष अभ्यास।

शास्त्र

1. पिछले और इस वर्ष के तालों को विभिन्न लयकारियों जैसे-दुगुन, तिगुन, चौगुन, आढ़ और कुआड़ आदि सहित ताल-लिपि में लिखने का ज्ञान। विभिन्न प्रकार के कायदे, टुकड़े, परने आदि को भातखण्डे तथा विष्णु-दिगम्बर दोनों तालालिपियों में लिखने का पूरा ज्ञान होना चाहिये।

2. विष्णु दिगम्बर तथा भातखण्डे ताल-लिपि पद्धतियों का सूक्ष्म तथा तुलनात्मक अध्ययन तथा उनके गुण व दोष।

3. पिछले वर्षा के सभी पारिभाषित शब्दों का विस्तृत-अध्ययन तथा उनका क्रियात्मक महत्व। पेशकारा, साथ-संगत, लग्गी, लड़ी, फरमाइशी चक्करदार टुकड़ा तथा परन, गत-कायदा, तिपल्ली, चौपल्ली, चलन (चाला)।

4. गणित द्वारा विभिन्न-तालों की दुगुन, तिगुन, चौगुन, आड़ तथा कुआड़ आदि प्रारम्भ करने के स्थान को निकालना तथा उनको ताल-लिपि में लिखना।

5. समान मात्रा वाले तालों का तुलनात्मक अध्ययन।

6. संगीत से सम्बन्धित विषयों पर निबन्ध जैसे-संगीत में ताल का महत्व, संगत का महत्व, संगीत में लय तथा ताल का स्थान, तबला संगीत का उद्देश्य तथा विधि, लय और लयकारी, साथ और संगत आदि।

7. ताल के दस प्राण तथा उनका भारतीय-संगीत में महत्व।

8. मोदूखाँ, बख्शू खाँ, नत्थू खाँ, आबिद हुसेन, रामसहाय का जीवन परिचय तथा तबला-वादन क्षेत्र में उनका स्थान तथा कार्य।

9. पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान :- वर्ण (स्वर के विषय में), थाट प्रचलित 10 थाटों के नाम तथा उनके स्वर, राग, राग-जाति ओड़व, षाडव संपूर्ण।

पंचम वर्ष

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों कीतथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

पिछले सभी वर्षों का पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. लय ज्ञान में विशेष निपुणता अति विलम्बित, मध्य और अति द्रुत लयों में तबले पर विभिन्न तालों को गीतों, गतों और लहरों के साथ बजाने का समुचित अभ्यास। कुछ कठिन लयकारियों का ज्ञान तथा उन्हें ताली देकर बोलना जैसे-4 मात्रा में 5 मात्रा (सवागुन), 5 में 4 मात्रा (पौनगुन) आड़, कुआड़, बिआड़। तबला मिलाने में निपुणता।

2. तबला अथवा पखावज पर पिछले वर्षों के तालों में विशेष और उनमें सुन्दरता के साथ स्वतन्त्र वादन (सोलों) की क्षमता।

3. नए ताल :- शिखर, ब्रह्मरूद्र, लक्ष्मी तालों के ठेकों को ताली देकर बोलना और तबले अथवा मृदंग (पखावज) पर बजाना। गजझंपा मत्त तालां में सरल टुकड़े, परन आदि बजाना।

4. तबले के विद्यार्थियों को मृदंग (पखावज) पर तथा मृदंग (पखावज) के विद्यार्थियों को तबले पर हाथ के रख-रखाव का ज्ञान।

5. प्रचलित गायन तथा तन्त्रवादन-शैलियों के साथ संगत करने का ज्ञान।

शास्त्र

1. पाठ्यक्रम के सभी तालों के ठेकों को सभी लयकारियों के ताल लिपि में लिखना टुकड़े, परने आदि को भी ताल-लिपि में लिखने का पूर्ण-ज्ञान।
2. विभिन्न मात्राओं के नए टुकड़े आदि बनाने तथा गणित द्वारा विभिन्न लयकारियों के प्रारम्भिक स्थान निकालने का ज्ञान।
3. परिभाषा और व्याख्या :- कुआड़, बिआड़, फरमाइशी बन्दिशं (रचनायें), लोभ-विलोम, सवागुन, पौनगुन आदि। दक्षिणी (कर्नाटकी) ताल और ताल-पद्धति का अध्ययन। विभिन्न भारतीय अवनद्ध-वाद्य और उनका संक्षिप्त परिचय। तबला और मृदंग (पखावज) का तुलनात्मक अध्ययन और उनका इतिहास।
4. तान, आलाप, जोड़, झाला, ध्रुपद, धमार, ख्याल, टप्पा, ठुमरी तन्त्र-वादन की गत तथा उसके प्रकारों (मसीतखानी, रजाखानी) की व्याख्या।
5. समपदी तथा विषम-पदी (Tals of Even and oddmatras) तालों का तुलनात्मक अध्ययन।
6. प्रचलित ताल-लिपियों का तुलनात्मक अध्ययन।
7. समान मात्रा वाले तालों का तुलनात्मक अध्ययन।
8. लय, ताल, अवनद्ध-वाद्य तथा अन्य संगीत-सम्बन्धित सामान्य विषयों पर निबन्ध लिखने की क्षमता।

षष्टम वर्ष

(संगीत-प्रभाकर)

क्रियात्मक-परीक्षा 200 अंकों कीतथा शास्त्र के दो प्रश्न-पत्र 50-50 अंकों के।

पिछले सभी वर्षों का पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. तबला और पखावज मिलाना। तबला के विद्यार्थी को पखावज बजाने का थोड़ा ज्ञान तथा मृदंग (पखावज) के विद्यार्थी को तबला बजाने का थोड़ा ज्ञान। दोनां के बाज (वादन-शैली) में विभिन्नता का ज्ञान। सब प्रकार के गीतों तथा गतों (तन्त्र-वादन) के साथ तबला पर संगत करने और लहरे पर तबला सोलो बजाने का ज्ञान। नाच के कुछ अच्छे बोलों को सीख कर नाच के साथ भी तबला बजाने का साधारण ज्ञान। पखावज वालों के लिए ध्रुपद, धमार इत्यादि तथा वीणा के साथ संगत करने का ज्ञान। नाच के साथ भी संगत करने का साधारण ज्ञान।
2. पिछले पाठ्यक्रमों के सभी तालों का विस्तृत अध्ययन। नये, कठिन और सुन्दर बोल परन आदि सीखना। विभिन्न ताज और घरानों की कुछ खास चीजें सीखकर उनमें भेद दिखाना।
3. कैद-फरोदस्त, कुम्भ, बसन्त तथा सवारी (16 मात्रा) तालों की ताली देना और तबले पर बजाना। चतुर्थ, पंचम औठ छठे वर्षों के तालों मे कुछ सुन्दर मोहरे और ठेकों के प्रकार सीखना।
4. विभिन्न तालों को ताली देकर विभिन्न लयकारियों में बोलने का पूर्ण अभ्यास। टुकड़ों आदि को भी ताली सहित बोलना।
5. स्वतन्त्र वादन (सोलो) की विशेष तैयारी।
6. तबले के विद्यार्थियों को पखावज की तालों में भी स्वतन्त्र-वादन (सोलों) का साधारण ज्ञान। स्वतन्त्र-वादन के लिए निम्नलिखित तालों की विशेष तैयारी :- तीनताल, झपताल, एकताल, आड़ा-चारताल, धमार, पंजम-सवारी, चारताल, सूलताल, गजझंपा, तेवरा, रूपक और लक्ष्मी ताल।

शास्त्र

1. पूरबी तथा पच्छिमी बाज क विभिन्न घरानों की वादन-शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन। कोदऊ सिंह, खब्बे हुसेन, नाना पानसे एवं पर्वत सिंह की वादन शैलियों का सूक्ष्म अध्ययन। पखावज और तबले के बोलों में अन्तर। सोलो और साथ के बाज में अन्तर और दोनों की विधियों का विस्तृत वर्णन। संगत करन की कला। अवनद्ध वाद्यों में उन्नति के सुझाव। प्रसिद्ध तबला वादक और उनकी विशेषताएँ। स्वर और लय का सम्बन्ध। पाश्चात्य संगीत में ताल का स्थान और साधन। तालिपि के लिये सर्वश्रेष्ठ पद्धति। पाश्चात्य बीट (Beat) तथा रिदम (Rhythm) का अध्ययन। तपाश्चात्य ल-पद्धति का साधारण-ज्ञान।
2. प्रथम वर्ष से षष्टम-वर्ष तक के सब पारिभाषिक शब्दों तथा विषयों का विस्तृत एवं तुलनात्मक अध्ययन।
3. प्रथम वर्ष से षष्टम वर्ष तक के अप्रचलित तालों का अध्ययन तथा इन्हें प्रचलित करने का सुझाव।
4. छंद तथा पिंगल-शास्त्रों का ज्ञान।
5. परिभाषा-स्वर विस्तार, बोल बाँट, बहलावा, चतुरंग, तराना तथा तिरवट।
6. प्रसिद्ध तबला अथवा मृदंग-वादकों का परिचय तथा उनकी वादन-शैलियों का आलोचनात्मक अध्ययन।
7. ताल, लय तथा संगीत-सम्बन्धित सामान्य विषयों पर निबन्ध लिखने की क्षमता।

द्वितीय प्रश्न-पत्र

क्रियात्मक-सम्बन्धी

1. पिछले वर्षों के सभी तालों तथा उनमें सीखी सामग्री को भारतखण्डे तथा विष्णुदिगम्बर तालिपियों में लिखने का पूर्ण ज्ञान।
2. पाठ्यक्रम के सभी तालों का तुलनात्मक अध्ययन।
3. तालों को विभिन्न लयकारियों में लिखने का पूर्ण ज्ञान।
4. दक्षिणी तथा उत्तरी भारतीय ताल-पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन।
5. पाश्चात्य स्टाफ-लिपि का ज्ञान।

6. नृत्य के कुछ बोलों तथा तोड़ों का ज्ञान।
7. विभिन्न प्रकार की संगीत के साथ उचित अवनद्ध वाद्यों पर संगत का ज्ञान।

कत्थक नृत्य

प्रथम वर्ष

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों कीतथा शास्त्र का एक लिखित प्रश्न-पत्र 50 अंकों का होगा।

क्रियात्मक

1. तीनताल में 4 सरल ततकार हस्तकों सहित (ठाह, दून और चौगुन की लयों में), एक थाट, एक सलामी, एक आमद, 5 साधारण तोड़े तथा 2 तिहाइयाँ।
2. दादरा और कहरवा तालों में 2 आधुनिक छोटे नृत्य।
3. तीनताल, झपताल, दादरा तथा कहरवा तालों के ठेकों को हाथ से ताली देकर ठाह और दुगुन में बोलने का अभ्यास।
4. ततकार तथा तोड़ों को हाथ से ताली देकर ठाह तथा दून में बोलना।

शास्त्र

1. निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान। :-

नृत्य, कत्थक-नृत्य, ततकार, थाट, सलामी, आमद, तोड़ा, ताल, लय, लय के प्रकार (विलम्बित, मध्य और द्रुत) मात्रा, आवर्तन, विभाग, ठेका, सम, ताली (भरी) खाली (फाँक) ठाह, दून तथा चौगुन, तिहाई तथा हस्तक।

2. संगीत तथा भारत की दो मुख्य संगीत-पद्धतियों की व्याख्या।
3. ततकार, तालों के ठेकों तथा तोड़ों को भातखण्डे अथवा विष्णु-दिगम्बर ताल-पद्धति में लिखने का ज्ञान।
4. तीनताल, झपताल, दादरा तथा कहरवा तालों का पूर्ण परिचय।

द्वितीय वर्ष

(जूनियर-डिप्लोमा)

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों कीतथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

प्रथम वर्ष का पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. तीनताल में अन्य 4 कठिन ततकार हस्तकों सहित, 2 थाट 1 सलामी, 1 आमद, 5 कठिन तोड़े, 1 चक्करदार तोड़ा, 2 सरल गत भाव तथा 2 अच्छी तिहाइयाँ।
2. झपताल में 2 ततकार, 1 थाट, 1 सलामी, 1 आमद, 5 सरल तोड़े तथा 2 तिहाइयाँ।
3. दादरा तथा कहरवा तालों में लोक नृत्य।
4. एकताल तथा सूलताल के ठेकों को ठाह, दून तथा चौगुन में हाथ पर ताली देकर बोलना।
5. ततकार तथा तोड़ों को हाथ से ताली देकर ठाह, दून और चौगुन में बोलना।

शास्त्र

1. निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान :-

नृत्य, नाट-नृत्य, तांडव, लास्य, अंग, प्रत्यंग, पढ़न्त, गतभाव, मुद्रा तथा चक्करदार तोड़ा।

2. ध्वनि तथा नाद के विषय में साधारण-ज्ञान।
3. उत्तरी भारतीय-संगीत में प्रचलित भातखण्डे अथवा विष्णु-दिगम्बर ताल-लिपि पद्धतियों का साधारण-ज्ञान।
4. ततकार, तालों के ठेकों तथा तोड़ों को भातखण्डे अथवा विष्णु-दिगम्बर ताल-पद्धति में लिखने का ज्ञान।
5. एकताल तथा सूलताल का पूर्ण परिचय।
6. कत्थक-नृत्य का संक्षिप्त इतिहास।
7. महाराज बिन्दादीन तथा कालिका प्रसाद का संक्षिप्त जीवन परिचय।

तृतीय वर्ष

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों कातथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

इसमें पिछले सभी वर्षों का पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. तीनताल में 2 कठिन ततकार हस्तकों-सहित, पिठले पाठ्यक्रम में दिये हुए थाटों के अतिरिक्त 2 नये थाट, 1 आमद, 1 सलामी 5 कठिन तोड़े, एक परन तथा एक चक्करदार परन। ततकार को पैर से ठाह, दून, तिगुन तथा चौगुन लयों में निकालना तथा हाथ में ताली देकर बोलने का अभ्यास।

2. झपताल में 2 नए ततकार :- पलटों और हस्तकों-सहित, 1 चक्करदार तोड़ा, 2 कठिन तोड़े तथा 2 तिहाइयाँ।
3. एकताल में 2 थाट, 1 सलामी, 1 आमद, 4 ततकार हस्तक सहित, 4 तोड़े तथा 2 तिहाइयाँ
4. सूलताल में 2 ततकार तथा 2 तोड़े।
5. तीलातल में 2 घूंघट का गत-भाव।
6. तेवरा, चारताल, सूल ताल तथा धमार तालों को ठाह, दून तथा चौगुन लयों में हाथ से ताली देकर बोलना तथा पैर से इन ठेकों के ततकार को इन्हीं तीन लयों में निकालना।
7. दो विशेष लोक-नृत्य

शास्त्र

1. **निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान :-**

   (अ) परन, चक्करदार-परन, मुष्टि, पताका, त्रिपताका, मुकुटकरण, रेचक, अंगहार, उपांग तथा पलटा।

   (ब) ध्वनि की उत्पत्ति, कंपन, आन्दोलन, नाद की विशेषताएँ, नाद-स्थान, स्वर, चल, और अचल-स्वर, शुद्ध तथा विकृत स्वर, सप्तक (मंद्र, मध्य और तार)।
2. लखनऊ और जयपुर घरानों का संक्षिप्त इतिहास।
3. अच्छन महाराज तथा जयलाल जी का संक्षिप्त जीवन परिचय।
4. भातखण्डे तथा विष्णुदिगम्बर ताल-लिपि पद्धतियों का ज्ञान।
5. तेवरा, चारताल (चौताल), आड़ा-चारताल तथा धमार-तालों का पूर्ण परिचय।
6. भारतीय संगीत में नृत्य का स्थान।
7. तबला तथा पखावज का पूर्ण परिचय।

चतुर्थ वर्ष

(सीनियर-डिप्लोमा)

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों कीतथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

पिछले सभी वर्ष का पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. तीनताल, एकताल तथा झपताल में नाच की पूरी तैयारी। इन तालों में कम से कम 15 मिनट तक बिना बोलों को दोहराये नृत्य-प्रदर्शन करने को क्षमता। तीनताल में एक तालांगी, एक नृत्यांगी, एक कवितांगी तथा एक मिश्रांगी तोड़ों का अभ्यास। तीनताल में तोड़ों द्वारा अतीत तथा अनागत दिखाना।
2. तीनताल में घूंघट के प्रकार तथा बंसी और पनघट के गतभाव।
3. धमार-ताल में 4 तत्कार हस्तक सहित, 2 थाट, 1 सलामी, 1 आमद, 5 तोड़े, 2 तिहाइयाँ, 2 परनें तथा एक चक्करदार-परन।
4. विभिन्न लयकारियों का ज्ञान। तीनताल में तत्कार द्वारा पंचगुन तथा आड़लयों को पैर से तथा हाथ से ताली देकर दिखाना।
5. तेवरा, चारताल तथा आड़ा-चारताल में 2-2 तत्कार तथा 2-2 तिहाइयाँ।
6. कोई दो लोकनृत्य।
7. पिछले वर्षों से सभी ताल तथा रूपक, दीपचन्दी, धुमाली, पंचम-सवारी, आड़ा-चारताल तालों को हाथ से ताली देकर ठाह, दुगुन, तिगुन तथा चौगुन लयों में बोलना तथा पैर से निकालना।
8. यमन, बिलावल तथा भैरवी रागों में एक-एक स्वर-तालिका गाने का अभ्यास।
9. तबला-वादन का प्रारम्भिक अभ्यास।

शास्त्र

निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का पूर्ण ज्ञान :-

मुद्रा, निकास, स्थानक, अदा, घुमरिया, अंचित, कुंचित, रस, भाव, अनुभाव, भंगि-भेद, तैयारी, अभिनय, पिन्डी, प्रमलू, स्तुति, विक्षिप्त, हस्तक, कसक, मसक, कटाक्ष, नाज, अन्दाज।

2. भातखण्डे तथा विष्णु-दिगम्बर ताल-लिपि पद्धतियों का पूर्ण ज्ञान तथा दोनों की तुलना।
3. भारत के शास्त्रीय नृत्य-कत्थक, कथाकलि, मणिपुरी, भरत नाट्यम का परिचयात्मक अध्ययन और इनकी तुलना।
4. निम्नलिखित विषयों का पूर्ण ज्ञान :-

   संयुक्त और असंयुक्त मुद्रायें, नृत्य में भाव का महत्व, प्रचलित गतभावों क कथानकों का अध्ययन, नृत्य से लाभ, आधुनिक नृत्यों की विशेषताएँ।
5. पिछले तथा इस वर्ष के समस्त तालों के ठेके तत्कार तथा बोलादि को विष्णु-दिगम्बर तथा भातखण्डे ताल-लिपियों में विभिन्न लयों में लिखने की क्षमता। ताल के दस प्राणों का ज्ञान।
6. व्याख्या :- वर्ण, आरोह, अवरोह, अलंकार, थाट, राग, सुरावर्त (स्वरमालिका), लयकारी, लय तथा लयकारी का भेद।
7. यमन, बिलावल तथा भैरवी रागों का पूर्ण परिचय और इनमें सरल कीत गाने की क्षमता।
8. रूपक, आड़ा-चारताल, दीपचन्दी, धुमाली तथा पंचम-सवारी तालों का पूर्ण परिचय।

9. वर्तमान समय के किन्हीं दो प्रसिद्ध कथम नृत्यकारों का परिचय तथा उनकी नृत्य-शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन।

10. संगीत तथा नृत्य सम्बन्धी विषयों पर लेख लिखने का अभ्यास।

पंचम वर्ष

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों कीतथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

पिछले सभी वर्ष का पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. 10 करणों का क्रियात्मक रूप से प्रस्तुत करने की क्षमता।

2. तौनताल में 25 मिनट तक बिना बोलों को दोहराये तथा धमार में 15 मिनट तक नृत्य करने की क्षमता। भजन तथा ठुमरी-गायन पर भाव प्रदर्शित करते हुए नृत्य करने का अभ्यास।

3. नये कथानकों जैसे माखन-चोरी, कालिया दमन, चीर हरण, गोवर्धन धारणा तथा कथक शैली में तांडव और लास्य अंग के नृत्यों का अभ्यास।

4. कोई भी दो प्रादेशिक लोक-नृत्य जैसे गरवा, रास कोली, छपेली, भांगड़ा आदि का नृत्य करने की क्षमता।

5. अब तक के पाठ्यक्रम में निर्धारित तालों में लहरा (नगमा) बजाने का अभ्यास।

6. रूपक, धुमाली, चारताल (चौताल), दीपचन्दी तथा पंचम-सवारी तालों में दो-दो थाट, एक-एक आमद, चार-चार तोड़े, एक-एक चक्करदार तोडा तथा चक्करदार परन, दो-दो साधारण परनें तीन-तीन तिहाइयाँ तथा तत्कार और उनक पलटे।

7. लक्ष्मी ताल, ब्रह्मताल, जत, अद्धा तथा झूमरा तालों का हाथ से ताली देकर ठाह, दुगुन, तिगुन, चौगुन तथा आड़लयों में बोलना तथा पैर से निकालना।

8. पाठ्यक्रम में अब तक निर्धारित सभी तालों के ठेकों को तबले पर बजाने का अभ्यास।

9. खमाज, काफी तिलंग तथा बिहाग रागों में स्वरमालिका गाने की क्षमता।

शास्त्र

1. निम्नलिखित शब्दों की परिभाषा तथा व्याख्या :-

उरप, पुरप, तिरप, कसक, मसक, कटाक्ष, घूंघट, उरमई, सुरमई, लाग-डांट, जाति-परन, पक्षी-परन, बील-परन, गत-निकास, कत-तोड़ा, गत-भाव, ग्रीवा-भेद, दम-बेदम तथा गति-भेद।

2. निम्नलिखित विषयों का अध्ययन :-

परम्परागत वेश-भूषा, सफल नृत्य-प्रदर्शन की आवश्यकताएँ; घूघरूओं का चुनाव; नृत्यकार के गुण-अवगुण; नौ रसों की पूर्ण व्याख्या एवं नृत्य मं उनका उपयोग; वेष-सज्जा (Make-up), दृष्टि-भेद; नृत्य में दिशाओं का ज्ञान।

3. नृत्य के लखनऊ, जयपुर और बनारस घरानों का तुलनात्मक तथा विस्तृत अध्ययन।

4. नायक-नायिका भेद का ज्ञान।

5. महाराज ठाकुर प्रसाद, महाराज ईश्वरी प्रसाद, शंकर नम्बूदीपाद तथा रूकमणि अरुन्डेल की जीवनियों का अध्ययन।

6. लक्ष्मोताल, ब्रह्मताल, जत, अद्धा तथा झूमरा तालों का पूर्ण परिचय एवं उन्हें विभिन्न लयकारियों में ताल-लिपि में लिखने की क्षमता।

7. खमाज, काफी तिलंग तथा बिहाग रागों का पूर्ण परिचय।

8. ध्रुपद, धमार, ख्याल, टप्पा, ठुमरी तथा भजन गायन शैलियों का पूर्ण परिचय।

9. भारत की अलप ज्ञात शास्त्रीय-नृत्य-शैलियाँ जैसे ओड़िसी, कुच्चिपुड़ी आदि का परिचयात्मक ज्ञान।

छठा वर्ष

(संगीत प्रभाकर)

क्रियात्मक-परीक्षा 200 अंकों कीतथा शास्त्र के दो प्रश्न-पत्र 50-50 अंकों के।

पिछले सभी वर्षों का पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. अब तक के सभी तालों में नृत्य-प्रदर्शन में विशेष क्षमता। अंगचारी मंडल तथा हस्त मुद्राओं में विशेष सौष्ठव।

2. अर्जुनताल, गणेशताल, सरस्वतीताल, रूद्रताल, और सवारीताल (दोनों प्रकार 15 तथा 16 मात्राओं की) में से किन्हीं 3 तालों में नृत्य करने की क्षमता।

3. नेत्र, भू, कंठ, कटि, चरण तथा हस्त आदि अंगों के समुचित संचालन की क्षमता।

4. दिये गये कथानकों में कत्थक-शैली में नृत्य करने की क्षमता। जयपुर और लखनऊ घरानों के नृत्यों का प्रदर्शन करके अन्तर बताना।

5. कुछ तबला तथा पखावज के बोल, तोड़ा, टुकड़ा, परन आदि बजाने का अभ्यास।

6. पीलू झिंझोटी, गारा, बसंत तथा बहार रागों में एक-एक स्वर-मालिका अथवा छोटा-ख्याल गाने का अभ्यास। होरी, चैती, कजरी, गजल, तराना, भजन इन गायन-शैलियों में से किन्हीं दो में गाकर भाव (हेला) दिखाने का अभ्यास।

7. मारीच-बध, मदन-रहन, द्रैपदी चीरहरण, भिलनो-भक्ति, पनघट की छेड़छाड़, लक्ष्मन-शक्ति, त्रिपुरासुर-वध, वामन अवतार, अहिल्या उद्धार सती अनसुइया छालीपा-दमन, इन कथानकों में से किन्हीं पाँच पर गत भाव दिखाने का अभ्यास।

शास्त्र

प्रथम प्रश्न पत्र

1. कत्थक-नृत्य का विस्तृत इतिहास, विभिन्न कालों में इसकी रूप रेखा तथा इसका अंगीकरण, प्रत्येक काल के नृत्याचार्यों तथा उनकी नृत्यकला का पूर्ण परिचय।
2. रंगमंच की रचना का उद्देश्य तथा इतिहास, रंगमंच पर प्रकाश व्यवस्था एवं इसकी आवश्यकता।
3. नृत्य में वेश-भूषा की आवश्यकता, वेश-भूषा और रूप-सज्जा में परस्पर सम्बन्ध और इस सम्बन्ध में आलोचनात्मक विचार।
4. लोक-नृत्य की विशेषताएँ एवं इसके विभिन्न रूप, कत्थक एवं लोक-नृत्य में परस्पर साम्य और भेद, लोक-नृत्य की आवश्यकता और इसके आवश्यक अवयव।
5. भरत-नाटयम, मणिपुरी, ओड़ीसी, कुच्चिपुड़ी एवं कथाकलि-नृत्यों का परिचय तथा कत्थक-नृत्य और इन सभी नृत्यों में परस्पर साम्य ओर भेद।
6. कुतप अथवा वृन्दवादन (Orchestra) की व्याख्या तथा इसकी रचना के सिद्धान्त, कत्थक नृत्य में कुतप (Orchestra) की आवश्यकता तथा इसका महत्व।
7. नृत्य और अभिनय में परस्पर साम्य और भेद, तथा इन दोनों की पृथक-पृथक विशेषताएँ और महत्व।
8. पाश्चात्य-नृत्य का पूर्ण परिचय, इसमें प्रयोग किए जाने वाले विभिन्न करणों और रेचकों के अवलोकन, पाश्चात्य नृत्य और कथक नृत्य में परस्पर साम्य और भेद, बैले-नृत्य की रचना के नियम, कत्थक शैली के बैले की श्रेष्ठता पर अपने विचार।
9. आधुनिक नृत्य का पूर्ण परिचय, इसकी वेश-भूषा और कुतप (Orchestra) समाज में आधुनिक नृत्य का स्थान, आधुनिक नृत्य की विशेषतायें और वर्तमान काल में इसकी आवश्यकताएँ।
10. नृत्य सम्बन्धित विषयों पर निबन्ध जैसे (अ) नृत्य और जीवन (ब) नृत्य और साहित्य (स) नृत्य और राष्ट्र (द) शिक्षा में नृत्य का स्थान (च) नृत्य और व्यायाम तथा कत्थक नृत्य का भविष्य।

द्वितीय प्रश्न पत्र

1. कत्थक नृत्य के घरानों का विस्तृत अध्ययन, प्रत्येक घराने के दिवंगत और वर्तमान नृत्याचार्यों का परिचय, उनकी शैलियों और उन शैलियों की विशेषताएँ।
2. निम्नांकित शब्दों को सोदाहरण व्याख्या :-

अग्रताल, आलीढ़, उठान, आँचित, कुचिंत, कुचिंत-भ्रमरी, पाद-विन्यास सम्पुट, मीलित, दृष्टि, प्रकम्पित ग्रीवा, परवाहित शिर, एकापाद, भ्रमरी, नृत्य के सप्त पदार्थ, व्यूहक्रिया, अष्टगती, अनुलोभ, विलोभ (प्रतिलोभ) क्रिया तथा हेला।

3. नायक और नायिका के भेदों का विस्तृत अध्ययन।
4. शिर, नेत्र, भृकुटि, होठ आदि शारीरिक अंगों के संचालन के सिद्धान्त, इन संचालनों से उत्पन्न होने वाले भाव, कत्थक-नृत्य में इनकी उपयोगिताएँ।
5. लिपि की परिभाषा - प्रथम-वर्ष से लेकर षष्टम वर्ष तक के पाठ्यक्रम में निर्धारित समस्त तालों के ठेकों और बोलो को विभिन्न लयकारियों में लिपि बद्ध करके लिखना, नृत्य के लिए एक स्वतन्त्र और उपयुक्त लिपि के निर्माण पर विचार और सुझाव।
6. कत्थक-नृत्य के प्रत्येक घराने के बोलों का विस्तृत ज्ञान, उनमें परस्पर साम्य और भेद, प्रत्येक घराने के बोलों को पृथक-पृथक लिपि बद्ध करके लिखना, प्रत्येक घराने के बोलों की पृथक-पृथक विशेषताएँ। विभिन्न प्रकार की लयकारियों का ज्ञान।
7. प्रथम वर्ष से लेकर षष्ठम-वष्र तक के पाठ्यक्रम में निर्धारित समस्त तालों में लहरा (नगमा) लिपि-बद्ध करके लिखना।
8. कर्नाटक ताल-पद्धति का पूर्ण परिचय, हिन्दुस्तानी ताल-पद्धति और कर्नाटक ताल-पद्धति की परस्पर तुलना, उत्तरी-तालों को कर्नाटकी ताल लिपि में बद्ध करके लिखना।
9. गत और परन के विभिन्न प्रकारों का विस्तृत अध्ययन। इन सभी प्रकारों में परस्पर साम्य और भेद, इन सभी प्रकारों का कम से कम एक-एक उदाहरण और उन सबों की लिपि-बद्ध करके लिखना।
10. नृत्य सम्बन्धी निबन्ध जैसे - (अ) लोकनृत्य (ब) नृत्य का लय और ताल से सम्बन्ध (स) नृत्य का आध्यात्मिक महत्व (द) नृत्य के द्वारा चरित्र का उत्थान (च) नृत्य में गणित का स्थान आदि।
11. तबला, पखावज और नृत्य के बोल, परन तोड़ा आदि का भेद और ज्ञान। साधारण चक्करदार (दमदार-और बेदम) कमाली चक्करदार, फर्माइशी चक्करदार, नृत्यांगी, तालांगी, कवितांगी, संगीतांगी और मिश्रांगी तोड़ाओं का भेद और ज्ञान।
12. पीलू, झिंजोटी, गारा, बसंत, बहार-रागों का पूर्ण परिचय।
13. होरी, चैती, कजरी, गजल, तराना, ठुमरी, भजन आदि गायन शैलियों का पूर्ण परिचय तथा तुलनात्मक अध्ययन।

भरत-नाटयम्

प्रथम वर्ष

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों कीतथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

क्रियात्मक

1. घुंघरू बाँधकर अभ्यास करना अनिवार्य है।
2. निम्नलिखित 15 अडवु तथा उनके पर-संचालन प्रकारों (Steps) को ठाह, दुगुन तथा चौगुन लयों में हस्त तथा पद-संचालन द्वारा व्यक्त करना :-

(1) तत् (Tatta)- 5 प्रकार के अडवु पद संचालन (Steps)।

(2) नत् (Natta)- 6 प्रकार के अडवु पद संचालन (Steps)।

(3) ता तेई तेई ता (Ta Tai Tai Ta)- 3 प्रकार के अडवु पद संचालन (Steps)।
(4) कुदित्तू मेत्तू (Kudittu Mettu)- 4 प्रकार के अडवु पद संचालन (Steps)।
(5) तैया तैई (Taiya Taiyi)- 3 प्रकार के अडवु पद संचालन (Steps)।
(6) तत् तेई ता हा (Tat Tai Ta Ha)- 4 प्रकार के अडवु पद संचालन (Steps)।
(7) तत् तेई तम(Tat Tai Tam)-3 प्रकार के अडवु पद संचालन (Steps)।
(8) तधिगंतम (Tadhingnatom)- 3 प्रकार के अडवु पद संचालन (Steps)।
(9) कितत् कटारी कितातम (Kitata Katari Kiatom)- 4 प्रकार के अडवु पद संचालन (Steps)।
(10) तेई-तेई-दत्ता (Tai-Tai-Datta)- 2 प्रकार के अडवु पद संचालन (Steps)।
(11) धितेईदतातेई(Dhitaindntatai)- 3 प्रकार के अडवु पद संचालन (Steps)।
(12) मंडी (Mandi)- 3 प्रकार के अडवु पद संचालन (Steps)।
(13) सारिक्कल (Sarikkal)- 2 प्रकार के अडवु पद संचालन (Steps)।
(14) तकिटा (Takita)- 2 प्रकार के अडवु पद संचालन (Steps)।
(15) तेई तेई तेई तेई तेई तेई तेई धिधि तेई (Tai Tai Tai Tai Tai Tai Dhidhi tai)- का अडवु पद संचालन (Steps)।

3. तिस्त्रम्, रूपकम् चतुस्त्रम् अथवा आदि ताल को हाथ से ताली देकर बताना।
4. थत्तु-अडवु (Thattu-adavu) नट्-अडवु (Nattu-adavu) तथा मित्तू-अडवू (Mettu-adavu) का पूर्ण-ज्ञान।

शास्त्र

1. भरतनाटयम् के तालों में से तिस्त्रम, रूपकम्, चतुस्त्रम् आदि ताल चम्पू या मिश्र-ताल का ज्ञान (3, 6, 8 और 7 मात्राओं (अक्षरों) के, अट्टा-ताल 14 मात्राओं (अक्षरों) का तथा जम्पू ताल 10 मात्राओं (अक्षरों) का त्रिपुट-ताल के चतस्त्र-जाति का विशेष ज्ञान जैसे आदि-ताल 8 मात्रा और रूपक चतस्त्र जाति 6 मात्रा।
2. ताल को पाँच जातियों (तिस्त्र, चतस्त्र, खण्ड, मिस्त्र तथा संकीर्ण) तथा तीन लय (लघु, द्रुत और अणुद्रुत) का ज्ञान।
3. अडवु की परिभाषा। उपर्युक्त 15 प्रकार के अडवु तथा हर अडवु के पद-संचालन (Steps) के प्रकारों का पूर्ण ज्ञान।
4. भरत-नाट्यशास्त्र की 28 हस्त-मुद्राओं में से निम्नलिखित 10 असंयुक्त-मुद्राओं का अर्थ सहित ज्ञान।
   पताका, त्रिपताका, अल्पदम, कटकामुख, सूची, अर्धचन्द्र, शुकतुण्ड, मुष्टि, शिखर तथा मृगशीर्ष।

द्वितीय वर्ष

(जूनियर डिप्लोमा)

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों कीतथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।
इस पाठ्यक्रम में प्रथम वर्ष का पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. अलारिपु-तीन-लयों (ठाह, दुगुन और चौगुन) में करके बताना।
2. याति-स्वरम् के विभिन्न यतियों (जातियों) का अभ्यास।
3. प्रथम वर्ष क अडवु मुद्रा सहित करके बताना।
4. हाथ और सिर का साधारण संचालन तीन-लयों में।

शास्त्र

1. अलारिपु तथा यतिस्वरम् का अर्थ सहित पूर्ण ज्ञान।
2. सप्त-तालों का साधारण परिचय।
3. भरत-नाट्यशास्त्र के निम्न 10 संयुक्त मुद्राओं के श्लोक तथा उनका अर्थ सहित पूर्ण ज्ञान :-
   अंजली, कपोत, पुशपुट, शिबलिंग, करकट, कटका-वर्धन, संख, स्वस्तिका, शकट और चक्र।
4. रुकमणि देवी अरूण्डेल तथा बाला सरस्वती की जीवनी तथा भरतनाट्यम में उनका योगदान।
5. भरतनाट्यम् का संक्षिप्त इतिहास।
6. ध्वनि, ध्वनि की उत्पत्ति, कंपन, आन्दोलन, आन्दोलन-संख्या तथा वाद की संक्षिप्त व्याख्या।

तृतीय वर्ष

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों कीतथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।
इस पाठ्यक्रम में पिछले वर्षों का पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. अलारिपु, यतिस्वरम् तथा शब्दम् को बसन्त, भैरवी तथा कल्याणी किसी एक राम में आदि-ताल 8 मात्रा में करने का अभ्यास।

2. कर्नाटक ताल-पद्धति के चतुस्त्र-ताल, आदि-ताल, रूपकम्-ताल, त्रिस्त्रम-ताल को हस्त द्वारा दक्षिण-भारतीय (कर्नाटक) पद्धति में ताली लगाकर बताने का अभ्यास।

3. निम्नलिखित सिर-संचालन का श्लोक सहित ज्ञान :-
सम-शिर, उद्धाहित-शिर, अधमुखशिर, आलोलित-शिर,
घूत-शिर, कंपित-शिर, परावृत्त-शिर, पारिवाहित-शिर।

4. निम्नलिखित दृष्टि-भेद का श्लोक सहित ज्ञान :-
आलोकित-दृष्टि, सांची-दृष्टि, प्रलोकित-दृष्टि, मीलित-दृष्टि, अल्लोकित दृष्टि, अनुवृत्त-दृष्टि, अवलोकित-दृष्टि।

5. निम्नलिखित ग्रीवा-भेद का श्लोक सहित ज्ञान :-
सुन्दरी-ग्रीवा, तिरस्चित-ग्रीवा, परिवर्तिता-ग्रीवा, प्रकंपित-ग्रीवा।

शास्त्र

1. प्रथम तथा द्वितीय वर्षों के पाठ्यक्रमों का विशेष अध्ययन।
2. शब्दम्-शब्द का अर्थ सहित पूर्ण ज्ञान।
3. नव-रसों का पूर्ण ज्ञान।
4. भरतनाटय-शास्त्र की 24 असंयुक्त मुद्राओं का श्लोक सहित अर्थ का ज्ञान।
5. अभिनय-दर्पण की 28 असंयुक्त मुद्राओं का श्लोक सहित ज्ञान।
6. आंगिक, वाचिक तथा अहर्य-अभिनय के भेद।
7. द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रम के 10 संयुक्त मुद्राओं का किन-किन अर्थों में प्रयोग होता है, उसका ज्ञान।
8. मिनाक्षी सुन्दरम् पिल्ले, चोकलिंगम पिल्ले तथा पुन्नैया पिल्ले की जीवनी तथा भरतनाटयम में उनका योगदान।
9. नाद की तीन विशेषताएँ, नाद-स्थान, श्रुति, स्वर के प्रकार सप्तक, सप्तक के प्रकार (मन्द्र, मध्य और तार) आदि के विषय में साधारण ज्ञान।

चतुर्थ वर्ष

(सीनियर डिप्लोमा)

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों कीतथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

पिछले सभी वर्षों का पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. प्रथम से तृतीय वर्षों के पाठ्यक्रम के अनुसार अलारिपु, यतिश्वरम्, शब्दम्, वरणम्, पद-वरणम्, चौक-वरणम्, तन-वरणम् आदि का क्रियात्मक ज्ञान।
2. एक शब्दम् का त्रिपुट-ताल (7 मात्रा) में कम्भोजी या राग-मालिका में दो-एक पदम् अथवा श्लोकम् के साथ अभ्यास।

शास्त्र

1. वरणम्, पद-वरणम्, चौक-वरणम्, तन-वरणम् का पूर्ण ज्ञान।
2. नवग्रह-हस्त का श्लोक सहित लिखना जैसे :- सूर्य-हस्त, चन्द्र-हस्त, कुंज-हस्त, बुद्ध-हस्त, गुरू-हस्त, शुक्र-हस्त, शनि-हस्त, राहु-हस्त, केतु-हस्त तथा देव-हस्त।
3. मंडल के भेदों का श्लोक सहित पूर्ण ज्ञान जैसे :- स्थानक-मंडलम् आयात-मंडलम्, आलिड़-मंडलम, प्रत्यालिड़-मंडलम्, प्रेषण-मंडलम, प्ररित-मंडलम, पार्श्व-मंडलम्, स्वास्तिक-मंडलम्, मोटित-मंडलम्, समशुचि-मंडलम् आदि।
4. स्थान भेद का श्लोक-सहित पूर्ण ज्ञान जैसे :- समपाद-स्थानम्, एकपाद-स्थानम्, नागबन्ध-स्थानम्, ओन्द्रक-स्थानम्, गरुड़-स्थानम्, ब्रह्म-स्थानम् आदि।
5. उतप्लावन-भेद का श्लोक सहित पूर्ण ज्ञान जैसे :- अलोगत-प्लावनम्, उतप्लावन-कर्तरी, अश्व-प्लावनम्, मोटित-प्लावनम्, कृपाल-गोत-प्लावनम्।
6. भ्रमरी लक्ष्णम् का श्लोक सहित पूर्ण ज्ञान जैसे :- उतप्लूत-भ्रमरी चक्र-भ्रमरी, गरुड़-भ्रमरी, एकपाद-भ्रमरी, कंचित-भ्रमरी, आकाश-भ्रमरी, अंग-भ्रमरी आदि।
7. चारी भेद का श्लोक सहित पूर्ण ज्ञान जैसे :- चलनचारी, चक्रमण-चारी, शरणमचारी, वेगिनीचारी, कुट्टनमचारी, लठितम्चारी, लोलितम्चारी विषम-संचारक चारो, आदि।
8. गति भेद का श्लोक सहित पूर्ण ज्ञान जैसे :- हंस-गति, मयूरी-गति मृगी-गति, गज-गति, तुरंगिनी-गति, सिंहनी-गति गतिभुजंगनी-गति, मंडुकी-गति वीरा-गति, मानवी-गति आदि।
9. निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दां का पूर्ण ज्ञान :-
नृत्य, नाटय, ताण्डव, लास्य, आरोह, अवरोह, वर्ण, अलंकार, थाट, राग।
10. कर्नाटक ताल पद्धति का पूर्ण ज्ञान।
11. चिन्नैया, पुन्नैया, शिवान्द तथा बड़ीमेलु की संक्षिप्त जीवनी तथा भरतनाटयम् में उनका योगदान।

पंचम वर्ष

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों कीतथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

पिछले सभी वर्षों का पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. पद्म को करके दिखाने की क्षमता जैसे :-

कलाई थूकी (Kalai Thoooki), मंची दिनामू (Manchi Dinamu), मथुरा नगारिलो (Mathura Nagarilo), तमारक्षा(Tamaraksha), रारसीता(Rarasita), कृष्ण की बेगामे(Krishna ki vegame), एन-पल्ली-कोंदिर (En-Palli-Kondir)

2. राग आनन्दभैरवी, यदुकुल खम्भोजी, हिंडोल-बसंत, यमन, मोहन में पदम् करने की क्षमता अथवा अपने गुरु द्वारा बताये गये राग पर पदम् करने की क्षमता।
3. चतुस्त्र जातित्रिपुटताल, तिस्त्र जाति-त्रिपुटताल, तिस्त्र जाति एक ताल, मिश्र जाति-एकताल में पद्म करने की क्षमता अथवा अपने गुरु द्वारा बताय गये ताल में पद्म करने की क्षमता।
4. तिल्लाना-आदिदताल अथवा रूपक करने की क्षमता
5. जयदेव की अष्टपदी पर नृत्य करने की क्षमता।
6. ताण्डव और लास्य का एक-एक पदम्।

शास्त्र

1. पिछले सभी वर्षों के पाठ्यक्रम का विस्तृत अध्ययन।
2. दक्षिण-भारतीय लोक-नृत्य का पूर्ण ज्ञान।
3. भरतनाटयम का पूर्ण इतिहास।
4. भरतनाटयम के गुरुओं के पृथक-पृथक मतों का पूर्ण ज्ञान और उनका योगदान।
5. कुछ कर्नाटकी तथा उत्तर-भारतीय रागों का ज्ञान।
6. उत्तर-भारतीय ताल-पद्धति का साधारण ज्ञान।
7. भरतनाटयम, कथकली, मणिपुरी, उड़िसी तथा कत्थक-नृत्य-शैलियों का विस्तृत तुलनात्मक अध्ययन।
8. भरतनाटयम की रूप-सज्जा, वेशभूषा तथा रंगमंच-सच्चा (Stage-setting) का पूर्ण ज्ञान।
9. भरतनाटयम में प्रयोग होने वाले वाद्यों का पूर्ण परिचय।
10. संगीत (नृत्य) सम्बन्धी सामान्य विषयों पर लेख लिखने की क्षमता।
11. पाश्चात्य देशों के नृत्य का साधारण ज्ञान।

षष्टम वर्ष

(संगीत प्रभाकर)

क्रियात्मक-परीक्षा 200 अंकों की तथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 100 अंकों का।

पिछले सभी वर्षों का पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. अलारिपु, यतिस्वरम् शब्दम्, वर्णम् परवर्णम् चौकबर्णम्, तनवर्णम् तिल्लाना, श्लोकम्, नटनम्-आडिनार तथा जयदेव की अष्टपदी करने की पूर्ण अभ्यास।
2. पाठ्यक्रम के सभी तालों को हाथ से ताली देकर बोलने का अभ्यास।
3. कोई भी चार दक्षिण-भारतीय-लोकनृत्य तथा कोई भी चार उत्तर भारतीय-लोकनृत्य करने की क्षमता।

शास्त्र

1. पिछले सभी वर्षों के पाठ्यक्रम का विस्तृत अध्ययन।
2. तिल्लाना तथा नटनम्-अड़िनार का पूर्ण वर्णन सहित ज्ञान।
3. भरतनाटयम् में जयदेव के श्लोकम् का पूर्ण ज्ञान।
4. नवरसों तथा नायक, नायिकाओं के भेदों का पूर्ण ज्ञान।
5. भरतनाटयम् शास्त्र तथा अभिनय-दर्पण की सारी मुद्राओं के श्लोकों का अर्थ सहित ज्ञान।
6. दक्षिण-भारतीय तथा उत्तर-भारतीय लोक-नृत्यों तथा सामूहिक नृत्यों का ज्ञान।
7. दक्षिण-भारतीय तथा उत्तर-भारतीय रागों में भेद तथा उनका तुलनात्मक अध्ययन।
8. दक्षिण-भारतीय तथा उत्तर-भारतीय ताल पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन।
9. सम्पूर्ण अडवु का विस्तार सहित पूर्ण ज्ञान।
10. श्रृंगार रस का अवस्था भेद-भाव का लक्षण जैसे :-

चिंता, संकल्प, गुणकीर्तनम्, क्रियादेशः, तपः, लज्जात्यागः, उन्मादः, मुर्छा-इनका पूर्ण विवरण सहित ज्ञान।

11. नृत्यकला की उत्पत्ति शास्त्रीय-श्लोकम् के आधार पर।
12. भरतनाटयम का कृमिक विकास तथा भरतनाटय-शास्त्र और अभिनव-दर्पण का परिचय तथा आलोचना।

13. भरतनाटयम में प्रयुक्त सभी तालों का उनकी पाँचों जातियों सहित पूर्ण ज्ञान।

14. करण, रंचक और अंगहार का पूर्ण ज्ञान।

15. विष्णुदिगम्बर तथा भातखण्डे ताल-लिपि पद्धतियों का ज्ञान।

16. संगीत (नृत्य) सम्बन्धी सामान्य विषयों पर निबन्ध लिखने की क्षमता जैसे :- भरतनाटयम की उपयोगिता, भरतनाटयम का लोकप्रिय होने का कारण भरतनाटयम और आधुनिक-युग नृत्यकारों के गुण तथा दोष, प्रचलित भारतीय शास्त्रीय-नृत्यों में पारस्परिक भेद, नृत्य में कुतप अथवा वृन्दवादन (Orchestra) की उपयोगिता, नृत्य में वेषभूषा और रूपसज्जा की आवश्यकता भारतीय संगीत में नृत्य का स्थान आदि।

मणिपुरी-नृत्य

प्रथम वर्ष

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों की तथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

क्रियात्मक

1. **प्राथमिक अंग-संचालन-उदाहरण**-चंप्रा हेकपि, चंप्रा अकपि, ओंग्लई, उप्लाई इत्यादि।
2. नृत्त बंन्ध - पुं. लोल जगोई-मूलताल तथा उसके तोड़े पर नृत्त चाली-(तीनताल मेल-मात्रा 8 ताली 3)
   लास्य- (चाली औरबी तक)
   तांडव- (मूल चाली-तीसरे बोल तक)
   तान्वप्- (चतुश्र जाति एक ताल-मात्रा 4 ताली 1)
   लास्य (2 अलंकार)
   तांडव (2 अलंकार)
   मेन्कूप- (तिस्त्र जाति एकताल-मात्रा 3 ताली 1)
   तांडव (2 अलंकार)
   मेन्कूप-लास्य-(ऋतु जाति एकताल मात्रा 6 ताली 1)
   (मूल ठेका पर दो अंग चलन)
3. नृत्त प्रबन्ध (प्रबन्धगीत पर नृत) कोई भी दो उदाहरण झन्ता जन.....कच्छ पिकारी.....
4. सप्तस्वर साधन।

शास्त्र

1. ऊपर सीखे हुये नृत के ताल, बोल गीत को ताल-लिपि में लिखने का अभ्यास।
2. मणिपुरी शैली की विशिष्टता।
3. ताण्डव और लास्य का भेद।
4. हस्तक (मुद्रा) लायहरवा में सृष्टि वाली उत्पत्ति में किये जाने वाली मुद्राओं का ज्ञान।
5. नृत्य और नृत्य का भेद।

द्वितीय वर्ष

(जूनियर-डिप्लोमा)

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों की तथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

इस वर्ष के पाठ्यक्रम में प्रथम वर्ष का भी पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. भंगावली
   (1) गोष्ठी भंगी परेग (ताण्डव) प्रथम थाट
   (2) अचौबा भंगी परेग (लास्य) राजमेल ताल एक
2. नृत्त बन्ध (पु. लोल जगोई)

(1) चाली-ताण्डव (2 अलंकार) लास्य (5 छोटा अलंकार)
   (2) तान्वेय-ताण्डव (2 अलंकार) (कहरवा) लास्य (2 अलंकार)
   (3) मेन्कूप-ताण्डव (2 अलंकार) (दादरा) लास्य
   (मूल ढंका पर 4 अंग संचालन)

3. नृत्त-प्रबन्ध-
   (1) राधा अभिसार

(2) कृष्ण अभिसार

(3) कृष्ण नर्तन (गोष्ठका)

(4) ललिता नर्तन (माकोक चिग्वी)

4. उत्सव नर्तन-लायहरवा (गोईबी जगोई)

शास्त्र

1. उपरोक्त सीखे हुए नृत्त के ताल, बोल, गीत को ताल-लिपि में लिखने का अभ्यास।
2. पारिभाषिक शब्द शिक्षा तथा चाली, भंगी परेंग, पुंग्लाल जगोई, शैकोलबि (गकोन्नबि-साथ संगत) की व्याख्या।
3. मणिपुरी-नृत्य में विभिन्न नर्तन प्रकार।
4. असंयुक्त हस्त।
5. राधा, कृष्ण, चन्द्रावली, नोग्पोक् निग्थो, पान्थौवी खंभा थोईबी पर संक्षिप्त विचार।

तृतीय वर्ष

(सीनियर-डिप्लोमा)

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों कीतथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

इस वर्ष की परीक्षा में पिछले वर्षों का पाठ्य-क्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. भंगावली-गोष्टभंगी परेग (ताण्डव) सम्पूर्ण, अचौबा भंगी परेग (लास्य) सम्पूर्ण।
2. नृत्य-बन्ध- (1)-(चाली ताण्डव 2 अलंकार), (लास्य 2 अलंकार)
   (2)-तान्वेयू (ताण्डव 2 अलंकार), (लास्य 2 अलंकार)
   (3)-मेन्कूप (ऋतु जाति-लास्य में सम्पूर्ण)
   (4)-सुरफक् (मात्रा 10 ताली 3) में 3 अलंकार।
   (5)-चौताल (तान्जाउ) (मात्रा 12 ताली 4) में 3 अलंकार।
3. नृत-प्रबन्ध- (1)-राधा-नर्तन
   (2)-बलराम-नर्तन (गोष्ठ
   (3)-कृष्ण बलराम-नर्तन (गोष्ठ)
5. उत्सव नर्तन-खुबाई शैई (करताली) या मंदिला (मज्जीरा) नर्तन।
6. संयुक्त हस्त क्रियात्मक-ज्ञान।
7. नृत्त में प्रयुक्त गीतों का ज्ञान और सप्तस्वरों (शुद्ध, विकृत) का ज्ञान तथा अभ्यास।

शास्त्र

1. ताल, बोल, गीत, स्वर-लिपि और ताल-लिपि का ज्ञान (लिखना, समझना) कुछ अलंकार पल्टे का अभ्यास।
2. चार रासलीला तथा गोष्ठ उलुखल रास का समय कहना तथा क्रम।
3. मणिपुरी के उत्सव-नर्तन (लायहरावबा, रथयात्रा, इत्यादि) के विषय में ज्ञान।
4. संयुक्त हस्त का ज्ञान।
5. ध्वनि, ध्वनि की उत्पत्ति, कंपन, आन्दोलन, आन्दोलन-संख्या तथा नाद की साधारण व्याख्या।

चतुर्थ वर्ष

(सीनियर-डिप्लोमा)

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों की तथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

इस वर्ष की परीक्षा में पिछले वर्षों का पाठ्य-क्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. **भंगावली :**
   (1) वृन्दावन भंगी परेंग (लास्य) तीनताल अचौबा तक।
   (2) गोष्ठ वृन्दावन परेंग (तांडव) प्रथम थाट।
2. **नृत्त बन्ध :**
   (1) चाली-लास्य-4-अलंकार, ताण्डव-5 अलंकार।
   (2) तेवड़ा- (मात्रा 7 ताली 3) व तिन्ताल मचा लास्य अथवा ताण्डव (3 अलंकार)।

(3) मेनकूप-तिस्त्र जाति एक ताल-मात्रा 3, ताल-1, लास्य-4 अलंकार।

3. नृत प्रबन्ध :

(1) गोप-नर्तन।

(2) जुगल नर्तन।

(3) कृष्ण नर्तन (रास का)।

4. नृत्य प्रबन्ध :

(प्रबन्ध गीत पर अभिनय)

(1) चतुरंग।

(2) कृष्णरूप वर्णन।

5. नृत्य में उपर्युक्त बोलों का ताल-लिपि में लिखने का ज्ञान।
6. नत्त, नृत्य में उपर्युक्त बोलों का ताल-लिपि में लिखने का ज्ञान।
7. उत्तर भारतीय दस थाटों को गाने का अभ्यास और कुछ अलंकार का अभ्यास।

शास्त्र

1. ताल, बोल, गीत।
2. मणिपुर में विभिन्न ताल तथा उसकी प्रथा।
3. मणिपुर-नृत्य का इतिहास।
4. हस्त का विनियोग।
5. शास्त्र में नर्तन के विभाग, चार अभिनय तथा पारिभाषिक तुलनात्मक अध्ययन।
6. नव रसों का ज्ञान।
7. मणिपुरी वेष-भूषा और वाद्य-यन्त्रों का नाम तथा वर्णन।
8. मणिपुर का नटमण्डप, सजावट, सभा रचना।
9. उत्तर-भारतीय दस-थाटों तथा तालों का परिचय।
10. नाद की तीन विशेषतायें, नाद-स्थान, श्रुति, स्वर, स्वर के प्रकार सप्तक, सप्तक के प्रकार (मन्द्र, मध्य और तार) आदि के विषय में साधारण ज्ञान।

पंचम वर्ष

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों कीतथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

इस वर्ष की परीक्षा में पिछले वर्षों का पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1.	भंगावल	1. वृन्दावन भंगी परेंग (लास्य) सम्पूर्ण।
		2. गोष्ठ वृन्दावन परेंग (ताण्डव) सम्पूर्ण।
2.	नृत्त बन्ध	1. ताल रूपक (मात्रा 6 ताली 2) 3 अलंकार।
		2. ताल चारताल (मात्रा 14 ताली 4) लास्य-2 अलंकार।
3.	नृत्त प्रबन्ध	1. तेलेना (उदाहरण तानुम्)
		2. चन्द्रावली नर्तन।
4.	नृत्त बन्ध	1. राधारूप वर्णन।
		2. जुगलारूप वर्णन।

5. मृदंग राग (प्रस्तावना)- विशिष्ट प्रकार के छंद पर बोलरचना-
उदाहरण-रागमचा, धपराग, वृन्दावन अहापी। संचार (राग के बाद आनेवाली विशिष्ट प्रकार की बोल रचना) उदाहरण-राधाकृष्ण संचार।
6. उत्तर भारतीय संगीत का राग भुपाली, खमाज, ईमन, आसावरी, तथा भैरवी, का सुरावर्त्त गाने का अभ्यास।
7. स्वर-लिपि पद्धति और तालिपि पद्धति का पूर्ण अभ्यास।
8. उपरोक्त प्रयुक्त गीत, ताल, बोलों का अभ्यास।

शास्त्र

1. नटपाला और उसका क्रम।
2. मणिपुरी-नृत्य, उसका धर्म और समाज के साथ संबंध।
3. राधा तथा कृष्ण की भिन्न कहानी।
4. श्रृंगार रस: 1 संभोग-विप्रम्भ। 2 अष्ट नायिका भेद।
5. मणिपुर के विख्यात गुरुओं का परिचय।

6. नागा-नृत्य, थावलचोरवा का परिचय।
7. मणिपुरी-नृत्यों का इतिहास।
8. उपरोक्त क्रियात्मक सभी विषयों की परिभाषा और ज्ञान।

षष्ठ वर्ष

(संगीत-प्रभाकर)

क्रियात्मक-परीक्षा 200 अंकों की तथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 100 अंकों का।

इस वर्ष की परीक्षा में पिछले वर्षों का पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. भंगीवली-खुरूम्बा परेंग (लास्य) सम्पूर्ण।
2. नृत्य बन्ध
   1. नायिका-भेद।
   2. मुकसारिका दून्दू
   3. षडंग-नर्तन
   4. कन्दूक क्रीड़ा। (फिवुल हावी) अथवा फागु खेल।
3. नृत्य प्रबन्ध, मोदिनी जाती
4. वेष्णव पदावली के गीत पर नृत्य रचना- (जय जनरंजन व जय जगत वन्दीनी इत्यादि)
5. दस-थाटों में से (हिन्दुस्तानी संगीत) किसी पांच रागों में जैसे भरेव, काफी बिलावल, ईमन, भैरवी का छोटा-ख्याल, कुछ तानों सहित गाने का अभ्यास।
6. उपरोक्त नृत्यों में गाये जाने वाले गीतों का अभ्यास और तालों को पढ़ने का अभ्यास।

शास्त्र

1. श्रृंगार रस-संभोग-विप्रलभ के भेद। नायक-नायिका के भेद।
2. भारत की विभिन्न शास्त्री नृत्य-शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन।
3. मणिपुरी नृत्य में गौडिय वैष्णवशास्त्र और साहित्य का महत्व।
4. उपरोक्त प्रयुक्त सभी परिभाषाओं का विस्तृत अध्ययन।
5. भारतीय-नृत्य का इतिहास।
6. तालों के दस प्राणों का वृहद अध्ययन।
7. उपरोक्त प्रयुक्त रागों के लक्ष्य का अध्ययन।

उड़ीसा-नृत्य

प्रथम वर्ष

क्रियात्मक परीक्षा 100 अंकों का तथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

क्रियात्मक

1. पांच बन्ध, दस कर्ण और गणपतिबन्दना।
2. एकताली, खेमटा और त्रिपुट तालों में पद-संचालन।
3. उपर्युक्त तालों में कुछ खण्डी और मना का अभ्यास।
4. भूमि प्रणाम और मंगलाचरण।
5. साधारण (छोटा) बटु-नृत्य।
6. गुरू प्रणाम और कटि चालना।

शास्त्र

1. ताण्डव और लास्य-नृत्यों की उत्पत्ति।
2. नाच सीखने से लाभ।
3. नमस्कृया का अर्थ सहित ज्ञान (अभिनय-दर्पण)।
4. 6 प्रकार के शिर भेद, 8 प्रकार के दृष्टि-भेद और 4 प्रकार के ग्रीवा-भेदों का ज्ञान।
5. ताल ज्ञान-एकताली, खेमटा और त्रिपुट।
6. अंग-भेद, पात्र-लक्षण और भाव रस का अर्थ सहित ज्ञान।
7. उड़ीसा-नृत्य के विभिन्न विभाग।

द्वितीय वर्ष

(जूनियर-डिप्लोमा)

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों की तथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

इस वर्ष की परीक्षा में प्रथम वर्ष का पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. पदचालन (तत्कार) एकताली, खेमटा तथा त्रिपुट तालों में तथा कुछ खण्डी, अरसा और मना।
2. प्रारम्भिक मुद्रायें (कर्ण) तथा चाली (मयूर, मुर्ग और भ्रमर), प्रारम्भिक पद-संस्थान (धन, कुम्भ, महा और एकपद) तथा नृत्य में इनका उपयाग।
3. बटु-नृत्य एकताल और खेमटा में।
4. गीताभिनय :- गोपाल कृष्ण तथा बनमाली के एक-एक पद।
5. एक छोटा मोक्ष्य नट।
6. मुख, नेत्र द्वारा विभिन्न भावों का अभिव्यक्त।
7. छकामान, असंयुक्त-संयुक्त हस्त के संजोग में विभिन्न अर्थ ज्ञान।

शास्त्र

1. नटन, नृत्य और नाट्य की तुलनात्मक व्याख्या।
2. अभिनय, अंगिका, वाचिका, आहार्य और सात्विक शब्दों की व्याख्या।
3. मुद्रा-असंयुक्त-हस्त 28, संयुक्त हस्त 24 शिर-विनियोग, दृष्टि-विनियोग, ग्रीवा-विनियोग तथा दस असंयुक्त-हस्त का अर्थ सहित ज्ञान।
4. परिभाषायें :- भूमि-प्रणाम, कर्ण, चौका, त्रिभंग, स्थाई, उक्त गडी (गद्दी) बरसा, मना, अंगिका, ताल, लय मात्रा, बटु और मंगला चरण।
5. उक्तुों का छन्द बोलना तथा हाथ की ताली द्वारा मात्राओं के प्रदर्शन का ज्ञान।
6. उड़ीसा के विभिन्न पलि-नृत्य का परिचय।
7. लिंगराज व ब्रह्मश्वर मंदिर के गान में विभिन्न नृत्यमूर्तियों का भंगी के विषय में ज्ञान।
8. नृत्य में प्रयोग होने वाले वाद्य-यन्त्रों का परिचय व मंडल-स्थान के भेद।

तृतीय वर्ष

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों की तथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

इस वर्ष की परीक्षा में पिछले वर्षों का पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. प्रथम तथा द्वितीय वर्ष के तालों में खंडी अरसा।
2. बटुनृत्य : उड़ीसा के देवालय भंगिमा (Poses) पर आधारित।
3. पल्लवी : बसन्त और कल्याण में।
4. गीतभिनय : कवि सूर्य, वेणुधर और जयदेव के एक-एक पद
5. उड़ीसा का एक लोक-नृत्य।

शास्त्र

मंत्र-पूजा और पुष्पांजली।

2. असंयुक्त और संयुक्त हस्त-विनियोग का पूर्ण ज्ञान।
3. परिभाषायें : अवलय-अंगिका, चारी, भ्रमरी-उत्पलावन, पल्लवी, मोक्ष्य, वटु मंगलाचरण, महारी और गोतीपुवा।
4. उड़ीसा के प्राचीन संगीतज्ञ, निर्देशकों-जयदेवव, उपेन्द्र, वनमाली, वेणुधर और गोपाल कृष्ण की जीवनी।
5. उड़ीसा-नृत्य की संक्षिप्त ऐतिहासिक और पौराणिक पृष्ठभूमि।
6. ताल : ध्रुव, मंठ, रूपक, झप, त्रिपुट, अट्टताल और एकताल। सप्त तालों (शास्त्रीय) का अंग और जाति तथा ताल-लिपि का ज्ञान।
7. भाव और रस के विभाव व अंगहार, ताल का प्राण।
8. ध्वनि, ध्वनि की उत्पत्ति, कंपन, आन्दोलन, आन्दोलन-संख्या तथा नाद के विषय में साधारण ज्ञान।

चतुर्थ वर्ष

(सीनियर-डिप्लोमा)

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों की तथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

इस वर्ष की परीक्षा में पिछले वर्षो का पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. पिछले वर्षों के पाठ्यक्रम में वर्णित सभी तालों में चौका और विभंग का पदसंचालन।
2. पिछले वर्षों के पाठ्यक्रम में दिये हुये सभी तालों में खण्डी, अरसा और कट इत्यादि।
3. मंगलाचरण, बटु, पल्लवी, अवलय, मोक्ष, नाट पंच-पद-सज्जालन (Five Steppings)।
4. गीताभिनय स्थाई और संचारी भाव सहित :-
   (क) जयदेव का एक पद।
   (ख) कवि सूर्य चम्पू का एक पद।
   (ग) बनमाली या गोपाल कृष्ण का एक पद।
   (घ) दो उड़ीसा लोक-नृत्य।
5. रस अभिनय प्रदर्शन-सिर, मुख, नेत्र ग्रीवा, हस्तपद व्यवहार।
6. गीत के साथ अभिनय नायक-नायिका भेदों के अनुसार।

शास्त्र

1. रंगाधिदेव स्तुति।
2. देवहस्त, दशावतार-हस्त, यति-हस्त, बन्धव-हस्त, नव-ग्रहहस्त तथा नृत-हस्त का अर्थ सहित ज्ञान।
3. भारतीय शास्त्रीय-नृत्य का सक्षिप्त विवरण।
4. आधुनिक उड़ीसी-नृत्य का क्रमिक विकास, उन्नति और प्रचार।
5. जगन्नाथ पद्धति का महारिश के कार्य। उड़ीसा-नृत्य में गीतीयुवा और उड़ीसी-नृत्य के सहयोगी-नृत्य।
6. उड़ीसी-नृत्य के प्राचीन और आधुनिक प्रमुख कलाकारों के कार्य का संक्षिप्त विवरण।
7. कुडुक, सारीमना, ताईदा तथा दशकोशिका इत्यादि का ज्ञान। उड़ीसी-तालों (दस-ताली) के अंग और जाति का पूर्ण ज्ञान।
8. उड़ीसी-नृत्य के पाँच पद-संचालन (Five Steps) का पूर्व ज्ञान।
9. नृत्य और जीवन का दर्शन, अंगहार शिक्षा।
10. वैदिक-युग से नृत्य-सृष्टि व उड़ीसी-नृत्य का क्रमिक विकास।
11. नाद की तीन विशेषतायें, नाद-स्थान, श्रुति, स्वर, स्वर के प्रकार, सप्तक, सप्तक के प्रकार (मन्द्र, मध्य और तार) आदि के विषय में साधारण ज्ञान।
12. उत्तर भारतीय ताल-पद्धति का साधारण ज्ञान।

पंचम वर्ष

क्रियात्मक-परीक्षा 100 अंकों की तथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 50 अंकों का।

इस वर्ष के पाठ्यक्रम में पिछले सभी वर्षों के पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. उड़ीसी-नृत्य के पंच-पद-संचालन का विशेष अभ्यास।
2. उड़ीसी दस तालों में कुछ खण्डी और अरसा का अभ्यास।
3. निम्नलिखित का संचारी भाव सहित भावाभिनय :-
   (क) गीतगोविन्द का एक-एक पद (गान)।
   (ख) चम्पु का एक पद (गान)।
   (ग) बनमाली या वेणुधर की एक पर रचना का गान।
4. चार नायक और आठ प्रकार की नायिकाओं का अभिनय।
5. उड़ीसा के तीन लोक नृत्यों का अभ्यास।
6. खण्डी, उक्त और आधुनिक नृत्य की रचना का अभ्यास।
7. कष्ठ संगीत :- अपने अभिनीत वस्तुओं के अनुकूल गानों के गाने का अभ्यास विद्यार्थियों को आवश्यक है।
8. नृत्य व रस श्रृंखला।
9. भाषा विहीन विभिन्न भाव प्रदर्शन व नृत्याभिनय।

शास्त्र

1. रस और भाव-रस और भाव में सम्बन्ध, स्थाई-भाव, संचारी-भाव, अनुभाव, विभाव, आलम्बन और उद्दीपन-विभाव का पूर्ण ज्ञान।
2. भावाभिनय का ज्ञान।
3. चार नायक और आठ नायिका भेद ज्ञान
4. पात्र लक्ष्य का ज्ञान।
5. रंग-मंच निर्माण तथा नाप-तौल का ज्ञान।

6. उड़ीसी-नृत्य में वस्त्राभूषण और साज-सज्जा का ज्ञान।
7. पद भेद और मण्डल भेद का ज्ञान।
8. कालान्तर में उड़ीसी-नृत्य की परम्परा। उड़ीसा के 13 जिलों के पल्ली-नृत्य का साधारण ज्ञान।
9. आधुनिक उड़ीसा-नृत्य का क्रमिक विकास तथा विषय भंडार उत्पत्ति (सप्त ताल तथा सप्त ताण्डव) का अध्ययन।
10. दक्षिण भारतीय ताल-पद्धति का साधारण ज्ञान।
11. संगीत (नृत्य) सम्बन्धी सामान्य विषयों पर लेख लिखने की क्षमता।

छठा वर्ष

(संगीत-प्रभाकर)

क्रियात्मक-परीक्षा 200 अंकों की तथा शास्त्र का एक प्रश्न-पत्र 100 अंकों का।

पिछले सभी वर्षों का पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक

1. पिछले पाठ्यक्रमों के सभी विषयों का पुनरावलोकन।
2. भिन्न-भिन्न रसां में अभिनय करने की क्षमता।
3. स्थाई और संचारी भाव रहित गीताभिनय :-
   (क) उपेन्द्र भंज के संगीत का एक गान।
   (ख) गीतगोविन्द का एक पद गान।
   (ग) कवि सूर्य, गोपाल, कृष्ण, वनमाली या वैणुधर का एक गान।
4. उड़ीसा के कुछ लेक-नृत्य करने की क्षमता।
5. उड़ीसा ढंग पर आधुनिक-नृत्य तथा नाट्य-नृत्य (Dance Drama) की रचना करने की क्षमता।
6. कंठ संगीत :- जिन जिन विषयों पर विद्यार्थी अभिनय करते हैं उनके अनुकूल प्रयुक्त होने वाले गीतों के गाने का अभ्यास।
7. कोनार्क तथा उड़ीसा के विभिन्न मन्दिरों के पात्रों के नृत्य मूर्तियों का अनुकरण पूर्वक-नृत्य-प्रदर्शन करने की क्षमता।
8. संकरा-भरण, मोहना, सावेरी तथा वज्रकान्ति पल्लवी शिक्षा।

शास्त्र

1. भारतीय-नृत्य का संक्षिप्त इतिहास।
2. आधुनिक भारतीय शास्त्रीय-नृत्यों-कथकाली, कत्थक, भरत-नाटयम, मणिपुरी और उड़ीसी-नृत्य का तुलनात्मक अध्ययन।
3. भारतीय नृत्य का संक्षिप्त अध्ययन तथा उड़ीसा के भिन्न-भिन्न स्थानों के परम्परागत लोक-नृत्यों का अध्ययन।
4. भरतमुनि, नन्दिकेश्वर और शारंगदेव कृत नृत्य सम्बन्धी कार्यो की विवेचना।
5. पाश्चात्य देशों के नृत्य का साधारण ज्ञान।
6. नृत्य द्वारा भाव-रस की उत्पत्ति तथा नायक-नायिका भेदों का तुलनात्मक अध्ययन।
7. उड़ीसा के गुफाओं और मूर्तिकला में परिलक्षित नृत्य संकेतों के उद्देश्य और भाव का परिमापक अध्ययन।
8. जगन्नाथ, रामसिंह (संगीत अभिनय दर्पण), महेश्वर महापात्र (अभिनय-चन्द्रिका) और संगीत नारायण के संगीत कार्यो का समुचित अध्ययन।
9. उड़ीसी नृत्य प्रदर्शन करने का सभ्यक् ज्ञान, तत्सम्बन्धी रंगमंच निर्माण, साज-सज्जा, और प्रकाश इत्यादि का ज्ञान।
10. दक्षिण और उत्तर भारतीय ताल-पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन।
11. विष्णुदिगम्बर तथा भातखण्डे ताल-लिपि पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन।

संगीत प्रवीण

पाठ्यक्रम

सप्तम वर्ष

संगीत प्रवीण

गायन, तन्त्र एवं सुषिर वाद्य

क्रियात्मक

प्रश्नमूलक प्रयोगात्मक परीक्षा

(Viva Voce)

1. निम्नलिखित 15 रागों का विस्तृत अध्ययन।

शुद्ध सारंग, मारू बिहाग, नन्द, हंसध्वनि, मलूहा केदार, जोग, मद्य माद सारंग, नारायणी, अहीर भैरव, पूरिया कल्यण, आभोगी कान्हड़ा, सूर मल्हार, चन्द्रकौस, गुर्जरी-तोड़ी, मधुवन्ती।

2. (क) गायन के परीक्षार्थियों के लिए उपर्युक्त सभी रागों में विलम्बित तथा द्रुत ख्यालों को विस्तृत रूप से गाने की पूर्ण तैयारी। इनमें से कुछ रागों में ध्रुपद, धमार, तराना, चतुरंग आदि कुशलता पूर्वक गाने का अभ्यास। परीक्षार्थियों की पसंद के अनुसार किन्ही भी रागों में ठुमरी, भजन अथवा भावगीत सुन्दर ढंग से गाने की तैयारी।

(ख) तन्त्र वाद्य तथा सुषिर वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये उपर्युक्त सभी रागों में सुन्दर आलाप-जोड़, विलम्बित (मसीतखानी) तथा दत (रजाखानी) गतों को विस्तृत रूप से बजाने की पूर्ण तैयारी। ख्याल अंग से बजाने वाले परीक्षार्थियों के लिए ख्याल गायकी के समान उपर्युक्त सभी रागों में विलम्बित तथा द्रुत ख्यालों को विस्तृत रूप से बजाने की पूर्ण तैयारी। तीन ताल के अतिरिक्त कुछ अन्य कठिन तालों में भी इनमें से कुछ रागों में बन्दिशें बजाने का पूर्ण अभ्यास। परीक्षार्थियों की पसंद के अनुसार किन्ही भी रागों में धुन अथवा ठुमरी अंग का बाज सुन्दरतापूर्वक बजाने का अभ्यास।

3. निम्नलिखित 15 रागों का पूर्ण परिचय, आलाप द्वारा इनके स्वरूप का स्पष्ट रूप से प्रदर्शन तथा इनमें एक-एक बन्दिश गाने अथवा बजाने का अभ्यास। इन बन्दिशों को विस्तार से गाने अथवा बजाने की आवश्कयता नहीं है।

बंगाल भैरव, रेवा, हंसकिंकिणी, जलधर-केदार, जैत (मारवा थाट) धनाश्री (काफी थाट) भीम, शहाना, भूपाल तोड़ी, आनन्द-भैरव, सरपरदा, गारा धानी जन्त मल्हार, गोपिका बसन्ता।

4. प्रथम से षष्टम वर्षों के तथा इस वर्ष के सभी रागों को गाये अथवा बजाये जाने पर पहचानने में निपुणता।

5. प्रचलित तालों को ताली देकर विभिन्न लयकारियों में बोलने का पूर्ण अभ्यास तथा उनके ठेकों को तबले पर बजाने का साधारण अभ्यास।

6. निम्नलिखित तालों का पूर्ण परिचय तय इन्हें ताली देकर लयकारियों में बोलने का अभ्यास :-

पश्तों, फ़रोदस्त, खेमटा, गणेश।

मंच प्रदर्शन

(Stage Performance)

1. (क) मंच प्रदर्शन में गायन के परीक्षार्थी को सर्वप्रथम उपर्युक्त विस्तृत अध्ययन के 15 रागों में से अपनी इच्छानुसार किसी भी एक राग मं विलम्बित और द्रुत ख्याल लगभग 30 मिनट तक अथवा परीक्षक द्वारा निर्धारित समय में पूर्ण गायकी के साथ गाना होगा। तत्पश्चात थोड़ी देर किसी राग की ठुमरी अथवा भजन भाव गीत भी सुनाना होगा।

(ख) वाद्य के परीक्षार्थी को भी सर्वप्रथम उपर्युक्त विस्तृत अध्ययन के 15 रागों में से अपनी पसंद के अनुसार किसी भी एक राग में आलाप-जोड़, मसीतखानी तथा रजाखानी गत अथवा विलम्बित तथा द्रुत ख्याल (ख्याल-अंग बजाने वाले के लिए) लगभग 30 मिनट तक, अथवा परीक्षक द्वारा निर्धारित समय में पूर्ण तैयारी के साथ वाद्य की सही वादन शैली के अनुसार बजाना होगा तत्पश्चात थोड़ी देर किसी भी राग में ठुमरी अंग की कोई चीज अथवा कोई धुन भी बजाना होगा।

2. मंच प्रदर्शन के समय परीक्षा कक्ष में श्रोतागण भी कार्यक्रम सुनने हेतु उपस्थित रह सकते है।

3. परीक्षक को अधिकार होगा कि यदि वह चाहे तो निर्धारित समय से पूर्व भी परीक्षार्थी का प्रदर्शन समाप्त करा सकता है।

शास्त्र

प्रथम प्रश्न-पत्र

शुद्ध सिद्धान्त

नोट - गायन, तन्त्र तथा सुषिर वाद्य के सभी परीक्षार्थियों के लिये यह प्रश्न-पत्र होगा और उन्हें निम्नांकित सभी विषयों का अध्ययन करना होगा :-

1. पिछले सभी वर्षों के पाठ्यक्रमों (गायन और तन्त्र वाद्य) में दिये गये सभी शुद्ध शास्त्र सम्बन्धी सभी विषयों तथा पारिभाषिक शब्दों का विस्तृत और आलोचनात्मक अध्ययन।

2. संगीत के सिद्धांतों का वैज्ञानिक तथा व्यावहारिक विश्लेषण।

3. सगीत की उत्पत्ति तथा इसके सम्बन्ध में आलोचनात्मक विचार।

4. श्रुति समस्या, श्रुति-स्वर विभाजन एवं सारणा-चतुष्टयी का विस्तृत एवं आलोचनात्मक अध्ययन।

5. ग्राम, मूर्च्छना, आधुनिक संगीत में मूर्च्छनाओं का प्रयोग, जाति गायन और इनका राग गायन में विकसित होना इत्यादि विषयों का यथेष्ट अध्ययन।

6. भारतीय संगीत के इतिहास का काल विभाजन, इसके सम्बन्ध में विभिन्न मत के विषय में पूर्ण जानकारी।

7. प्राचीन काल में भारतीय संगीत के इतिहास तता इसके स्वरूप पर पूर्ण रूप में विचार : वैदिक संगीत और उसके स्वर, पीराणिक काल का संगीत, भरत काल का संगीत, मौर्य काल, कनिष्क काल, गुप्त काल का संगीत तथा प्रबन्ध गायन का काल।

8. हिन्दुस्तानी संगीत के विकास में भरत, नारद, मतंग, जयदेव और सारंगदेव के योगदान का विस्तृत अध्ययन।

9. चौदहवीं शताब्दी के पूर्व के निम्नलिखित संगीत ग्रन्थों का अध्ययन और उनसे निष्कर्ष तथा उनमें वणित श्रुति, स्वर, शुद्ध तथा विकृत स्वर, शुद्ध मेल, राग वर्गीकरण, राग स्वरूप, गायन प्रणाली आदि विषयों का विस्तृत आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन :-

(1) भरत कृत नाटय शास्त्र (2) मतंग कृत बहुद्देशी (3) नारदीय शिक्षा (4) संगीत मकरंद (5) जयदेव कृत गीत गोविन्द (6) शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर।

10. कर्नाटक संगीत पद्धति के स्वर, राग, ताल और गायकी के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी तथा उनकी विशेषतायें और हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के स्वर, राग, ताल और गायकी से उनकी तुलना।

11. निम्नलिखित विषयों का विस्तृत अध्ययन :- स्वर, गुणान्तर, स्वर- संवाद स्वयम्भू स्वरों का अध्ययन, हारमोनी, मैलीडी, पाश्चात्य स्वर सप्तक का विकास, षड़ज-पंचम तथा षड़ज-मध्यम भाव से सप्तक की रचना, भारतीय स्वर सप्तक का विकास, कला और शास्त्र, संगीत कला और विज्ञान, संगीत का कला पक्ष और भाव पक्ष, गमक और इसके विभिन्न प्रकार।

12. ध्वनि शास्त्र से सम्बन्धित निम्नांकित विषयों का विस्तृत अध्ययन :- ध्वनि विज्ञान, ध्वनि की उत्पत्ति, आन्दोलन, ध्वनि का वहन, ध्वनि वेग (Velocity of Sound), अतिस्वर (Overtones), ध्वनि की थरथराहट या डोल (Beats), तारता (Pitch), तीव्रता (Intensity or Magnitude), ध्वनि की जाति अथवा गुण (Timbre of Quality of Sound), ध्वनि का परावर्तन (Reflection of Sound), ध्वनि आवर्तन (Refrection of Sound), ध्वनि विवर्तन (Diffraction of Sound), अनुनाद(Resonance), प्रतिध्वनि (Echo), इष्ट स्वर (Consonance), अनिष्ट स्वर(Dissonance),

13. प्रथम से षष्टम वर्षों के पाठ्यक्रमों में दिये गये वाद्य सम्बन्धित सभी पारिभाषिक शब्दो का विस्तृत ज्ञान जैसे-मीड़, सूत, घसीट, गमक, कण खटका, कृनतन, जमजमा लाग-डाट, लड़ी,-गुत्थी, लड़ गुथाव, छूट, पुकार, तार-परन् छंद, फिकरा आदि।

14. संगीत शास्त्र सम्बन्धी विषयों पर लेख लिखने की विशेष क्षमता।

द्वितीय प्रश्न-पत्र

क्रियात्मक संगीत शास्त्र सम्बन्धी शास्त्र

(गायन एवं वादन के परीक्षार्थियों के लिए अलग-अलग प्रश्न-पत्र होंगे)

1. प्रथम से षष्ट वर्षों तक के पाठ्यक्रमों में दिये गये सभी क्रियात्मक संगीत सम्बन्धित शास्त्र का विस्तृत एवं आलोचनात्मक अध्ययन।

2. पाठ्यक्रम के सभी रागों का विस्तृत, आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन। रागों के न्यास स्वर, अलपत्व-बहुत्व के स्वर, विवादी स्वर और इनका प्रयोग, तिरोभाव-आविर्भाव का प्रदर्शन, समप्रकृति रागों की तुलना, रागों में अन्य रागों की छाया आदि विषय के सम्बन्ध में विस्तृत ज्ञान। विगत वर्षों के सभी रागों का भी पूर्ण ज्ञान होना अनिवार्य है।

3. भारतीय वाद्यों का वर्गीकरण, प्राचीन मध्यकालीन तथा आधुनिक तन्त्र वाद्यों का परिचय। वद्यों द्वारा उत्पन्न होने वाले स्वंयभू स्वरों का यथेष्ट ज्ञान।

4. गायन अथवा तन्त्र वाद्यों की गायन अथवा वादन शैलियों के विभिन्न प्रकारों का विस्तृत, आलोचनात्मक तथा तुलनात्मक अध्ययन।

5. पाश्चात्य लिपि पद्धतियाँ जैसे सोलफा पद्धति, चीवह पद्धति, न्यूम्स पद्धति तथा स्टाफ नोटेशन पद्धति का विशेष, आलोचनात्मक तथा तुलनात्मक ज्ञान। कार्डस (Chords) एवं इसका प्रयोग। पाश्चात्य लिपि पद्धति के गुण और दोष।

6. गायन अथवा तंत्र वादन के विभिन्न घरानों का जन्म, इतिहास, उनका विकास तता इनकी वंश परम्पराओं का पूर्ण ज्ञान। उनकी गायन अथवा वादन शैलियों का परिचय, उनकी विशेषताओं का विस्तृत, आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन।

7. देश में प्रचलित लिपि पद्धतियों का विस्तृत, आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन। भारतीय संगीत के भावी विकास सम्बन्धित सुझाव तथा इस दृष्टिकोण से लिपि-पद्धति का समीक्षात्मक अध्ययन।

8. (क) विभिन्न प्रकार के गीतों तथा उनकी गायकी को विभिन्न लयकारियों में लिखने का पूर्ण ज्ञान।

(ख) तन्त्र वादन में जोड़-आलाप, गत, तान-तोड़े, झाला आदि को विभिन्न लयकारियों में लिपिबद्ध करने का पूर्ण ज्ञान।

9. बीसवीं शताब्दी के सुप्रसिद्ध गायक अथवा तन्त्र वादकों की जीवनियाँ, संगीत में उनका योगदान तथा गायन अथवा वादन शैलियों की विशेषताओं का विशेष अध्ययन।

10. तानसेन और उनके वंशज तथा सेनी घराने की शिष्य परम्परा की पूर्ण जानकारी। इस घराने के गायकों अथवा तन्त्र वादकों की गायन अथवा वादन शैलियों का विस्तृत अध्ययन।

11. पिछले सभी वर्षों के पाठ्यक्रमों में निर्धारित सभी तालों का पूर्ण ज्ञान तथा उन्हें विभिन्न प्रकार की कठिन लयकारियों में लिपिबद्ध करने का पूर्ण ज्ञान।

12. क्रियात्मक संगीत सम्बन्धी विषयों पर लेख लिखने की पूर्ण क्षमता।

अष्टम वर्ष

संगीत प्रवीण

गायन, तन्त्र एवं सुषिर वाद्य

क्रियात्मक

प्रश्नमूलक प्रयोगात्मक परीक्षा

(Viva Voce)

1. निम्नलिखित 15 रागों का विस्तृत अध्ययन :- देवगिरी-बिलावल, यमनी-विलावल, श्यामकल्याण, गोरख-कल्याण, मेघ-मल्हार, जैताश्री, भटियार, मियाँ की सारंग, सूहा, नायकी-कान्हड़ा, हेमन्त, कौसी-कान्हड़ा जोग-कौस बिलासखानी तोड़ी और झिंझोटी।

2. (क) गायन के परीक्षार्थियों के लिये उपर्युक्त सभी रागों में विलंबित तथा द्रुत ख्यालों की विस्तृत रूप से गाने की पूर्ण तैयारी। इनमें से कुछ रागों में ध्रुपद, धमार, तराना, चतुरंग आदि कुशलता-पूर्वक गाने का अभ्यास। परीक्षार्थियों की पसंद के अनुसार किन्हीं भी रागों में ठुमरी, भजन अथवा भावगीत सुन्दर ढंग से गाने की तैयारी।

(ख) तन्त्र वाद्य तथा सुषिर वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये उपर्युक्त सभी रागों में सुन्दर आलाप-जोड़, विलंबित (मसीतखानी) तथा द्रुत (रजाखानी) गतों को विस्तृत रूप से बजाने की पूर्ण तैयारी। ख्याल अंग से बजाने वाले परीक्षार्थियों के लिये ख्याल-गायकी के समान उपर्युक्त सभी रागों में विलंबित तथा द्रुत ख्यालों का

विस्तृत रूप से बजाने की पूर्ण तैयारी। तीन ताल के अतिरिक्त कुछ अन्य कठिन तालों में भी इनमें से कुछ रागों में बन्दिशें बजाने का पूर्ण अभ्यास। परीक्षार्थियों की पसंद के अनुसार किन्हीं भी रागों में धुन अथवा ठुमरी अंग का बाज सुन्दरतापूर्वक बजाने का अभ्यास।

3. निम्नलिखित 15 रागों का पूर्ण परिचय, आलाप द्वारा इनके स्वरूप का स्पष्ट रूप से प्रदर्शन तथा इनमें कोई भी एक-एक बन्दिश गाने अथवा बजाने का अभ्यास। इन बन्दिशों को विस्तार से गाने अथवा बजाने की आवश्यकता नहीं है-

बिहागड़ा, नटबिहाग, जैतकल्याण, रामदासी-मल्हार, शुक्ल-बिलावल, भंखार, गुणकली (भैरव थाट), शिवमत-भैरव, सुघरई, गौरी (भैरव थाट), ललिता गौरी, बरवा, खम्वावती, पटमंजरी (काफी थाट), काफी कान्हड़ा।

4. प्रथम से सप्तम वर्षों के तथा इस वर्ष के सभो रागों को गाये अथवा बजाये जाने पर पहिचानने में निपुणता।

5. प्रचलित तालों को ताली देकर विभिन्न लयकारियों में बोलने का पूर्ण अभ्यास तथा उनके ठेकों को तबले पर बजाने का साधारण अभ्यास।

निम्नलिखित तालों का पूर्ण परिचय तथा इन्हें ताली देकर लयकारियों में बोलने का अभ्यास:-

अष्टमंगल, अर्जुन ताल, शिखर ताल तथा कुम्भ।

मंच प्रदर्शन

(Stage Performance)

1. (क) मंच प्रदर्शन में गायन के परीक्षार्थियों को सर्वप्रथम उपर्युक्त विस्तृत अध्ययन के 15 रागों में अपनी पसंद के अनुसार किसी भी एक राग में विलंबित और द्रुत ख्याल लगभग 30 मिनट तक अथवा परीक्षक द्वारा निर्धारित समय में पूर्ण गायकी के साथ गाना होगा। ततपश्चात् थोड़ी देर किसी राग की ठुमरी अथवा भजन अथवा भावगीत भी सुनाना होगा।

(ख) वाद्य के परीक्षार्थियों को भी सर्वप्रथम उपर्युक्त विस्तृत अध्ययन के 15 रागों में से अपनी पसंद के अनुसार किसी भी एक राग में आलाप-जोड़, मसीताखानी तथा रजाखानी गत अथवा विलंबित और द्रुत ख्याल (ख्याल अंग बजाने वाले के लिये) लगभग 30 मिनट तक अथवा परीक्षक द्वारा निर्धारित समय में पूरी तैयारी के साथ वाद्य की सही वादन शैली के अनुसार बजाना होगा ततपश्चात् थोड़ी देर किसी भी राग में ठुमरी अंग की कोई चीज अथवा कोई धुन भी बजाना होगा।

2. मंच प्रदर्शन के समय परीक्षा-कक्ष में श्रोता-गण भी कार्यक्रम सुनने हेतु उपस्थित रह सकते है।

3. परीक्षक को अधिकार होगा कि यदि वह चाहे तो निर्धारित समय से पूर्व भी परोक्षार्थी का प्रदर्शन समाप्त करा सकता है।

शास्त्र

प्रथम प्रश्न-पत्र

शुद्ध सिद्धान्त

नोट - गायन, तन्त्र तथा सुषिर वाद्य के सभी परीक्षार्थियों के लिये यह प्रश्न-पत्र होगा और उन्हें निम्नांकित सभी विषयों का अध्ययन करना होगा :-

1. प्रथम से सप्तक वर्षों के पाठ्यक्रमों (गायन और तन्त्र वाद्य) में दिये गये संगीत शास्त्र सम्बन्धी सभी विषयों और पारिभाषिक शब्दों का विस्तृत और आलोचनात्मक अध्ययन।

2. मध्यकालीन तथा आधुनिक कालीन भारतीय संगीत के इतिहास और विकास का विस्तृत अध्ययन।

3. हिन्दुस्तानी संगीत के विकास में अमीर खुसरों, अहोबल, स्वामी हरिदास, तानसेन, राजा मानसिंह तोमर, सुलतान हुसेन शाह शर्की, नेमत खाँ (सदारंग) खुसरों खाँ, नवाब वाजिद अली शाह, हस्सूहदू खाँ, ठाकुर नवाब अली, पं. विष्णुनारायण भातखण्डे, पं. विष्णुदिगम्बर पुलस्कर, ठाकुर ओंकारनाथ, कैलाशचन्द्र देव वृहस्पति आदि का योगदान।

4. चौदहवीं से अठारहवीं शताब्दी तक के निम्नांकित संगीत गन्थों का विस्तृत अध्ययन।

लोचन कृत राग तारंगिणी, रामामात्य कृत स्वर मेल कलानिधि, हृदयनारायण कृत हृदय कौतुक तथा हृदय प्रकाश, सोमनाथ कृत राग विबोध, अहोबल कृत संगोत पारिजात, श्रीनिवास कृत राग तत्व-विबोध, ध्यंकटमखी कृत चतुर्दंडिंपकाश।

5. उन्नीसवी तथा बीसवीं शताब्यिों में भारतीय संगीत का विकास तथा इस काल के ग्रन्थों का विशेष अध्ययन।

6. उत्तर व दक्षिण भारतीय संगीत पद्धतियों का पार्थक्य तथा इस पार्थक्य का कारण, आंरभ और विकास।

7. भारतोय संगीत की आध्यात्मिक विशेषताओं का विस्तृत अध्ययन।

8. भारतीय संगीत पर विदेशी संगीत का प्रभाव के विषय में आलोचनात्मक अध्ययन।

9. संगीत में रस-तत्व का सैद्धान्तिक विवेचन। सौन्दर्य शास्त्र का ज्ञान।

10. संगीत की कलात्मक और वैज्ञानिक दृष्टियों में अन्तर। ललित कलाओं में संगीत का संस्थान।

11. स्वतन्त्र भारत में संगीत तथा इसके प्रचार और प्रसार के सम्बन्ध में शासन तथा अन्य संस्थाओं द्वारा प्रयास।

12. भारतीय संगीत में प्रचलित विभिन्न तन्त्र तथा सुषिर वाद्यों की उत्पत्ति और विकास के सम्बन्ध में विस्तृत अध्ययन।

13. राग-रागिनी वर्गीकरण के सम्बन्ध में नाटयशास्त्र, वृहददेशी, संगीत मकरंद, संगीत दर्पण, हनुमतमत, शिवमत, सोमेश्वर मत, कल्लीनाथ मत, भरत मत, रागांग पद्धति, थाट-राग पद्धति का विस्तृत अध्ययन।

14. संगीत शास्त्र सम्बन्धी विषयों पर लेख लिखने की पूर्ण क्षमता।

द्वितीय प्रश्न-पत्र

क्रियात्मक संगीत सम्बन्धी शास्त्र

(गायन एवं वादन के परीक्षार्थियों के लिए अलग-अलग प्रश्न-पत्र होंगे)

1. प्रथम से सप्तम वर्षों तक के पाठ्यक्रमों के सभी क्रियात्मक संगीत सम्बन्धित शास्त्र का विस्तृत एवं आलोचनात्मक अध्ययन।
2. प्रबन्ध शास्त्र के तत्व एवं नियम। आधुनिक प्रबन्ध जैसे ध्रुपद, धमार ख्याल, ठुमरी, टप्पा, तराना, त्रिवट, चतुरंग आदि की रचना करने की ज्ञान।
3. विभिन्न प्रकार की गतों जैसे मसीतखानी, रजाखानी, अमीरखानी, फिरोजखानी की नई बन्दिशों की रचना करने के ज्ञान।
4. भारतीय संगीत की वर्तमान स्थिति तथा इसका भविष्य।
5. विभिन्न तन्त्र वाद्यों की उत्पत्ति, भारत में उनका विकास तथा उनके वादन शैलियों की विशेषताओं का विस्तृत अध्ययन।
6. उत्तर व दक्षिण भारतीय संगीत पद्धतियों का पार्थक्य तथा इस पार्थक्य का कारण, अभ्यास और विकास।
7. भारतीय संगीत पर विदेशी का प्रभाव के विषय में आलोचनात्मक अध्ययन।
8. भारतीय संगीत की आध्यात्मिक विशेषताओं का विस्तृत अध्ययन।
9. संगीत में रस-तत्व का सैद्धान्तिक विवेचन। सौन्दर्य शास्त्र का ज्ञान।
10. संगीत की कलात्मक और वैज्ञानिक दृष्यिों में अन्तर। ललित कलाओं में संगीत का स्थान।
11. स्वतन्त्र भारत में संगीत तथा इसके प्रचार और प्रसार के सम्बन्ध में शासन तथा अन्य संस्थाओं द्वारा प्रयास।
12. भारतीय संगीत में प्रचलित विभिन्न तन्त्र तथा सुषिर वाद्यों की उत्पत्ति और विकास के सम्बन्ध में विस्तृत अध्ययन।
13. राग-रागिनी वर्गीकरण के सम्बन्ध में नाटयशास्त्र, वृहददेशी, संगीत मकरंद, संगीत रत्नाकर, संगीत दर्पण, हनुमतमत, शिवमत, सोमेश्वर मत, कल्लीनाथ मत, भरत मत, रागांग पद्धति, थाट-राग पद्धति का विस्तृत अध्ययन।
14. संगीत शास्त्र सम्बन्धी विषयों पर लेख लिखने की पूर्ण क्षमता।

द्वितीय प्रश्न-पत्र

क्रियात्मक संगीत सम्बन्धी शास्त्र

(गायन एवं वादन के परीक्षार्थियों के लिए अलग-अलग प्रश्न-पत्र होंगे)

1. प्रथम से सप्तम वर्षों तक के पाठ्यक्रमों के सभी क्रियात्मक संगीत सम्बन्धी शास्त्र का विस्तृत एवं आलोचनात्मक अध्ययन।
2. प्रबन्ध शास्त्र के तत्व एवं नियम। आधुनिक प्रबन्ध जैसे ध्रुपद, धमार ख्याल, ठुमरी, टप्पा, सादरा, तराना, त्रिवट, चतुरंग आदि की रचना करने का ज्ञान।
3. विभिन्न प्रकार की गतों जैसे मसीतखानी, रजाखानी, अमीरखानी, फिरोजखानी की नई बन्दिशों की रचना करने का ज्ञान।
4. भारतीय संगीत की वर्तमान स्थिति तथा इसका भविष्य।
5. विभिन्न तन्त्र वाद्यों की उत्पत्ति, भारत में उनका विकास तथा उनके वादन शैलियों की विशेषताओं का विस्तृत अध्ययन।
6. ध्रुपद गायन का पतन तथा ख्याल गायन की लोप्रियता के कारणों पर तर्क पूर्ण विचार।
7. वर्तमान समय में भारतीय संगीत के प्रचार एवं प्रसार हेतु विभिन्न प्रकार के साधन तथा माध्यम और उनकी अच्छाइयाँ और बुराइयाँ।
8. वर्तमान समय में विभिन्न प्रकार की दी जाने वाली संगीत शिक्षा के सम्बन्ध में आलोचनात्मक और तर्क पूर्ण विचार।
9. पाठ्यक्रमों के रागों में तीन ताल के अतिरिक्त अन्य तालों में स्वयं सरगम अथवा बन्दिश की रचना करने की क्षमता।
10. इस वर्ष के सभी रागों का विस्तृत अध्ययन तथा उनसे मिलते-जुलते रागों से तुलना। इन रागों में अलपत्व-बहुत्व तथा तिरोभाव-आविर्भाव सोदाहरण दिखाने का पूर्ण ज्ञान।
11. पाश्चात्य लिपि पद्धति (Staff-notaion) का पूर्ण ज्ञान तथा भारतीय संगीत में प्रचलित लिपि पद्धतियों से इनकी तुलना। पाश्चात्य लिपि पद्धति (Staff-notaion) में गीत अथवा गत लिखने का ज्ञान।
12. क्रियात्मक संगीत शास्त्र सम्बन्धी विषयों पर लेख लिखने की पूर्ण क्षमता।

सप्तम वर्ष

संगीत प्रवीण

तबला एवं पखावज

क्रियात्मक

प्रश्नमूलक प्रयोगात्मक परीक्षा

(Viva Voce)

1. तबले के परीक्षार्थी को पखावज तथा पखावज के परीक्षार्थी को तबले का साधारण ज्ञान।
2. एक ही बोल को विभिन्न धरानों की वादन शैली के आधार पर बजाने का ज्ञान।
3. तीनताल में झपताल, एकताल, रूपक तथा धमार तालों को ताली देकर बोलने तथा तबले अथवा पखावज पर बजाने का पूर्ण अभ्यास।
4. हाथ से ताली देकर विभिन्न तालों में टुकड़ों, परनें, तिहाइयाँ, चक्करदार टुकड़े, परणें आदि बोलने की पूर्ण क्षमता।
5. परीक्षक द्वारा दिये गये बोल समूहों से विभिन्न मात्राओं की तिहाइयों की रचना करने का ज्ञान।
6. विभिन्न गायन शैलियों एवं तन्त्र वादन के साथ संगत करने की पूर्ण क्षमता।

7. निम्नलिखित तालों में स्वतन्त्र वादन का साधारण अभ्यास। इनमें से जो तालें पखावज के लिये उपयुक्त हैं उनको यदि परीक्षार्थी चाहे तो पखावज पर बजा सकता है।

लक्ष्मीताल, रुद्रताल, बिखार-खाल, बड़ी सवारी (16 मात्रा) कैदफरोदस्त (19 मात्रा) तथा फरोदस्त ताल (14 मात्रा)।

8. निम्नलिखित मात्राओं की तालों में कम से कम 10 मिनट की विशेष तैयारी एवं सफाई के साथ स्वतन्त्र वादन करने का पूर्ण अभ्यास। यह तालें प्राचीन अथवा ताल रचना के सिद्धान्त के आधार पर नव-निर्मित तालें हो सकती है :-

नै मात्रा, ग्यारह मात्रा तथा तेरह मात्रा।

9. स्वतन्त्र वादन में प्रयुक्त होने वाले तालों के उपयुक्त लहरों (नगमें) का ज्ञान।

10. तबला अथवा पखावज को स्वर में मिलाने का पूर्ण अभ्यास।

मंच प्रदर्शन

(Stage Performance)

1. मंच-प्रदर्शन में परीक्षार्थी अपनी इच्छानुसार पाठ्यक्रम के किसी भी ताल में लगभग 20 मिनट तक अथवा परीक्षक द्वारा निर्धारित समय में, प्री तैयारी तथा लहरा (नगमें) के साथ स्वतन्त्र वादन करना होगा। यदि परीक्षक चाहे तो किसी अन्य ताल में भी 10 मिनट तक स्वतन्त्र वादन करा सकता है।

2. परीक्षक को अधिकार होगा कि यदि वह चाहे तो निर्धारित समय से पूर्व भी किसी परीक्षार्थी का वादन समाप्त करा सकता है।

3. मंच प्रदर्शन के समय परीक्षाकक्ष में श्रोतागण भी वादन सुनने हेतु उपस्थित-उपस्थित रह सकते है।

शास्त्र

प्रथम प्रश्न-पत्र

शुद्ध सिद्धान्त

1. ताल सम्बन्धी समस्त पारिभाषिक शब्दों का विस्तृत एवं आलोचनात्मक अध्ययन। कायदा, पलटा-रेला, पेशेकारा, गत का तुलनात्मक अध्ययन।

2. भरत के 'नाटयशास्त्र और शारंगदेव रचित 'संगीत रत्नाकर' में वर्णित अवनद्ध वाद्यों का अध्ययन (विशेष रूप से पुष्कर तथा मृदंग का अध्ययन)।

3. तबला एवं पखावज की वादन विधियों का आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन।

4. मुख्य पाश्चात्य अवनद्ध वाद्य जैसे कैटिल-ड्रम, टेनर-ड्रम, स्नेटर-ड्रम, ब्रास-ड्रम आदि का सामान्य ज्ञान।

5. पाश्चात्य लिपि पद्धति (स्टाफ नोटेशन), टाइम सिग्नेचर का अध्ययन।

6. लय तथा लयकारी का विस्तृत अध्ययन और इनका जाति से सम्बन्ध।

7. भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास तथा तबला और पखावज के इतिहास का विस्तृत अध्ययन।

8. ताल रचना के सिद्धान्त, विभिन्न गायन शैलियों, तन्त्र वादन और नृत्य के अनुकूल तालों की रचना।

9. पिंगल शास्त्र का संक्षिप्त अध्ययन एवं ताल तथा छंद का सम्बन्ध।

10. समपदी, विषमपदी तथा मिश्रपदी तालों का ज्ञान।

11. संगीत सम्बन्धी विभिन्न विषयों पर निबन्ध लिखने की पूर्ण क्षमता।

द्वितीय प्रश्न-पत्र

(प्रायोगिक सिद्धान्त)

1. ताल रचना के सिद्धान्त के अनुसार नये तालों की रचना करने की क्षमता।

2. दिये हुये बोलों के आधार पर विभिन्न तालों में पेशकार, टुकड़े परन, तिहाई आदि बनाने का ज्ञान।

3. तालों को विभिन्न लयकारियों में ताल-लिपि में लिखने का पूर्ण ज्ञान।

4. भातखण्डे तथा विष्णु दिगम्बर दोनो ताल-लिपि पद्धतियों का पद्धतियों का आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन तथा दोनों ही ताल-लिपियों में टुकड़े परन आदि लिखने का ज्ञान।

5. भातखण्डे तथा विष्णु दिगम्बर दोनों ताल-लिपि पद्धतियों का ध्यान रखते हुये नये ताल-लिपियों की रचना करने का ज्ञान।

6. उत्तर भारतीय एवं कर्नाटक संगीत के अवनद्ध तथा धन-वाद्यों जसे तबला, ढोल, नागड़ा, चोधड़, ताशा, घुमट, घट, सम्भन, डफ, डमरू, चिपली, करताल, टुनटुना, हड़क, खोल, मृदुल, डफली, टुक्कड़, झाँझ, मंजीरा, करताल आदि का साधारण परिचय।

7. फरमायशी-चक्करदार, कमाली, - चक्करदार तथा नौहक्का चक्करदारों को विभिन्न तालों में बनाकर लिखना।

8. विभिन्न तालों में दमदार तथा बेदम तिहाइयों की रचना करने का ज्ञान।

9. विभिन्न घरानों की गतों का ज्ञान तथा समपदी तालों में गतों की रचना।

10. अप्रचलित तथा कठिन तालों की उपयोगिता पर विचार।

11. तबले तथा पखाववज के विभिन्न घरानों की उत्पत्ति का तर्क संगत आधार।

12. प्रयोगिक सिद्धान्त सम्बन्धी विभिन्न विषयों पर लेख लिखने की क्षमता।

अष्टम वर्ष

संगीत प्रवीण

तबला एवं पखावज

क्रियात्मक

प्रश्नमूलक प्रयोगात्मक परीक्षा

(Viva Voce)

1. तबला अथवा पखावज मिलाने के लिये समुचति स्वर ज्ञान।
2. तबला अथवा पखावज के निर्माण और मरम्त से सम्बन्धित आवश्यक जानकारी। अच्छे-बुरे तबले अथवा पखावज की पहचान।
3. तबला, पखावज तथा अन्य अवनद्ध वाद्यों के बोलों का साधारण ज्ञान।
4. तबला अथवा पखावज के विभिन्न बाजों तथा घरानों की वादन शैलियों का मुख्य अन्तर समझाने के योग्य आवश्यक क्रियात्मक जानकारी।
5. हर तहर के संगीत के साथ संगत करने की योग्यता।
6. निम्नलिखित में से कम से कम दो प्रकार के कार्यक्रम के साथ विशेष रूप के सुन्दर संगत करने की क्षमता :-
   (1) ख्याल-गायन।
   (2) ध्रुपद-धमार गायन।
   (3) ठुमरी-टप्पा गायन।
   (4) भजन, गीत गायन।
   (5) तन्त्र वादन।
   (6) कत्थक नृत्य।
   (7) आधुनिक तथा लोक नृत्य।
7. नये टुकड़े, परनें कायदें, गतें, पेशकार, मुखड़े, मोहरे, तिहाइयाँ आदि रचना करने की क्षमता।
8. कठिन लयकारियों का प्रदर्शन जैसे आड़, कुआड़ विआड़ा के अतिरिक्त अन्य कठिन लयकारियों को भी ताली देकर बोलना तथा बजाकर दिखाना। यह प्रदर्शन हाथ की ताली द्वारा अथवा बोल-पढ़न्त अथवा तबला या पखावज वादन द्वारा हो सकता है।
9. प्रथम से सप्तक वर्षों तक के सभी तालों की विशेष तैयारी तथा उन तालीं में यथा योग्य स्वतन्त्र-वादन तथा साथ-संगत करने का पूर्ण अभ्यास।
10. निम्नलिखित तालों में स्वतन्त्र-वादन का साधारण अभ्यास। इनमें से जो तालें पखावज के लिये उपयुक्त हैं उनके यदि परीक्षार्थी चाहे तो पखावज पर बजा सकता है।

    (1) ब्रह्म ताल (2) पश्तो ताल (3) खेमटा (4) अष्ट मंगल (5) अर्जुन ताल (6) गणेश ताल।

    उपर्युक्त तालों के अतिरिक्त निम्नांकित में से किन्ही दो तालों में अच्छी तैयारी के साथ कम से कम 15 मिनट का स्वतन्त्र वादन करने का पूर्ण अभ्यास अनिवार्य है। यह तालें चाहें प्राचीन हो अथवा ताल रचना के सिद्धान्त के आधार पर नव निर्मित हो सकती है।

    (क) पन्द्रह मात्राओं का कोई ताल।
    (ख) सत्रह मात्राओं का कोई ताल।
    (ग) अठ्ठारह मात्राओं का कोई ताल।

12. स्वतन्त्र वादन अथवा साथ-संगत में प्रयुक्त होने वाले सभी प्रकार के बोलों का ज्ञान होना चाहिये जैसे ठेका की किस्में, कायदा आर उनके पलटे, चाला, पेशकारा-पलटा, बाँट, रेला, रौ, टुकड़ा, मुखड़ा, मोहरा, उठान, गत, परन, दमदार व बेदम तिहाइयाँ, अतीत-अनागत के बोल टुकड़े, चक्करदार परनें, फरमाइशी परनें, कमाली परनें, लग्गी लड़ी, जवाबी परनें, लोम, विलोम, नवहक्कता, दुपल्ली, तिपल्ली, चौपल्लो आदि।
13. स्वतन्त्र वादन के उपयुक्त समयानुकूल रागों के लहरों (नगमों) का ज्ञान।
14. विभिन्न मात्राओं से आरम्भ होने वाली विभिन्न प्रकार की छोटी, बड़ी तिहाइयाँ आदि बनाने व बजाने का ज्ञान।
15. निम्नलिखित छन्दों का क्रियात्मक अध्ययन :-

    भमड़ौवा छन्द, भुजंग प्रयात झूलना (गीतांगी, गीतिका, बैताल) अश्वगती छन्द, शिरण छन्द, घनाक्षरी छन्द, रूप घनाक्षरी छन्द, देव घनाक्षरी छन्द दंडिका छन्द, गायत्री छन्द, तोटक छन्द, सोलिनी छन्द, मालिनी छन्द।

मंच प्रदर्शन

(Stage Performance)

1. मंच-प्रदर्शन में परीक्षार्थी को अपनी इच्छानुसार पाठ्यक्रम के किसी भी ताल में लगभग 20 मिनट तक अथवा परीक्षक द्वारा निर्धारित समय में, पूरी तैयारी तथा लहरे के साथ स्वतन्त्र वादन करना होगा। यदि परीक्षक यदि चाहे तो किसी अन्य ताल में भी लगभग 10 मिनट तक स्वतन्त्र वादन करा सकता है।
2. परीक्षक को अधिकार होगा कि यदि वह चाहे तो निर्धारित समय से पूर्व भी किसी परीक्षार्थी का वादन समाप्त करा सकता है।
3. मंच प्रदर्शन के समय परीक्षाकक्ष में श्रोतागण भी वादन सुनने हेतु उपस्थित रह सकते है।

शास्त्र

प्रथम प्रश्न-पत्र

शुद्ध सिद्धान्त

1. प्रथम से सप्तम वर्षों तक के सभी पारिभाषिक शब्दों की विस्तृत व्याख्या तथा आलोचनात्मक एंव तुलनात्मक ज्ञान।
2. लय व लयकारियों का विस्तृत अध्ययन एवं तत्सम्बन्धी पारिभाषिक शब्दों की पूर्ण व्याख्या।
3. ताल सम्बन्धी समस्त पारिभाषिक शब्दों का सूक्ष्म अध्ययन।
4. भारतीय संगीत का पूर्ण इतिहास।
5. भारतीय संगीत में ताल और अवनद्ध वाद्यों का विकास।
6. कर्नाटक व हिन्दुस्तानी संगीत की ताल पद्धतियों का आलोचनात्मक व तुलनात्मक अध्ययन।
7. स्वर और ताल का सम्बन्ध। रस-सिद्धि अथवा भावाभिव्यक्ति में तालों की सहायता।
8. विभिन्न गायन शैलियों अथवा गीतों के प्रकारों के अनुकूल तालों के चुनाव का सिद्धान्त।
9. भारतीय वाद्यों का वर्गीकरण। शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत तथा वृन्दावादन में प्रयोग होने वाले घन और अवनद्ध वाद्य तथा उनका उपयोग पाश्चात्य संगीत में अवनद्ध वाद्यों का स्थान।
10. नाद की जाति अथवा गुण का सहायक नादों (स्वयंभू स्वरों) के साथ सम्बन्ध। तबला अथवा पखावज में उत्पन्न होने वाले सहायक नाद। तबला तथा पखावज की दाई तथा बाई पूड़ियों का उनसे उत्पन्न होने वाले स्वर तथा ध्वनि के दृष्टिकोण से अध्ययन। स्वर-संवाद का ज्ञान।
11. तबले व पखावज की रचना-प्रक्रिया-लकड़ी चमड़ा, मसाला आदि की जानकारी।
12. पिंगल शास्त्र का अष्ट-पिंगल जैसे : तगण, नगण, रगण, जगण, मगण, पगण, सगण तथा भगण का ज्ञान और प्रयोग होने वाले लघु गुरु का अध्ययन।
13. उपरोक्त क्रियात्मक पाठ्यक्रम में 15 छन्दों के लक्षण का साधारण ज्ञान।
14. तबला, पखावज तथा संगीत से सम्बन्धित विषयों पर निबन्ध लिखने की क्षमता।

द्वितीय प्रश्न-पत्र

(प्रायोगिक सिद्धान्त)

1. ताल रचना के सिद्धान्त और नये तालों की रचना की विधि। तालों की परस्पर तुलना।
2. ताल लेखन क्षेत्र में भातखण्डे, विष्णु दिगम्बर तथा पाश्चात्य लिपि-पद्धतियों की उपयोगिता, आलोचना एवं तुलना।
3. तालों व उनके विस्तारों को पूर्ण ताल-लिपि में विभिन्नन लयकारियों में लिखने का पूर्ण ज्ञान।
4. तबला वादन की विभिन्न शैलियाँ (बाज) और घरानों का विस्तृत एवं तुलनात्मक अध्ययन तथा उनकी शैलियों के भेदों का स्पष्टीकरण।
5. किसी एक ताल में अन्य तालों को बिठाकर ताल-लिपि में लिखने का ज्ञान। विभिन्न प्रकार की तिहाइयाँ, चक्करदार टुकड़ा, परन आदि बनाकर ताल-लिपि में लिखने का पूर्ण ज्ञान।
6. सोलो और संगत के सिद्धान्त और विधियाँ।
7. क्रियात्मक पाठ्यक्रम में निर्धारित सभी तालों को विभिन्न लयकारियों में लिखने का पूर्ण ज्ञान।
8. भारत के प्रसिद्ध तबला अथवा पखावज वादकों की जीवनी और उनकी विशेषतायें तथा उनकी वादन-शैलियों का आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन।
9. अति विलम्बित लय और सुल्फ लय (अतिद्रुत लय) में निर्धारित ताल स्वरूप कायम रह सकते हैं या नहीं ? इसका अध्ययन।
10. पिंगल शास्त्र का ज्ञान। छन्द और लयकारियों में भेद तथा कौन या छन्द किस लयकारी के अन्तर्गत आता है इसका ज्ञान। समपदी, विषमपदी तथा मिश्रपदी तालों का ज्ञान।
11. तबला, पखावज, तथा अन्य अवनद्ध वाद्यों सम्बन्धित प्रयोगात्मक विषयों पर निबन्ध लिखने की पूर्ण क्षमता।

सप्तम वर्ष

संगीत प्रवीण

कत्थक्-नृत्य

क्रियात्मक

प्रश्नमूलक प्रयोगात्मक परीक्षा

(Viva Voce)

1. प्रथम से षष्टम वर्षों के लिये निर्धारित समस्त क्रियात्मक विषयों की विशेष तैयारी। उनमें निर्धारित सभी तालों में नये, कठिन और सुन्दर लयकारी युक्त टुकड़े, आमद, तौड़े, परणें, चक्करदार परणें, कवित्त, छन्दें, गत, गत-भाव आदि के साथ नृत्य करने की पूर्ण क्षमता।
2. पद संचलन में विशेष तैयारी, विभिन्न लयों का पदाघाट क्रिया द्वारा प्रदर्शित करने का पूर्ण अभ्यास। सिर, नेत्र, प्लक, पुतलियाँ, भृकुटि, नासिका, कपोल, होंठें, दन्त, मुख, चिबुक, ग्रीवा, हस्ता, उर, पार्श्व, जठर, कटि, जंघा, पंजा आदि शारीरिक अंगों, प्रत्यंगों तथा उपांगों की सुन्दर ढंग से संचालित करने का विशेष अभ्यास।
3. नाचने से पूर्व नृत्य के बोलों, तोड़ो, परणें आदि को हाथ से ताली देकर बोलने (पढन्त) का पूर्ण अभ्यास।
4. निम्नांकित 12 तालों में से किन्ही भी 3 प्रचलित तथा 3 अप्रचलित तालों में नृत्य सम्बन्धी सभी क्रियाओं के साथ सम्पूर्ण कत्थकनृत्य कला प्रदर्शन की पूर्ण तैयारी :-

(1) तेवरा, (2) बसंत ताल (नौ मात्रा) (3) सूल ताल, (4) कुम्भ अथवा चन्द्रमणी ताल (ग्यारह मात्रा) (5) चार ताल, (6) जयमंगल अथवा मण्डिका ताल (तेरह मात्रा) (7) धमार, (8) चन्द्रकला अथवा आड़ापत्र (पन्द्रह मात्रा) (9) तीन ताल (10) शिखर अथवा चुड़ामणी (सत्रह मात्रा) (11) जगदम्बा अथवा त्रिवेणी (उन्नीस मात्रा) (12) कौशिक ताल (अठाहर मात्रा)।

5. पाठ्यक्रम में निर्धारित प्रत्येक ताल में नृत्य सम्बन्धी समस्त क्रियाओं एवं तोड़े और परणों के प्रदर्शन की पूर्ण तैयारी जैसे :- ठाट, आमद, सलामो, तोड़ा, टुकड़ा, परण, गत भाव, अनुभाव, ततकार, धुमरिया, पलटा, कवित्त, पढ़न्त, विकास, तिहाई, प्रमिलू के तोड़े, बढैया क परणें, चक्करदार फरमाइशी चक्करदार परणें, आड़ी-कुआड़ी, लय की परणें, चक्करदार नौहक्का, शिव परण, गणेश परण आदि।

6. ताण्डव तथा लास्य नृत्यों में प्रथक-प्रथक प्रयोग होने वाली मुदाओं का प्रयोग तथा इनके विभिन्न भेदों का प्रदर्शन।

7. नायक और नायिका क विभिन्न भावों का प्रदर्शन।

8. मंडल, चारी, करण, अंगहार आदि के विभिन्न भेदों का प्रदर्शन तथा इनसे सम्बन्धित रसों और भावों को दर्शाने का अभ्यास।

9. गुरु और सारस्वती में से किसी एक की स्तुति से नृत्य प्रारम्भ करने का अभ्यास।

10. निम्नलिखित किन्हीं भी दस कथानकों के आधार पर नृत्य प्रदर्शित करने की पूर्ण क्षमता।

(1) मारीच-बध, (2) मदन-दहन, (3) द्रौपती चीर हरण, (4) भलीनी-भक्ति, (5) लक्ष्मण-शक्ति, (6) त्रिपुरासुर-वध, (7) वामन अवतार, (8) अहिल्या-उद्धार, (9) शकुन्तला-दुष्यान्त चरित्र, (10) विश्वामित्र मेनका की कथा, (11)पुष्पबाटिका में सीता और राम के दर्शन, (12) कृष्ण-सुदामा की कथा, (13) नल-दमयन्ती की कथा, (14) गंगावतरण, (15) भस्मासुर-वध, (16) अमृत मन्थन, (17) होली लीला, (18) गोपी विरह, (19) मटकी नृत्य, (20(घूँघट नृत्य, (21) पनघट की छेड़-छाड़ (22), काली तान्डव, (23) गोबर्द्धन नृत्य, (24) मुरली नृत्य।

11. कम से कम 5 कवित्त को याद करना और उन्हें परीक्षक द्वारा पूछे जाने पर सुनाना।

12. निम्नांकित किन्हीं भी 4 रागों में ठुमरी, भजन अथवा होरी गाकर भाव प्रदर्शित करने का अभ्यास।

खमाज, काफी, देस, भैरवी, पीलू, तिलक-कामोद, तिलंग तथा झिंझोटी।

13. निम्नलिखित नृत्य शैलियों में से किसी भी एक शैली की जानकारी और उसे नृत्य द्वारा प्रदर्शित करने का अभ्यास :-

(1) मणिपुर नृत्य। (2) ओड़िसी नृत्य।

14. निम्नलिखित प्रदेशें में से किन्हीं भी चार प्रदेशों के एक-एक लोक नृत्यों की जानकारी तथा उनकों प्रदर्शित करने का अभ्यास।

(1) पंजाब और हरियाणा (2) राजस्थान (3) गुजरात (4) महाराष्ट्र (5) उत्तर प्रदेश (6) पश्चिम बंगाल (7) उड़ीसा (बिहार)

15. पाठ्यक्रम में निर्धारित समस्त तालों के ठेकों को सीधा तथा विभिन्न कठिन लयकारियों में ताली देते हुये बोलना तथा उन्हें नृत्य द्वारा भी प्रदर्शित करने का पूर्ण अभ्यास।

16. समस्त निर्धारित तालों में विभिन्न प्रकार की और विभिन्न मात्राओं की तिहाइयों को ताली देकर बोलना तथा नृत्य द्वारा दिखाना।

17. समस्त निर्धारित तालों में विभिन्न लयकारियों का प्रदर्शन करते हुये विभिन्न तत्कार का प्रदर्शन करना। तत्कार के विभिन्न पलट और दरजे भी होने चाहिये।

18. समस्त निर्धारित तालों के ठेकों और उनमें बद्ध कुछ बोलों को तबले पर बजाने का अभ्यास।

19. समस्त निर्धारित तालों में अपनी इच्छानुसार किसी भी वाद्य पर विभिन्न रागों में नगमा (लहरा) बजाने का अभ्यास।

मंच प्रदर्शन

(Stage Performance)

1. मंच-प्रदर्शन में परीक्षार्थी को निम्नांकित पाँच में से किन्हीं भी दो तालों में से कम से कम आधा घंटा तथा अधिक से अधिक पैतालिस मिनट तक पूर्ण तैयारी के साथ सम्पूर्ण नृत्य कला प्रदर्शन करना होगा।

(1) रूपक (2) सूलताल (3) चारताल (4) धमार (5) तीनताल।

2. परीक्षक को अधिकार होगा कि यदि वह चाहे तो निर्धारित समय से पूर्व भी परीक्षार्थी का नृत्य समाप्त करा सकता है।

3. मंच-प्रदर्शन के समय परीक्षा कक्ष में श्रोतागण भी नृत्य देखने हेतु उपस्थित रह सकते है।

शास्त्र

प्रथम प्रश्न-पत्र

शुद्ध सिद्धान्त

1. नृत्य में प्रयुक्त होने वाले समस्त पारिभाषिक शब्दों का विस्तृत एवं आलोचनात्मक ज्ञान।

2. नृत्य एवं अभिनय के भेद, कत्थक, नृत्य के अवयव, ठाठ लक्षण, नृत्यांग, जाति-शून्य, भाव-रंग, इष्टपद, गतिभाव, तराना, रूप सौन्दर्य का प्रसाधन आदि का विस्तृत ज्ञान।

3. कत्थक नृत्य की विभिन्न परिभाषा, 'कत्थक' शब्द के लिये पर्यावाची शब्द और उनके अर्थ, कत्थक नृत्य का क्रमिक इतिहास, इसकी शैलियाँ, विशेषताएँ भाव-भंगिमा, वेष-भूषा, मेक-अप आदि का आलोचनात्मक अध्ययन।

4. पंजाब और हरियाना, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा तथा बिहार के लोक नृत्यों का परिचय, उनकी विविध वेष-भूषा, कला-कौशल एवं ताल प्रबन्ध आदि का अध्ययन।

5. नृत्य के कुछ प्राचीन अंग जैसे उरमई, सुलप, उरप, तिरप, शुद्ध मुद्रा, लाग, डाट, धिलांग, थर्र, जमनका, स्तुति, प्रमिलू, पुहुपुंजरी आदि की व्याख्या।

6. नायक-नायिका भेद-स्वकीया, परकीया, सामान्य आदि के भेदों का पूर्ण अध्ययन।

7. एकाकी नृत्य (Solo Dance), युगल नृत्य (Duet Dance), सामूहिक नृत्य (Group Dance), आदि का परिचय, उनकी महत्वपूर्ण बातें तथा उनको प्रस्तुत करने के नियम आदि का ज्ञान।

8. कत्थक नृत्य मं गत, भाव, कवित्त, ठुमरी आदि का स्थान, उनके प्रस्तुतिकरण के नियम तथा उनकों प्रस्तुत करते समय ध्यान में रखने योग्य बातों का अध्ययन।

9. आरोही-अंग, अवरोही-अंग, चंचल-गति, प्रवाह-गति, खण्ड-गति, भ्रमर-गति, गमन, आगमन, क्रीड़ा, अताल-स्वभाव, ललित स्वभाव, चक्र के प्रकार (चक्र, विपरीतत चक्र, अर्द्ध-चक्र) भाव-मुद्रा, अनुकरण मुद्रा आदि का सूक्ष्म अध्ययन।

10. नृत्य में घुँघरु का महत्व, घुँघरु कितने होने चाहिये, घुँघरु गूथने एवं बाँधने के नियम, दैनिक अभ्यास एवं प्रदर्शन के घुँघरु, रंगमंच व्यवस्था, पकाश, ध्वनि प्रस्तार यंत्र (Microphone) आदि की विस्तृत जानकारी।

11. कत्थक नृत्य सम्बन्धी नये-नये सुन्दर एवं कठिन टुकड़े-तोड़े रचने तथा ताल-लिपि में लिखने का पूर्ण अभ्यास।

12. चतस्त्र, तिस्त्र, मिश्र, खंड और संकीर्ण जातियों के भेद, विभिन्न तालों का जातियों से सम्बन्ध, कर्नाटक ताल पद्धति तथा भारतीय ताल पद्धति की तुलना आदि का पूर्ण अध्ययन।

13. रंगमंच (Stage) की रचना का इतिहास, प्रारम्भ से लेकर आधुनिक काल तक की अवधि में रंगमंच की रचना के विभिन्न रूप तथा उनकी उपयोगिता तथा रंगमंच की आवश्यकता। प्रकाश (Light) का नृत्य और रंगमंच से सम्बन्ध। प्रारम्भ से लेकर वर्तमान काल तक की अवधि में नृत्य तथा रंगमंच के लिये प्रकाश की विभिन्न व्यवस्थायें, आवश्यकतायें तथा उपयोगितायें।

14. नृत्य में वेषभूषा की आवश्यकता तथा इसका महत्व, वेषभूषा और भाव का पारम्परिक सम्बन्ध, प्रारम्भ से लेकर वर्तमान काल तक की अवधि में वेषभूषा में विभिन्न परिवर्तन एवं उनके औचित्य तथा अनौचित्य पर आलोचनात्मक दृष्टि वेषभूषा और मेकअप सम्बन्धी विभिन्न सुझाव।

15. नाटय, नृत्त तथा नृत्य का विस्तृत और तुलनात्मक अध्ययन नाटय की उत्पत्ति। नाटय, नृत और नृत्य का जीवन से सम्बन्ध तथा जीवन में इनकी उपयोगितायें।

16. प्रारम्भ से लेकर वर्तमान काल तक के अवधि में प्रचलित विभिन्न प्रकार के नृत्यों का स्थूल, सूक्ष्म और तुलनात्मक अवलोकन।

17. ताण्डव और लास्य नृत्यों का विस्तृत अध्ययन, इनके विभिन्न भेद, इन दोनों की प्रथक-प्रथक पकृतियाँ तथा इन दोनों नृत्यों का ऐतिहासिक तथा रचनात्मक महत्व।

18. नृत्य में कुतप (Orchestra) का स्थान और महत्व। कृतप रचना के सिद्धांत। नृत्य में कुतप की आवश्यकता तथा इस पर विभिन्न सुझाव।

19. पार्श्व-संगीत (Back-Ground Music)की व्याख्या, इसका महत्व, नृत्य के साथ इसका सम्बन्ध तथा विभिन्न नृत्यों में इसका स्थान।

20. आधुनिक नृत्य (Modern Dance)की व्याख्या, उसकी विभिन्न मुद्रायें। आधुनिक नृत्य के लिए रंगमंच, वेषभूषा, प्रकाश, कुतप आदि की विस्तृत जानकारी। आधुनिक नृत्यों में रस तथा भाव का स्थान। समाज में आधुनिक नृत्य का स्थान। आधुनिक नृत्य का क्रमिक इतिहास तथा इसके आचार्यों का परिचय।

21. नृत्य शास्त्र सम्बन्धी विषयों पर लेख लिखने की पूर्ण क्षमता।

द्वितीय प्रश्न-पत्र

(प्रायोगिक सिद्धान्त)

1. निम्नलिखित नृत्य सम्बन्धी पारिभाषिक शब्दों की विस्तृत व्याख्या, इनका स्पष्टीकरण तत्सम्बन्धी आलोचनायें एवं स्पष्टीकरण :-

ठाह, आमाद, सलामी निकास, तोड़ा, टुकड़ा, परण, गत, भाव, अनुभाव, विभाव, तत्कार, बोल, प्लटा, कवित्त, पढ़न्त, विहाई, अदा, कसक, मसक, कटाक्ष, गत-भाव, गत-तोड़ा, मुख-विलाम, लय, मात्रा, ताल, ठेका, आवृत्ति, विभाग, सम, ताली, खाली, काल-मार्ग, क्रिया, अंग, यदि, प्रस्तार, ग्रह, समू-ग्रह, कला, जति, अंचित, अनुलोम, प्रतिलोम, अग्रल, अधोमुख-शिर, आलोलित-शिर, उदवाहित शिर, कम्पित-शिर, परावृत शिर, सम-शिर, धुत-शिर परिवाहित-शिर, लाग-डाट।

2. कत्थक नृत्य का क्रमिक इतिहास, विकास, इसकी लोक प्रियता तथा इसके प्रारम्भिक आचार्यो के विषय में विस्तृत अध्ययन।

3. कत्थक नृत्य के विभिन्न घरानों उनकी विशेषताओं तथा उनमें पारस्परिक भेदों का विस्तृत और तुलनात्मक अध्ययन। प्रत्येक घराने के नृत्याचार्यों का पूर्ण परिचय तथा उनकी विशेषताओं का आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन।

4. कत्थक नृत्य के वर्तमान युगीन सुप्रसिद्ध नृत्याचार्यों की विस्तृत जीवनी विशेषतायें तथा उनकी वंशगत परम्परा का पूर्ण अध्ययन।

5. कत्थक नृत्य में कवित और ठुमरी का महत्व। इन ठुमरियों और कवित्तों में निहित रस और भाव का समुचित ज्ञान।

6. रूप-सौन्दर्य का विस्तृत प्रयोगात्मक एवं आलोचनात्मक ज्ञान, चेहरा, होंठ, आँखें, कपोल, केश, नख, त्वचा आदि की सज्जा का विस्तृत एवं सूक्ष्म अध्ययन। रूप-सज्जा के विभिन्न उपकरण तथा आहार सम्बन्धी पूर्ण जानकारी।

7. रास-नृत्य की उत्पत्ति तथा इसका क्रमिक इतिहास। इसकी शैली तथा मुद्राओं का ज्ञान। रास-नृत्य और कत्थक नृत्य में परस्पर सम्बन्ध और भेद का पूर्ण ज्ञान। समाज में रास नृत्य का स्थान।

8. प्रथम से सप्तक वर्षो के पाठ्यक्रमों में निर्धारित समस्त तालों का पूर्ण परिचय ता उनके ठेकों को विभिन्न प्रकार की सीधी एवं कठिन लयकारियों में ताल-लिपि में लिखने का पूण्र अभ्यास।

9. भातखण्डे एवं विष्णु दिगम्बर ताल-लिपि पद्धतियों का पूर्ण तथा तुलनात्मक ज्ञान। पाश्चात्य ताल-लिपि पद्धति का साधारण ज्ञान। इन तीनों ताल लिपि पद्धतियों का पारस्परिक तुलनात्मक अध्ययन।

10. ताल की उत्पत्ति, ताल और लय क नृत्य कला से सम्बन्ध।

11. भारतीय संस्कृति में नृत्य कला का स्थान।

12. लयकारी शब्द की व्याख्या। लय और लयकारी में भेद। नृत्य में लयकारी का महत्व। गणित द्वारा किसी भी ताल के ठेके की दून, तिगुन, चौगुन, पंचागुन, आड़, कुआड़ा, बिआड़ आदि प्रारम्भ करने का स्थान निश्चित करने का ज्ञान।

13. विभिन्न प्रकार के भारतीय ताल वाद्यों एवं उनकी वादन शैलियों का विस्तृत ज्ञान।

14. ताल रचना के सिद्धान्त एवं ताल के दस प्राण की पूर्ण जानकारी। ताल, अताल, सताल, शब्द, मूकताल आदि तालों के भेद।

15. नत्याभ्यास के नियम, सिद्धान्त तथा क्रम का विस्तृत अध्ययन। एक सफल नृत्यकार बनने के उपकरण एवं नियम पालन का ज्ञान।

16. 'लिपि' शब्द की व्याख्या तथा संगीत में इसका महत्व। नृत्य सम्बन्धित समस्त बोलों, टुकड़ों एवं परणें आदि को सही और स्पष्ट रूप से लिपिबद्ध करने का विस्तृत ज्ञान। नृत्य सम्बन्धी एक आदर्श लिपि पद्धति के निर्माण पर सुझाव।

17. निम्नांकित रागों का पूर्ण परिचय तता इनमें ठुमरी, भजन आदि लिपिबद्ध करने का ज्ञान,
खमाज, काफी, देस, भैरवी, पीलू, तिलक-कामोद, तिलंगू तथा झिंझोटी।

18. क्रियात्मक नृत्य सम्बन्धी विषयों पर लेख लिखने की पूर्ण क्षमता।

अष्टम वर्ष
संगीत प्रवीण
कत्थक्-नृत्य
क्रियात्मक
प्रश्नमूलक प्रयोगात्मक परीक्षा
(Viva Voce)

1. प्रथम से सप्तम वर्षों के लिये निर्धारित समस्त क्रियात्मक पाठ्यक्रम विषयों की विशेष तैयारी। उनमें निर्धारित सभी तालों में नये, कठिन और सुन्दर लयकारी युक्त टुकड़े, तीडे परणें, चक्करदार परणें, कवित्त, छन्दें, गत, गत-भाव आदि के साथ नृत्य करने की पूर्ण क्षमता।

2. पद संचालन में पूर्ण तैयारी। विभिन्न लयों का पदाघाट क्रिया द्वारा प्रदर्शित करने का विशेष अभ्यास। सिर, नेत्र, पलक, पुतलियाँ, भृकुटि, नासिका, कपोल, होंठें, दन्त, मुख, चिबुक, ग्रीवा, हस्त, उर, पार्श्व, जठर, कटि, जंघा, पंजा आदि शारीरिक अंगों, प्रत्यंगों तथा उपांगों को सुन्दर ढंग से संचालित करने का विशेष अभ्यास।

3. नाचने से पूर्व नृत्य के सभी बोलों, तोड़ो, परणें आदि को हाथ से ताली देकर बोलने (पढन्त) का पूर्ण अभ्यास।

4. निम्नांकित 12 तालों में से किन्ही भी 3 प्रचलित तथा 3 अप्रचलित तालों में नृत्य सम्बन्धी सभी क्रियाओं के साथ कत्थकनृत्य कला प्रदशन की पूर्ण तैयारी :-
(1) रूपक (2) झपताल (3) एकताल (4) आड़ाचार ताल (5) पंचम सवारी (15 मात्रा) (6) हेमवती अथवा मल्ल ताल (21 मात्रा) (7) अष्ट मंलग ताल (22 मात्रा) (8) मगध ताल (23 मात्रा) (9) कलानिधि ताल (25 मात्रा) (10) पशुपति ताल (26 मात्रा) (11) कुसुमाकर ताल(27 मात्रा) (12) ध्रुव ताल (29 मात्रा)।

5. सप्तम वर्ष के पाठ्यक्रम में 'प्रश्न-मूलक क्रियात्मक परीक्षा' के अनुच्छेद 5 में निर्धारित नृतय सम्बन्धी सभी क्रियाओं एवं चीजों की पूर्ण तयारी होनी चाहिये :-
बिआड़ी एवं महाकुआड़ी आदि लयों की परणें, कमाली चक्करदार परण, कृष्ण परण, दुर्गा परण, विष्णु परण, सवरस्वती परण, सिंहावलोकन परण, काली परण, गज परण, नवरसों के ऊपर तथा ऋतुओं के ऊपर रचित परणें, रसखानी परण, शतरंजी परण, रास परण, महारस परण, बिवली परण, लंक विजय परण, देव स्तुति, सरस्वती स्तुति आदि।

6. परीक्षक द्वारा कहे गये अन्य तालों में भी पूर्ण तैयारी, रस और भाव के साथ नृत्य करने की क्षमता।

7. नृत्य सम्बन्धी समस्त मुद्राओं का समुचित प्रदर्शन।

8. गणेश अथवा शंकर में किसी एक की स्तुति से नृत्य प्रारम्भ करने का अभ्यास।

9. विभिन्न रसों और उनके भावों को प्रदर्शित करने का पूर्ण अभ्यास।

10. नृत्य सम्बन्धी विभिन्न प्रकार के अभिनय का प्रदर्शन।

11. कत्थक नृत्य के विभिन्न घरानों में पारस्परिक भेद तथा हर एक की विशेषताओं का क्रियात्मक रूप से दर्शाना।

12. निम्नलिखित किन्हीं भी दस कथानकों के आधार पर नृत्य प्रदर्शित करने की पूर्ण क्षमता :-
(1) मारीच वध (2) मदन दहन (3) भीलनी भक्ति (4) लक्ष्मण भक्ति (5) सुलोचना मेघनाथ चरित (6) राधा-कृष्ण की कथा (7) अनिरुद्ध-ऊषा की कथा (8) गणेश जन्म (9) शंकर विवाह (10) भीष्म प्रतिज्ञा (11) दानवीर कर्ण की कथा (12) दधीचि तप (13) धनुष यज्ञ (14) युधिष्ठर वनवास (15) नारद-मोह (16) हनुमान जन्म (17) बालि बध (18) कंस बध (19) निषाद भक्ति (20) रुक्मिमणी हरण (21) सुभद्रा हरण (22) पार्वती तप (23) सावित्री सत्यावन कथा।

13. निम्नलिखित किन्हीं भी 4 रागों में ठुमरी, भजन अथवा होरी गाकर भाव प्रदर्शित करने का अभ्यास।
पहाड़ी, आसा, माँड़, जंगला, सावनी, सोरठा, गारा तथा बिहारी

14. निम्नलिखित 4 नृत्य शैलियों में से किसी भी एक शैली के नृत्य का अभ्यास :-
(1) भरत नाटयम (2) मणिपुरी नृत्य (3) कथाकली (4) ओड़सी नृत्य।

15. निम्नलिखित चार प्रकार के नृत्यों में से किसी भी एक नृत्य की तैयारी :-
(1) रास नृत्य (2) आधुनिक नृत्य (3) शान्ति निकेतन नृत्य (4) उदय शंकर नृत्य।

16. निम्नांकित प्रदेशों में से किन्हीं भी चार प्रदेशों के एक-एक लोक नृत्यों की जानकारी तथा उन्हें प्रदर्शित करने का अभ्यास :-
(1) जम्मू और कश्मीर (2) हिमालय प्रदेश (3) नागा प्रदेश (4) मध्य भारत (5) केरल (6) मद्रास (7) आन्ध्र प्रदेश (8) मैसूर

17. पाठ्यक्रम में निर्धारित समस्त तालों में ठेकों की सीधी तथा विभिन्न कठिन लयकारियों में ताली देते हुये बोलना और उन्हें नृत्य द्वारा भी प्रदर्शित करने की पूर्ण अभ्यास।

18. समस्त निर्धारित तालों में विभिन्न प्रकार की और विभिन्न मात्राओं की तिहाइयों को ताली देकर बोलना तथा नृत्य द्वारा प्रदर्शित करने का अभ्यास।

19. समस्त निर्धारित तालों में विभिन्न लयकारियों में तत्कार करने का पूर्ण अभ्यास एवं तत्कार के विभिन्न पलटे और दरजे भी होने चाहिये।

20. समस्त निर्धारित तालों में अपनी इच्छानुसार किसी भी वाद्य पर विभिन्न रागों में लहरा (नगमा) बजाने का अभ्यास।

मंच प्रदर्शन

(Stage Performance)

1. मंच-प्रदर्शन में निम्नांकित पाँच तालों में से परीक्षार्थी को अपनी इच्छानुसार किन्हीं भी दो तालों में कम से कम आधा घंटा पूर्ण तैयारी के साथ अपनी सम्पूर्ण नृत्यकला का प्रदर्शन करना होगा तत्पश्चात तीन ताल में अधिक से अधिक 20 मिनट तक पूर्ण तैयारी के साथ नृत्य करना होगा :-

(1) बसंत ताल (नौ मात्रा) (2) कुम्भ अथवा चन्द्रमणि ताल (ग्यारह मात्रा) (3) जैमंगल अथवा मण्ठिका ताल (तेरह मात्रा) (4) आड़ाचार ताल (चौदह मात्रा) (5) पंचम सवारी (पन्द्रह मात्रा)

2. परीक्षक को अधिकार होगा कि यदि वह चाहे तो निर्धारित समय से पूर्व भी किसी परीक्षार्थी का नृत्य समाप्त करा सकता है।

3. मंच-प्रदर्शन के समय परीक्षा कक्ष में श्रोतागण भी नृत्य देखने हेतु उपस्थित रह सकते हे।

शास्त्र

प्रथम प्रश्न-पत्र

शुद्ध सिद्धान्त

1. प्रथम से सप्तम वर्षों के पठ्यक्रमों में निर्धारित नृत्य शास्त्र सम्बन्धी समस्त पारिभाषिक शब्दों का विस्तृत आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन।

2. नृत्य की प्राचीन, मुगल तथा राजपूत कालों से आधुनिक काल तक की पारस्परिक तुलना एवं उनका आलोचनात्मक अध्ययन।

3. नतर्क, नर्तकी तथा नृत्याचार्य आदि के गुण-दोष, नायक के आठ सात्विक गुण, ताण्डव एवं लास्य आदि के भेद, अयतनज और स्वभावज आदि लास्य के भाव, नृत्य में साहित्य का महत्व, पुराणों की कथाओं से नृत्य कला का सम्बन्ध आदि का विस्तृत अध्ययन।

4. भरत नाट्य, कथाकली, मणिपुरी, ओड़सी आदि नृत्यों की उत्पत्ति तथा इतिहास, उनकी शैलियाँ, विशेषतायें, भाव-भंगिमा, वेष-भूषा, मेकअप आदि का आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन। कत्थक नृत्य से उपरोक्त नृत्यों का तुलनात्मक तथा आलोचनात्मक ज्ञान।

5. जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, नागा प्रदेश, मध्य प्रदेश, केरल, तमिलनाडू, आन्ध्र प्रदेश तथा मैसूर के लोक नृत्यों का परिचय, उनकी विभिन्न वेष-भूषा-कला-कौशल एवं ताल प्रबन्ध का अध्ययन।

6. रंगमंच पर नर्तक के कर्तव्य, सामूहिक नृत्य में नर्तकों का संगठन, नृत्य को प्रभावोत्पादक बनाने वाले रहस्य, दर्शकों पर नृत्य के पड़ने वाले प्रभावों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन तथा समयानुकूल नृत्य में कलात्म्क परिवर्तन आदि विषयों का विस्तृत ज्ञान।

7. संयुक्त, असंयुक्त, वैष्णव, समपाद, वशाक, मण्डल, आलीढ़, प्रत्यालीढ़, शिर, ग्रीवा, उर, पार्श्व, जठर, कटि, जंघा, दृष्टि, भ्रमरी, उत्पलवन आदि भेदों का विस्तृत अध्ययन।

8. नौ रसों का पूर्ण ज्ञान। रसों की व्याख्या तथा उन्हें प्रदर्शित करने का ढंग और प्रस्तुतीकरण के समय ध्यान देने योग्य बातें। रस नृत्य का एक प्रधान अंग है, इसे समझाना।

9. भूमिचारी, आकशचारी, भूमि मण्डल, आकश-मण्डल आदि के भेद, विष्णुमाल, जीवमाल, गुणमाल, युगमाल, तत्वमाल, ऋतुमाल आदि क्रियाओं क भेद, सृष्टि के सप्त पदार्थ, नीति पाठ, नृत्य अंकन विधान, हस्तपाद आदि की व्याख्या; नृत्य में दिशाआं का महत्व, व्यूह-क्रिया आदि का विस्तृत अध्ययन।

10. मैनवी, मानवी, गजगामिनी, तुरंगिनी, हंसनी, मृगी और खंजरीटी आदि का वर्णन। भाव पाठ, नयन पाठ, बोल-भाव, अर्थ-भाव, नृत्य-भाव, गत-अर्थ भाव और अंग भाव आदि का विस्तृत अध्ययन।

11. भारतीय शास्त्रीय नृत्यों की उत्पत्ति, उनका क्रमिक इतिहास और विकास के विषय में पूर्ण अध्ययन।

12. प्राचीन, मध्य और आधुनिक कालों में प्रचलित नृत्यों पर प्रकाश डालने वाले गन्थों का अध्ययन का इन कालों के नृत्याचार्यों का पूर्ण परिचय तथा नृत्य में उनका योगदान।

13. भारत के विभिन्न प्रदेशों में प्रचलित विभिन्न प्रकार के प्रसिद्ध लोक-नत्यों का विस्तृत तुलनात्मक अध्ययन। इन लोक नृत्यों का मानव जीवन से सम्बन्ध तथा जीवन में इनकी उपयोगिताओं का अध्ययन।

14. गायन, वादन और नृत्य का पारस्परिक सम्बन्ध। नृत्य में गायन तथा वादन का स्थान और महत्व।

15. बैल (Ballet), ओपेरा (Opera), रासलीला, अभिनय आदि का सूक्ष्म अध्ययन, इनकी विशेषतायें तथा अन्य नृत्यों के साथ इनकी तुलना, रस और भाव के साथ इनका सम्बन्ध आदि विषयों का ज्ञान।

16. मूर्तिकला, चित्रकला आदि अन्य ललित कलाओं से नृत्य का सम्बन्ध। अजनता एलोरा आदि की मूर्ति कलाओं नृत्य सम्बन्धी जानकारी, नृत्य में इनकी उपयोगितायें तथा इनसे नृत्य की महत्ता का स्पष्टीकरण।

17. रस एवं भाव का विस्तृत एवं तुलनात्मक अध्ययन, इनमें पारस्परिक सम्बन्ध, नृत्य में इनका महत्व और इनकी उपयोगितायें। रस और भाव का जीवन से सम्बन्ध। विभिन्न रसों का विभिन्न रंगों तथा देवताओं आदि से सम्बन्ध।

18. पाश्चात्य नृत्य का इतिहास तथा उसके तत्व। पाश्चात्य देशों के भिन्न-भिन्न स्थानों के नृत्यों का संक्षिप्त परिचय। पाश्चात्य और भारतीय नृत्यां में कुतप (Orchestra) का स्थान और उसके रूप। पाश्चात्य नृत्य के ताल तथा उनकी गतियाँ। पाश्चात्य नृत्य में रस और भाव का स्थान और महत्व। पाश्चात्य देशों के प्रमुख नृत्यकारों का संक्षिप्त परिचय।

19. नृत्य-शास्त्र सम्बन्धी विषयों पर लेख लिखने की पूर्ण क्षमता।

द्वितीय प्रश्न-पत्र

(प्रायोगिक सिद्धान्त)

1. सप्तम वर्ष के पाठ्यक्रम में दिये गये प्रथम प्रश्न पत्र के अनुच्छेद एक में निर्धारित नृत्य सम्बन्धी समस्त पारिभाषिक शब्दों की विस्तृत व्याख्या के अतिरिक्त निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की विस्तृत व्याख्या, उनका स्पष्टीकरण तथा उनका तुलनात्मक एवं आलाचनात्मक ज्ञान भी होना चाहिये :-

थाप, घुमरिया, अराल, अल्पदम, अलीढ़, कुट्टन, उत्प्लावन, उपकंठ, उठान, उपांग, किंकिणी, भ्रमरी, उत्प्लावन भ्रमरी, एवाद भ्रमरी, कुंचित, कुंचित-भ्रमरी, चक्र भ्रमरी, अनुवृत्त-दृष्टि, आलोकित दृष्टि, अवलोकित दृष्टि, प्रलोकित दृष्टि, मीलित दृष्टि, सम-दृष्टि, साची-दृष्टि, चक्रमण, चलांचल, चलनचारी, तृयस्त्र, धरु, धम्मिल, पट्टी, पाणि, पाद, विन्यास, प्रत्यंग, प्रपद, मोहित, रंग, सरण, सर्पयान, सम्पुट, तिरश्चीव-ग्रीवा, परिवर्तित ग्रीवा, प्रकम्पित ग्रीवा, सुन्दरी ग्रीवा, उरमी, सुलप, उरप, तिरप, गुद्ध मुद्रा, धिलांग, थर, जमनका, स्तुति, प्रमिलू, पुहुप, पुजारी, गति, चलन, फिरन, शेमा, पिन्डी आदि।

2. नृत्य सम्बन्धी समस्त मुद्राओं का विस्तृत ज्ञान एवं विभिन्न नृत्यों में उनका प्रयोग। विभिन्न मुद्रओं का रस और भाव से सम्बन्ध।

3. 'मंडल' शब्द की व्याख्या , इसके भेदों का विस्तृत, आलोचनात्मक तथा प्रयोगात्मक ज्ञान। विभिन्न नृत्यों में मंडल का स्थान और इसकी उपयोगितायें। रस तथा भाव के साथ मंडल का सम्बन्ध।

4. 'चारी' शब्द की व्याख्या। इसके भेदों का विस्तृत आलोचनात्मक तथा प्रयोगात्मक ज्ञान। विभिन्न नृत्यों में चारी का स्थान तथा इसकी उपयोगितायें। रस और भाव के साथ चारी सम्बन्ध।

5. 'करर्ण' शब्द की व्याख्या, इसके भेदों का विस्तृत, अलोचनात्मक तथा प्रयोगात्मक ज्ञान, विभिन्न नृत्यों मं करण का महत्व और इसकी उपयोगितायें। रस तथा भाव के साथ करण का सम्बन्ध।

6. 'अंगहार' शब्द की व्याख्या, इसके भेदों का विस्तृत, अलोचनात्मक तथा प्रयोगात्मक ज्ञान, विभिन्न नृत्यों मं अंगहार का महत्व और इसकी उपयोगितायें। रस और भाव के साथ इसका सम्बन्ध।

7. शिर, नेत्र, पुतलियाँ, पलक, भृकुटि, नासिका, कपोल, होंठ, दन्त, मुख, चिबुक, ग्रीवा, उर, पार्श्व, जठर, कटि, जंघा, पंजा आदि शारीरिक अंगों तथा उपांगों के संचालन के सिद्धान्त। इसके विभिन्न प्रकारों के साथ रस एवं भाव का सम्बन्ध।

8. कत्थक नृत्य के प्रत्येक घरानों की उत्पत्ति और विकास, प्रत्येक घरानों के बोलों का विस्तृत ज्ञान, उनकी विशेषतायें एवं तत्सम्बन्धी आलोचनायें और स्पष्टीकरण।

9. नृत्य के बोलों तथा तोड़ों की विकास विधि तथा आड़, कुआड़ विआड़ आदि लयकारियों की पद-संचालन द्वारा प्रदर्शित करने की विधि समझाना।

10. 'लिपि' शब्द की व्याख्या तथा नृत्य में इसका महत्व। नृत्य सम्बन्धित समस्त बोलों को सही और स्पष्ट रूप से लिपि-बद्ध करने का विस्तृत ज्ञान। नृत्य सम्बन्धी एक आदर्श लिपि-पद्धति के निर्माण पर सुझाव।

11. पाठ्यक्रम में निर्धारित समस्त तालों में तथा विभिन्न रागों में लहरों (नगमों) की जानकारी तथा उन्हें लिपि-बद्ध करने तथा बजाने की ज्ञान।

12. निम्नलिखित ठुमरी अंग के रागों का संक्षिप्त स्वर विस्तार सहित पूर्ण परिचय तथा इनमें से किन्हीं चार गीतों को लिपि-बद्ध करने का ज्ञान :-
पहाड़ी, आसा, माँड, जंगला, सावनी, सोरठ, गारा तथा बिहारी

13. कर्नाटक ताल-बद्ध का पूर्ण ज्ञान, इसके तालों का विस्तृत अध्ययन, इसके विभिन्न भेद, रूप एवं इन्हें लिपि-पद्धति करने की जानकारी, उत्तर-भारतीय तालों से कर्नाटक तालों की तुलना।

14. व्यक्तिगत नृत्य (Solo Dance) और सामूहिक नृतय (Group Dance) की पृथक-पृथक व्याख्या, इस दोनों की भिन्न-भिन्न विशेषतायें, आवश्यकतायें और महत्व।

15. पिंगल-शास्त्र का ज्ञान। छन्द तथा लयकारी का विस्तृत ज्ञान तथा नृत्य में इनका महत्व। समपदि, विषमपदी तथा मिश्रपदी तालों का ज्ञान।

16. कत्थक नृत्य के विकास में वृन्दावन का स्थान और योगदानं

17. कत्थक नृत्य की सही और शुद्ध शैली का विस्तृत ज्ञान। वर्तमान समय में कत्थक नृत्य की स्थिति और इसका भविष्य।

18. नृत्य सम्बन्धी विषयों पर लेख लिखने की पूर्ण क्षमता।

सप्तम वर्ष
संगीत प्रवीण
रवीन्द्र संगीत
क्रियात्मक
प्रश्नमूलक प्रयोगात्मक परीक्षा
(Viva Voce)

1. निम्नलिखित रागों का पूर्ण अध्ययन :-

पीलू, वृन्दावनी-सारंग, मुलतानी, झिंझांटी, देश, हमीर, जोगिया, देशी, तिलक-कामोद, जयजयवन्ती, श्याम कल्याण, शुद्ध सारंग, कौसी-कान्हाड़ा रागों का पूर्ण परिचय तथा आलाप की सहायता से इन रागों का स्वरूप प्रदर्शन। इन रागों का स्वरूप प्रदर्शन। इन रागों में से किसी एक राग में ध्रुपद, किसी एक में धमार तथा किसी एक का तराना। इन रागों में सेकिसी एक में ठुमरी गाने का अभ्यास। ध्रुपद, धमार, तारना और ठुमरी उच्चांग रवीन्द्र संगीत के भी हो सकते है।

2. गिटार के परीक्षार्थियों के लिए उपरोक्त सभी रागों का पूर्ण परिचय एवं संक्षिप्त आलाप बाजने का अभ्यास। इनमें से किन्हीं दो रागों में विलंबित (मसीतखानी) एवं द्रुत (रजाखानी) गतें बजाने की क्षमता। तीन ताल के अतिरिक्त दूसरें तालों में भी कुछ रागों की बंदिशें बजाने का अभ्यास। किसी राग में ठुमरी अंग का सुन्दरता के साथ प्रदर्शन। उपरोक्त रागों में ध्रुपद, धमार, तराना एवं ठुमरी रवीन्द्र संगीत में बजाने का अभ्यास।

3. रवीन्द्र संगीत पाठ्यक्रम के प्रथम से तृतीय वर्षों तक के सभी तालों का पूर्ण परिचय एवं उन्हें ताली द्वारा विभिन्न-लयकारियों में बालने का अभ्यास।

4. प्रथम से तृतीय वर्षों तक रवीन्द्र संगीत पाठ्यक्रम में दिये गये सभी गीतों एवं तालों के अतिरिक्त निम्नलिखित सूची और विषय के अनुसार रवीन्द्र-संगीत गीतों के गाने का अभ्यास :

(1) मूलगीत राग, ताल और इनसे सम्बन्धित रवीन्द्र संगीत कोई दो गीत :- तुलनीय रवीन्द्र - संगीत :

(क) प्रचन्ड गर्जन आसिलो एकी दुदिन : मूलगीत प्रचन्ड गर्जन बरखा ऋत्-राग भूपाली, ताल सूरफाकता।

(ख) कारमिलन चाओ बिरही : मूलगीत-तनु मिलदे पखर-रागश्री, ताल तेउड़ा।

(ग) यदि तोर डाक शुने केउ : मूलगीत-हरिनाम दिये जगत मातालें-लोकगीत।

(2) वेदगान-कोई एक गीत :-

(क) या आत्मदा बलदा।

(ख) संगाच्छध्वांग सवदघ्वम ध्वमू।

(3) निम्न कवियों या गीतकार के गीतों में से सुर प्रधान कोई एक गीत :-

(क) सुन्दरी राधे आवीए बने ..... गोविन्द दास

(ख) बन्देमातरम् ..... बंकिमचन्द्र

(4) रामाश्रायी कोई दो गीत :-

(क) भय होते तब अभय माझे -बिहाग -चौताल

(ख) तुमि संध्यार मेघ माला-यमन कल्याण-एक ताल

(ग) पारबि न कि दिते-बहार-तेउड़ा

(घ) एबार नीरब कोरे दाओहे-कान्हड़ा-विलम्बित त्रिताल

(5) विभिन्न ताल एवं छंद में कोई सात गीत :-

(क) जननीर द्वारे आमि-चातुर्मात्रिक एकताल 4/4/4

(ख) पथे चोले जेते-जेते-अर्ध झपताल

(ग) मध्यदिनेर विजन बातायने-षष्ठि ताल 2/4

(घ) जेते जेते एकला वथे-झम्पक

(ड) नाई बा एले यदि-अखंड छः मात्रा

(च) हृदये मनिद्रल डमररू गुरु गुरु-7 मात्रा 3/4 छन्द

(छ) जे कांदोने हिया कंदिछे-9 मात्रा 6/2

(ज) आजि तोमाय आबार चाई-4 मात्रा 2/2

(6) लोक संगीत पयाय (आधारित) कोई एक गीत :-

(क) आमार मन जखन जागालि न रे

(ख) बसन्ते कि शुधु केवल-कहरवा

(7) कीर्तन - कोई एक गीत :-

(क) माझे माझे तबो इेखा पाई आखर युक्त कीर्तन-एकताल

(ख) आमि जखन छिलंभ अंध-आखर हीन कीर्तन-तेउड़ा

(8) कौतुक संगीत-कोई एक गीत :-

(क) काँटा बिहाबेनी सुरकाना देवी-कहरवा

(ख) यदि जोटे रोज-एकताल

(9) वैशिष्ट पूर्ण रवीन्द्र-संगीत-कोई दो गीत :-

(क) जे छिली आमार स्वप्न चारिणी-दादरा

(ख) आपनहारा मांतोआरा-षष्टिताल

(ग) वर्षन मंद्रित अंधकारे-कार्फ 2/2

(घ) मम दुखेर साधन-कहरवा

(10) आनुष्ठानिक कोई एक गीत :-

(क) भरुविजयरे केतन उड़ाओ-दादरा

(ख) एसो हे गृह देवता-कहरवा

(11) उद्दीपना के गीत-कोई एक गीत :-

(क) आयरे तबे मातोरे सबे-दादरा

(ख)पिनाकेते लागे टंकार-कहरवा

(ग) माँगो बाँध भेजे आओ-कहरवा

(12) ढ़ाला गाना-कोई एक गीत :-

(क) सकल जनम भोरे

(ख) आज जेमन करे गाईछे आकाश।

(13) विदेशी गीत-कोई एक गीत :-

(क) कतबार भेवे छिनु-एकताल

(ख) सकल फुरालो-एकताल

(14) निम्न कोई एक गीत :-

(क) घरेते भ्रमर एलो-दादरा

(ख) कोथा बाईरे दूर-झम्पक

(15) काव्य गीत-कोई एक गीत :-

(क) ओगो किशोर आजि-ताल फेरता

(ख) तुमि कि केबलि छुवि-कहरवा

(16) रवीन्द्रे गीति-नाट्य मायार खेला, कात मृगया एवं बालमीकि प्रतिभा से दो-दो गीतों की तैयारी।

(17) पाठ्यक्रम के अतिरिक्त स्वर लिपि देखकर गाने का अभ्यास।

मंच प्रदर्शन

(Stage Performance)

शास्त्र

नोट - रवीन्द्र-संगीत गायन तथा गिटार के सभी परीक्षार्थियों के लिये शास्त्र का निम्नलिखित पाठ्यक्रम होगा और इन सभी विषयों का अध्ययन करना होगा।

प्रथम प्रश्न-पत्र

शुद्ध सिद्धान्त

1. रवीन्द्र-संगीत के प्रथम से षष्टम वर्षों तक दिये गये समस्त पारिभाषिक शब्दों की पूर्ण व्याख्या तथा तत्सम्बन्धी आलोचनाओं और स्पष्टीकरण पर विचार।
2. निम्नलिखित विषयों का विस्तृत ज्ञान :-

स्वर गुणान्तर, स्वर-संवाद, हारमानी, मेलाडी, पाश्चात्य स्वर सप्तक का विकास, पाश्चात्य संगीत के मुख्य तत्वों की उत्पत्ति, वहन और श्रावण, स्वयम्भू स्वरों का अध्ययन, कला और शास्त्र, संगीत कला और विज्ञान, संगीत का कला पक्ष और भाव पक्ष।

3. भारतीय संगीत का इतिहास, इसके इतिहास का काल विभाजन तथा इसके विभिन्न मत एवं उनकी आलोचना।
4. भारतीय संगीत के विकास एवं अध्ययन में भरत, नारद, मतंग, जयदेव, तानसेन, अहोबल और अमीर खुसरु का योगदान।
5. भारतीय वाद्यों का वर्गीकरण, वाद्यों के पार्श्वतंत्र और स्वयम्भू स्वर का ज्ञान।
6. हिन्दुस्तानी संगीत एवं रवीन्द्र संगीत पर विदेसी संगीत का प्रभाव के विषय में आलोचनात्मक अध्ययन।
7. आकार मात्रिक, भातखण्डे एवं विष्णु दिगम्बर लिपि पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन तथा इनमें गीत लिखने का अभ्यास।

द्वितीय प्रश्न-पत्र

शास्त्र

1. रवीन्द्र-संगीत में राग रूप एवं राग विश्लेषण।
2. रवीन्द्र-संगीत में शिक्षा और प्रचार।
3. बेतार, दूरदर्शन, ग्रामोफोन आदि प्रचार माध्यम की अच्छाइयाँ और बुराइयाँ।
4. रवीन्द्र-संगीत पर बंगाल के लोकगीतों का प्रभाव और उनका आलोचनात्मक अध्ययन।
5. रवीन्द्र-संगीत में हास्य रस की अवतारणा।
6. मंत्र गायन के सम्बन्ध में आलोचना।
7. रवीन्द्र-संगीत में तानों का प्रयोग।
8. संगीत के सम्बन्ध में रवीन्द्र नाथ का दृष्टिकोण।

अष्टम वर्ष

संगीत प्रवीण

रवीन्द्र संगीत

क्रियात्मक

Mob. : 07408452828 • 09336112507

प्रश्नमूलक प्रयोगात्मक परीक्षा

(Viva Voce)

1. निम्नलिखित रागों का पूर्ण अध्ययन :-

अल्हैया-बिलावल, यमनी-बिलावल, देवगिरि-बिलावल, बड़हंस-सारंग, लाचारी-तोड़ी, गुर्जरी-तोड़ी, गुंनकली, आनन्द-बैरवी, नायकी-कान्हड़ा, ललितागौरी, बिहागड़ा, आभोगी-कान्हड़ा, तिलंग,गारा रागों का पूर्ण परिचय तथा आलाप की सहायता से इन रागों का स्वरूप प्रदर्शन। इन रागों में से किसी एक राग में ध्रुपद, किसी एक में धमार तथा किसी एक का तराना। इन रागों में से किसी एक में ठुमरी गाने का अभ्यास। ध्रुपद, धमार, तराना और ठुमरी उच्चांग रवीन्द्र-संगीत के भी हो सकते है।

2. गिटार के परीक्षार्थियों के लिए उपरोक्त सभी रागों का पूर्ण परिचय एवं संक्षिप्त आलाप बजाने का अभ्यास। इनमें से किन्हीं दो रागों में विलम्बित (मसीतखानी) एवं द्रुत (रजाखानी) गतें बजाने की क्षमता। तीनताल- के अतिरिक्त दसों तालों में भी कुछ रागों की बंदिशें बजाने का अभ्यास। किसी राग में ठुमरी अंग का सुन्दरता के साथ प्रदर्शन। उपरोक्त रागों में ध्रुपद, धमार, तराना एवं ठुमरी रवीन्द्र संगीत में बजाने का अभ्यास।

3. प्रथम से षष्ठ वर्षों तक के सभी तालों का पूर्ण परिचय एवं उन्हें ताली द्वारा विभिन्न लयकारियों में बोलने का अभ्यास।

4. प्रथम से सप्तम वर्षों तक रवीन्द्र-संगीत पाठ्यक्रम में दिये गये सभी गीतों एवं तालों के अतिरिक्त निम्नलिखित सूची और विषय के अनुसार रवीन्द्र-संगीत गाने का अभ्यास। :-

1. मूलगीत राग, ताल और इनसे सम्बन्धित रवीन्द्र-संगीत कोई दो गीत :- तुलनीय रवीन्द्र संगीत :
   - (क) ए भारते राखो नित्य प्रभू-मूल गीत-ये बतिया मेरे चित-राग सोरठ, ताल चौताल।
   - (ख) तबो प्रेम सुधा रसे-मूल गीत-कारि कामलिया-राग परज, ताल तीन ताल।
   - (ग) बेधेंको प्रेमेर पासे-मूल गीत-चांचर चिकुर आधो-राग काफी कान्हड़ा, ताल धीमी त्रिताल।
2. बेदगान-कोई एक गीत :-
   - (क) तामशिरानंद परमंग।
   - (ख) यदम प्रस्फुरान्नब।
3. विभिन्न कवियों या गीतकार के गीत में सुर प्रदान कोई एक गीत :-
   - (क) ए भरा भादीर-विद्यापीठ
   - (ख) मिले सवे भारत संतान-सत्येन्द्र नाथ ठाकुर
4. रामाश्रयी-कोई दो गीत :-
   - (क) हेरि अह रह तोमारि बिरह-मिश्र-कान्हड़ा-चौताल
   - (ख) चित पिपासित रे - खमाज-झपताल
   - (ग) गंभीर रजनी ना मिलो - परज-बसंज रूपकड़ा
   - (घ) आजि एई गन्ध बिघुर समीरणे-परण बसंत तीन ताल
5. विभिन्न ताल एवं छन्द में कोई 8 गीत
   - (क) कतो अजानारे जानाइले तुलि-रूपकड़ा
   - (ख) एखनो तारे चीखे देखिनी-कहरवा
   - (ग) हृदय आमार प्रकाश होलो-षष्ठि ताल 4/2
   - (घ) प्रेमे प्राणे गाने छन्दे- 9 मात्रा 3/2 3/2
   - (ड.) आजि झरो झरो मुखर बादर दिने - 12 मात्रा 2/4 2/4
   - (च) हे निरुपम - ताल फेरता
   - (छ) दखिन हवा जागो जागो-कहरवा
   - (ज) आमाके जे बाँधबे घोरे-काशमीरी खेमटा
   - (झ) जगते आनन्द जग्गे - एकताल
   - (ञ) ए मोहे आवरण खुलै दाउ - आड़ा ठेका 4/4 4/4
   - (ट) सुघु तोमार बानी - 24 मात्रा 6/6 6/6
6. लोक संगीत पर्याय (आधारित) कोई एक गीत :-
   - (क) तुमि एबार आमाय लहो हे नाम।
   - (ख) तोमार खोला हो आय।
   - (ग) आमि तोरई खुंजे बोड़ाई।
7. कीर्तन-कोई एक गीत :-
   - (क) ओहे जीवन बल्लभ, ओहे साधन दुर्लभ-आखर युक्त कीर्तन एकताल
   - (ख) जेते जेते चायना जेते-आखरहीन कीर्तन-झपताल
8. कौतुक संगीत-कोई एक गीत :-
   - (क) पाये-पड़ि शोभो भाई गाईये-दादरा
   - (ख) आः बेचेछि एखन - दादरा

9. वैशिष्ट पूर्ण रवीन्द्र - संगीत - कोई तीन गीत :-
   (क) दुजने देखा होलेा -दादरा
   (ख) आजि गोधुलि लगने एई - दादरा
   (ग) ओगो स्वप्न स्वरूपिनी - दादरा
   (घ) निबिड़ मेघेर छाया ए - षष्ठि ताल
   (ड़) तुमि एवार ओपार करो - दादरा
10. आनुष्ठानिक - कोई एक गीत :-
   (क) सुधा सागर तीरे - धमार
   (ख) शुभ दिने एसेचे दोहे-तीनताल
11. उद्दीपनपाके गीत-कोई एक गीत :-
   (क) माँगो बाँध भेजे आओ - कहरवा
   (ख) वयर्थ प्रानेर आवर्जना पूरिए केले - दादरा
12. ढाला गान - कोई एक गीत :-
   (क) तबु मने रेखो।